ओउम्

सरस्वती महाभागे विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यांदेही नमोस्तुते

वेद काल

मैक्समूलर के अनुसार	1200 ई. पू.
जैकीबी	4500 ई. पू.
तिलक	4000 से 6000 ई. पू. ज्योतिषानुसार
विंटरनित्ज	2000 से 2500 ई. पू.
दयानन्द	सृष्टि रचना के समय
पं. दीनानाथ शास्त्री	3 लाख वर्ष पूर्व
अविनाश चन्द्र	25000 वर्ष पूर्व
भण्डारकर	600 ई. पूर्व

वैदिक खण्ड

वेद = विद्+घञ् = ज्ञान

इष्टप्राप्त्यनिष्ट परिहारयोरलौकिकमुपायं योग्रन्थो वेदयति स वेदः – सायण (तैतिरीय संहिता भाष्य)

वेद का अपर नाम = श्रुति।

वेद 4 है– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

मन्त्र व ब्राह्मण को ही वेद कहते हैं :–

मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्।

वैदिक साहित्य के 4 भाग :–

मन्त्र (संहिता) ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद्।

सूक्तियाँ

- वेदोऽखिलो धर्ममूलम् – मनुस्मृति
- सर्वज्ञानमयोहि सः – मनु
- ब्राह्मणेन निष्कारणो धर्मः षडंगो वेदाऽध्येयो ज्ञेयश्च – महाभाष्य।
- अपौरुषेयं वाक्यं वेद– सायण
- प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।
एतं विन्दति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता।।
- विदन्ति–जानन्ति, विद्यन्ते–भवन्ति, विन्दन्ति–विन्दते
सर्वाः सत्य विद्याः यैः, यत्र वा स वेदः – दयानन्द सरस्वती
- वेद के 8 पाठ प्रसिद्ध हैं–
जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वः महर्षिभिः।।
- प्रारम्भ में वेद एक था, बाद में वेदव्यास जी ने इसको विभाजित किया।
- ऋग् यजुः तथा साम वेद को वेदत्रयी कहते हैं।
- उपनिषद, ब्रह्मसूत्र तथा गीता को प्रस्थान त्रयी कहते हैं।
- कुल आरण्यकों की संख्या 1130 है किन्तु आजकल केवल 7 आरण्यक ही मिलते हैं।
- उप+नि+षदलृ (सद्) = उपनिषद। यहाँ षदलृ धातु के 3 अर्थ हैं 1. विशरण (नाश) 2. गति (प्राप्त) 3. अवसादन (शिथिल) ।

- महावाक्य कोश के अनुसार 223 उपनिषद् कही गई है। मुक्तकोपनिषद् के अनुसार 108 तथा शंकराचार्य के अनुसार 10 हैं।

संहिता साहित्य

ऋग्वेद :– सबसे बड़ी संहिता, ऋचाओं का समूह। 10580 मन्त्र, 1028 सूक्त
ऋचा :– अर्च्यन्ते अनेन देवाः, ऋक अर्चनी भवति निरुक्त।
शाखाएं :– 21 (महाभाष्यानुसार)

5 शाखाएं (चरणव्यूह के अनुसार) ये हैः–
शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन। आज केवल शाकल शाखा ही उपलब्ध है।

विभाजन :– 2 प्रकार का है :–

1. मण्डल क्रम :– इसमें 10 मण्डल हैं मण्डल अनुवाकों में अनुवाक सूक्तों में तथा सूक्तों में ऋचाएं हैं।
2. अष्टक क्रम :– इसमें 8 अष्टक तथा प्रत्येक अष्टक में 8–8 अध्याय हैं। अध्याय वर्गों में है। कुल वर्ग 1024 हैं।

इनमें मण्डल क्रम ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक हैं। प्रत्येक मण्डल किसी ऋषि या उसके वंश से सम्बन्ध है।

नवम मण्डल को पवमान मण्डल कहते हैं। इसको दशतयी श्रुति भी कहते है।

ऋचा :– 3 प्रकार की हैं।

परोक्षकृत्, प्रत्यक्षकृत् तथा आध्यात्मिक। वागाम्भृणी सूक्त, इन्द्र सूक्त आध्यात्मिक सूक्त है।

तीन प्रकार के देवता

पृथ्वी स्थानीय :– अग्नि, बृहस्पति, सोम, पृथिवी, नदी।
अन्तरिक्ष स्थानीय :– वायु, इन्द्र, रुद्र, वात, मरुत्, पर्जन्य, मातरश्विन्, अहिर्बुध्न्य
द्यु स्थानीय :– द्यौ, सूर्य वरुण, मित्र, सविता, पूषन्, विष्णु, विवस्वत्, आदित्य, उषस्, अश्विनौ
प्रमुख सूक्त :– पुरूष, नासदीय, मण्डूक, अक्षसूक्त हिरण्यगर्भ, वाक्
संवाद सूक्त :– इन्द्र इन्द्राणी (10–86) सोम सूर्या (10–85) इन्द्र वरूण (4–12) वरूण अग्नि (10–5) यम–यमी (10 / 10) देवगण–अग्नि (10–52) विश्वामित्र नदी (3 / 33) पुरुखा–उर्वशी (10–95) सरमा–पणि– (10–108)
कुलं संवाद सूक्त लगभग 20 हैं।

विश्वामित्र ऋषि का पंजाब की विशापादि नदियों से संवाद है। यम–यमी दोनों भाई बहनों का कामात्मक संवाद हैं। पुरूरवा+उर्वशी में पति–पत्नी की कथा है। सरमा इन्द्र की कुतिया (देव शुनी) है इसका पणियों से संवाद है।

सूक्तियाँ :– एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। केवलाघो भवति केवलादी,
द्वा सुपर्णा सयुजा सखायाः कस्मै देवाय हविषा विधेम, अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां, ऋतञ्च सत्यञ्चा भी द्धात्, ब्राह्मणोऽस्य मुखं आसीद्,

ऋग्वेद का ऋत्विक् (ऋतु+यज्+क्तिन्) होता कहलाता है, अतः इसे होतृ वेद भी कहा जाता है। ऋग्वेद में 153826 शब्द तथा 432000 अक्षर हैं। प्रारम्भिक सूक्त अग्नि तथा अन्तिम संज्ञान सूक्त है। इसके 250 सूक्तों में सर्वाधिक इन्द्र की स्तुति तथा 200 सूक्तों में अग्नि की स्तुति है।

ब्राह्मण ग्रन्थ

ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्न मन्त्राणां च व्याख्यान ग्रन्थः भट्टभास्कर (तैति0 संहिता भाष्य)

ब्राह्मणों की विषय वस्तु के 10 प्रकार :–

हेतु र्निवचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः।
परक्रिया पुराकल्पो व्यवधारण–कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य तु।
शबर स्वामी (मींमासा सूत्र भाव्य)

ऋग्वेद के ब्राह्मणग्रन्थ

ऐतेरेय, कौषीतकि (शांखायन)

आरण्यक ग्रन्थ :– अरण्याध्ययनादेत दारण्य कमितीर्यते सायण (तैतिरीयारण्यक भाव्य)
ऋग्वेद के आरण्यक :– ऐतेरेय, सांख्यायन
उपनिषद :– उप+नि+षद्+क्विप्।

108 उपनिषद् = मुक्तिकोपनिषद् के अनुसार शांकर भाष्य निम्न दश उपनिषदों पर ही मिलता है।

ईश केन कठ प्रश्न मुण्ड माण्डूक्य तितिराः।
ऐतेरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा।। (मुक्तिको उपनि)

ऋग्वैदिक उपनिषद् :– ऐतरेय, कौषीतकि।

ऋग्वेद का एकमात्र कल्प सूत्र वशिष्ठ धर्मसूत्र है ऋग्वेद का देवता अग्नि है। शुनः शेष आख्यान एतरेय, ब्राह्मण के 31–33 अध्याय में है।

यजुर्वेद :– कर्मकाण्ड का वेद है, गद्यात्मक एवं पद्यात्मक है।

2 भाग है शुक्ल तथा कृष्ण यजुर्वेद 101 शाखाएं महाभाष्यानुसार हैं।

शुक्ल यजुर्वेद संहिता को वाजसनेयि संहिता भी कहते है। इसकी 2 शाखाएं है माध्यन्दिन तथा काण्व, दोनों में 40–40 अध्याय हैं

सूक्तियाँ :– शंनो मित्र, द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं यतोयतः समीहसे, तच्चक्षुर्देवहितं

यजुर्वेद का 40 वाँ अध्याय ही ईशोपनिषद है,

कृष्ण यजुर्वेद त्रैत्तिरीय संहिता, मैत्रायणी संहिता, कठ, कपिष्ठल, संहिता प्रमुख है।
16 वें अध्याय को रुद्राध्याय तथा 35 वें में शिव संकल्प सूक्त है।

- वेदव्यास ने यजुर्वेद वैशम्पायन को पढ़ाया, वैशम्पायन ने याज्ञवल्क्य को। गुरु शिष्य के झगड़े में याज्ञवल्क्य ने प्राप्त ज्ञान का वमन किया जिसकी वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तित्तिर बनकर ग्रहण किया यही कृष्ण यजुर्वेद है। बाद में याज्ञवल्क्य ने सूर्य की उपासना से शुक्ल यजुर्वेद का ज्ञान प्राप्त किया इसे वाजसनेयी संहिता भी कहते है। क्योंकि सूर्य ने वाजी (घोड़ा) के रूप में इसका उपदेश दिया था

यजुर्वेदीय ब्राह्मण

शुक्ल :– शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिन एवं कण्वशाखा पर)
कृष्ण :– तैत्तिरीय ब्राह्मण, मैत्रायणी, आदि
आरण्यक :– शुक्लः बृहदारण्यक
कृष्ण : तैत्तिरीयारण्यक
उपनिषद् :– शुक्ल :– ईश, बृहदारण्यक
कृष्णः– तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी महानारायण
यजुर्वेद का ऋत्विक् अध्वर्यु कहलाता है। अध्वर् क्यच् उ = अध्वर्युः अध्वरं युनक्ति
यज्= '' देवपूजा संगतिकरण दानेषु'' ये तीन अर्थ हैं।
यजुर्वेद में ही 'खिल सूक्त' हैं। यजुर्वेद का देवता 'वायु' है।

सामवेद गान वेद कहलाता है । इसकी 1000 शाखाएं थी (महाभाष्य) सहस्रवर्त्मा सामवेदः आज केवल तीन शाखाएं ही प्राप्त है।

कौथुमीय, राणायणीय तथा जैमिनीय

कुल मन्त्र 1875 है जिनमें 1771 ऋचाएं ऋगवेद की है तथा 104 मन्त्र अपने हैं। सामवेद का देवता' आदित्य' है सामविकार ये 6 होते है – विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम व स्तोभ। साममन्त्रगान 5 प्रकार के हैः– प्रस्ताव, उद्गीथ, प्रतिहार, उपद्रव, निधन।

4 अन्य गान 1. ग्राम का गेय 2. अरण्य गेय 3. ऊह गान 4. उह्य गान

सामवेद के ब्राह्मण :– ताण्ड्य महाब्राह्मण, षड्विंश, सामविधान, आर्षेय, दैवत, उपनिषद्, संहितोपनिषद् वंश तथा जैमिनीय ब्राह्मण है।

आरण्यक :– सामवेद का तलवकार आरण्यक ही मिलता है।

उपनिषद :– केन तथा छान्दोग्योपनिषद ।

सामवेद को ऋत्विक उद्गाता है अतः इसे औदगात्र वेद भी कहते है।

विशेषः– जो मन्त्र विशेष गान पद्धति से गाए जाते हैं इन्हें साम कहते है। सामवेद से संबंधित आग्येकाण्ड, पवमान पर्व तथा ऐन्द्र पर्व है। षडविंश ब्राह्मण के अन्तिम प्रपाठक को 'अद्भुत' ब्राह्मण कहते है। छान्दोग्य ब्राह्मण को '**मन्त्र ब्राह्मण**' भी कहते है। पंचविंश ब्राह्मण को 'ताण्ड' 'महाब्राह्मण' या 'प्रौढ' ब्राह्मण भी कहते है। 'संहितोपनिषद ब्राह्मण' में सामगान पद्धति का वर्णन है।

अर्थवेद संहिता

इसे लौकिक वेद या अथर्वांगिरस वेद भी कहते है।

क्षत्र वेद, भैषज्य वेद, महीवेद, छन्दोवेद ब्रह्मवेद आदि।

शाखाएं – महाभाष्य में 9 शाखाओं का उल्लेख हैः–

पैप्लाद, तौद, मोद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श तथा चारण वैद्य आजकल केवल पैप्लाद और शौनकीय शाखाएं ही मिलती है।

पृथ्वी सूक्त प्रसिद्ध है। 731 सूक्त है तथा 5849 मन्त्र है।

ब्राह्मण– गोपथ ब्राह्मण है।

आरण्यक – कोई नही मिलता ।

उपनिषद् – माण्डूकय, मुण्डक, प्रश्न

अथर्ववेद का ऋत्विक 'ब्रह्मा' तथा देवता 'सोम' है तथा आचार्य 'सुमन्तु' है । इसके उपवेद– इतिहास वेद, पुराण वेद, सर्पवेद, पिशाचवेद, असुर वेदादि हैं।

सूक्तियाँ

यजुर्वेद – अग्ने नय सुपथा

- यम नचिकेता संवाद कठोपनिषद में है।
- जनक याज्ञवल्क्य संवाद बृहदारण्यकोषनिषद में है।
- नचिकेता वाजश्रवस् ऋषि का पुत्र था।
- कठोपनिषद् वल्लियों में विभक्त है।
- देवयान व पितृयान का वर्णन कौषतकि उपनिषद में है।
- गार्ग्य व अजात शत्रु संवाद बृहदारण्यकोपनिषद् में है। इसी में जबाली व श्वेत केतू संवाद है।
- सांख्य योग के तत्व मैत्रायणी उपनिषद में हैं।
- वरुण भृगु संवाद तैत्तिरीयोपनिषद में है।
- नारद–सनत्कुमार तथा इन्द्र विरोचन का वृतान्त छान्दोग्योपनिषद में है।
- 'ऋषियों के पिप्लाद ऋषि से प्रश्न प्रश्नोपषिद् में हैं।
- ओउम् की व्याख्या माण्डूक्योपनिषद में हैं।

उपनिषद सूक्तियाँ

- सर्वखल्विदं ब्रह्म – छान्दो
- अयमात्मा ब्रह्म – माण्डूक्यो
- द्वासुपर्णा सयुजा– मुण्डको
- कुर्वन्नेवेह कर्माणि– ईशो0
- ईशवास्यं इदं सर्वं – ईशो0
- सत्यंवदं धर्मं चर– तैत्तिरीयो
- मा गृधः कस्यस्विद्धनम् – ईशो
- विद्ययाऽमृतमश्नुते– ईशो
- हिरण्यमयेन पात्रेण– ईशो
- मातृदेवो भव, पितृ देवो भव – तैत्तिरीयो
- योवै भूमातदमृतम्– छान्दो

- केनेषितं पतति प्रेषितं मनः – केनो
- सत्यमेव जयते नातृतम् – मुण्डको
- तमेव विदित्वा अतिम्त्यु मेति – श्वेताश्वतर
- तरति शोकमात्म वित् – छान्दोग्यो

चार महावाक्य

1. प्रज्ञानं ब्रहमं– एतरेयोपनिषद्
2. अहं ब्रह्माऽस्मि– बृहदारण्यको
3. तत्त्वमसि– छान्दोग्यो
4. अयमात्मा ब्रहम– माण्डूक्यो

चार वाद

1. अद्वैतवाद्– शंकराचार्य
2. विशिष्टाद्वैत– रामानुज
3. द्वैताद्वैत– निंबकाचार्य
4. द्वैतवाद– मध्वाचार्य

वेदांग

वेदांग 6 हैं :–

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषायमनं चक्षुः निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षाः घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्।

शिक्षा ग्रन्थों को 'प्रतिशाख्य'' भी कहते हैं।

1. शिक्षा

शिक्षा के 6 अंग :– वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम तथा सन्तान
(तैत्तिरीयोपनिषद / शिक्षा बल्ली)

ऋग्वैदिक शिक्षा :– पाणिनीय शिक्षा

यजुर्वैदिक शिक्षा :– याज्ञवल्क्य, व्यास, वशिष्ठीय, भारद्वाज, माण्डव्य आदि।

सामवैदिक शिक्षा :– नारद, शाकटापन।

अथर्ववैदिक शिक्षा :– माण्डूकी शिक्षा ।

कल्प

कल्प सूत्रों के चार विभाग हैं

1. श्रोत सूत्र–ऋग्वैदिकः– आश्वलायन, शांखायन (कौषीतकि)
यजुर्वैदिक– कात्यायन, पारस्कर, कठ, बौधायन, सत्याषाढ, वैखानस, भारद्वाज, बाधूल
सामवैदिक – लाट्यायन, आर्षेय, खादिर, जैमिनीय।
अर्थवैदिक – बैतान श्रौतसूत्र (एकमात्र)

2. गृहय सूत्र–ऋग्वेदीय :– आश्वलायन, शांखायन, कौषी0
शुक्ल यजुः– पारस्कर
कृष्ण यजु0– बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, भारद्वाज, काठक, बैखानस, मानव।
सामवेदीय – खादिर, गोभिल, जैमिनीय।
अथर्ववेदीय :– कौशिक गृहय0 एकमात्र

3. धर्मसूत्र :– ऋग्वेदीय– वशिष्ठ व विष्णु
शुक्ल यजु.0 हारीत, शंख।
कृष्ण यजु0 बौधायन, आपस्तम्ब, मानव
सामवेद :– गौतम धर्म0 केवल
अथर्ववेदः– कोई नही।

4. शुल्व सूत्र ये केवल यजुर्वेद पर ही प्राप्त होते है
शुक्लयर्जु0 कात्यायान सूत्र
कृष्ण यजु0 – बौधायन, आपसतम्ब, मानव

- श्रोतसूत्रों में श्रुति प्रदिपादित यज्ञ का वर्णन है।
- गृहय सूत्रों में पांचमहायज्ञ, 7 पाकयज्ञ, 16 संस्कारादि का वर्ण न है।
- धर्म सूत्रों में धर्म, रीति, वर्ण, आश्रमादि का वर्णन है।
- शुल्वसूत्रों में वेदी निर्माण प्रक्रिया, रेखागणित का वर्णन है। शुल्व का अर्थ है=रस्सी ।

व्याकरण

पाणिनी, कात्यायन, पतंजलि त्रिमुनि कहे जाते है। पाणिनी ने अष्टाध्यायी, ग्रन्थ रचा जिसमें 3978 सूत्र है, कात्यायन ने अष्टाध्यायी पर वार्तिकों की रचना की। पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर

भाष्य लिखा जिसे महाभाष्य कहते हैं। पतंजालि ने व्याकरण को 'शब्दानुशासन' कहा है। बोप देव ने पाणिनी सहित 8 व्याकरणों का उल्लेख किया है जिन्होंने अपना व्याकरण शास्त्र लिखा। ये इन्द्र, चान्द्र, काशकृत्सन, आपिशलि, शाकटायन, पाणिनी, अमर तथा जैनेन्द्र है। इनमें ऐन्द्र व्याकरण प्राचीनतम है। इन्द्र बृहस्पति के शिष्य थे।

यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम् '' अर्थात् त्रिमुनियों में पाणिनी से श्रेष्ठ कात्यायन तथा कात्यायन से श्रेष्ठ पतंजलि का मत है। त्रिकाण्डशेष के अनुसार पाणिनी के 6 नाम पाणिनी–अहिक–दाक्षीपुत्रं–शलांगि–पाणिन्–शालातुरीय हैं। इनका माता का नाम दाक्षी है पिता शलंग हैं। जन्म स्थान 'शालातुर' है। जो वर्तमान में 'लाहौर' है। इनकी आरम्भिक विद्या तक्षशिला में हुई। इनके गुरू का नाम उपवर्षाचार्य है। जो नालंदा विश्वविद्यालय के आचार्य थे। इनका समय 500 ई0 पूर्व माना है।

<u>**कात्यायन**</u> का मूल नाम वररूचि था। इन्होंने'स्वर्गारोहण' काव्य की रचना भी की थी। पतंजलि शेषनाग के अवतार थे इन्होंने योग सूत्र तथा चरक संहिता की भी रचना की।

योगेन चित्रस्य पदेन वाचां मल शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्रांजलिरानतोऽस्मि।।

पाणिनी से पूर्व वर्ति 80 आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक के अनुसार है। पाणिनी ने भी 10 आपिशलि–काश्यप–गार्ग्य–गालव–चाक्रवर्मण–भारद्वाज–शाकटायन–शाकल्य–सेनक–स्फोटायन वैयाकरणों का नाम अष्टाध्यायी में उल्लेखित किया है।

पाणिनी ने 'जाम्बतीजय' काव्य भी लिखा था।

पंचपाठी के ग्रन्थः– अष्टाध्यायी, गणपाठ, धातु पाठ, लिंगानुशासन, उणादिसूत्र।

सामान्य व विशेष नियम है– उत्सर्ग व अपवाद

प्रियतद्धिताः– दाक्षिणात्याः

गोर्नदीय या गोणिका पुत्र हे= पातजंलि

पतंजलि पुरोहित थे = पुण्यमित्र (शुंग नरेश) के ।

महाभाष्य प्रथमाह्निक का नाम = पस्पशाह्निक।

पस्पशा का अर्थ =विमर्श

संज्ञा सूत्र

वृद्धिसंज्ञा –वृद्धिरादैय्

गुण– अदेङ् गुणः

संहिता– परः सन्निकर्ष संहिता

प्रतिपदिक– अर्थवद धातुरप्रत्यय प्राप्तिपदिकम् कृत्तद्धितसमासाश्च।

नदी– यू स्त्राख्यो नदी।

धि– शेषो घ्यसखि।

उपधा– अलोऽल्त्यात्पूर्व उपधा।
अपृक्त– अपृक्त एकाल प्रत्ययः।
गति– गतिश्च–ऊर्यादिच्विडाचश्च।
पद– सुप्तिङन्तं पदम्।
विभाषा– न वेति विभाषा।
सर्वण– तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्।
टि– अचोऽन्त्यादि टि।
प्रकृहम– इदूदेद्विवचनं प्रगृह्यम्।
<u>सर्वनाम स्थान</u> सुडनपुंसकस्य। शि सर्वनाम सीनम्। सु–औ–जस–अम्–औट् ये पांच प्रत्यय सर्वनाम स्थान संज्ञक हैं।
निष्ठा– क्त–क्तवतु निष्ठा।
प्रत्यायाहार संज्ञा– आदिरन्त्येन सहिता
लोप– अदर्शनं लोपः
<u>इत् संज्ञा–</u> हलन्त्यम् ,चुटू , लश्क्तवद्धिते, उपदेशऽजनुनासिक इत् , आदिर्त्रिटुडवः, ष प्रत्ययस्य (इरइत्संज्ञा वाच्या) वार्तिक

हस्व–दीर्घ–प्लुत–	ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुतः
उदात्त –	उच्चैरूदात्तः
अनुदात्त –	नीचैरनुदात्तः
स्वरित–	समाहारः स्वरितः
अनुनासिक–	मुखनासिका वचनोऽनुनासिकः
संयोग –	हलोऽनन्तराः संयोगः
उपसर्ग –	उपसर्गाः क्रियायोगे
धातु–	भूवादयो धातवः सनाद्यन्ता धातवः
निपात–	चादयोऽसत्वे– प्रादयः
आम्रडित–	तस्य परमाम्रेडितम्
अवसान–	विरामोऽवसानम्
विभक्ति–	विभक्तिश्च
सम्बुद्धि–	एकवचनं समबुद्धि
सर्वनाम–	सर्वादीनि सर्वनामानि
पद–	स्वादिष्वसर्वनाम थाने
भ–	यचि भम् – तसौमत्वर्थे
संख्या–	बहुगुणवतुडति संख्या
षट् –	डति च

लुगादि–	प्रत्ययस्य लुक्श्लु लुपः
गति–	गतिश्च
नदी–	ङितिह्रस्वश्च (विकल्प से) वामि (विकल्प से)
संप्रसारण–	इग्यणः सम्प्रसारणम्
कृत् –	कृदतिङ्
अव्यय–	स्वरादि निपातमवययम्
परस्मैद–	ल परस्मैपदम्
आत्मनेपद–	तङानावात्मने पदम्
सार्वधातुक –	तिङशित्सार्वधातुकम्
अभ्यास–	पूर्वोऽभ्यासः
आर्धधातुक–	आर्धधातुकं शेषः
लघु–	ह्रस्वं लघु
गुरु संबा–	संयोगे गुरू दीर्घं च
धु–	दाधाघ्वदाप
कर्तृ–	स्वतन्त्र कर्त्ता
हेतू–	तत्प्रयोजको हेतुश्च
कृत्य–	कृत्याः
सत्–	तौ सत्
कर्म–	कर्तुरीप्सितमं कर्म
करण–	साधकतमं करणम्
सम्प्रदान–	कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
अपादान–	ध्रुवमपायेऽपादानम्
अधिकरण–	आधारोऽधिकरणम्
उपसर्जन–	प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्
कर्मधारय –	तत्पुरूषः समानाधिकरणः कर्मधारयः
द्विगु–	संख्या पूर्वो द्विगु
उपपद–	तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्
गोत्र–	अपत्यं पौत्र प्रभृति गोत्रम्
युव संज्ञा–	जीवति तु वंश्ये युवा
तद् राज –	ते तद्राजा
वृद्ध संज्ञा–	त्यदादीनिच
घ–	तरप् तमपौ घः

संज्ञा प्रकरण

अच् स्वरों को कहते हैं।
हल् व्यञ्जनों को कहते है।

उच्चारण स्थान

अ+कवर्ग+ह का उच्चारण स्थान = कण्ठ
इ+चवर्ग+य+श का उच्चारण स्थान= तालु
ऋ+टवर्ग+र+ष का उच्चारण स्थान= मूर्धा
लृ+तवर्ग+ल+स का उच्चारण स्थान= दन्त
उ+पवर्ग का उच्चारण स्थान= ओष्ठ
ञ, म, ङ,ण, न, म् का उच्चारण स्थान= नासिका+स्ववर्गानुसार
ए+ऐ का उच्चारण स्थान= कण्ठतालु
ओ+औ का उच्चारण स्थान= कष्ठोण्ठ
व का उच्चारण स्थान= दन्तोष्ठ
अनुस्वार का उच्चारण स्थान= नासिका
यत्न 2 प्रकार के होते है आभ्यान्तर व बाह्म।
बाह्म यत्न 2 प्रकार के है– विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त अनुदात्त व स्वरित।
आभ्यन्तर यत्न 5 प्रकार के है :– स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत, ईषद्विवृत व संवृत।
स्पृष्ट (स्पर्श) क से म तक होते है।
ईषत्स्पृष्ट यरलव होते है।
विवृत स्वरों को कहते हैं।
ईषद् विवृत शषसह होते हैं।
प्रयोग में ह्रस्व 'अ' संवृत है अन्यथा विवृत ।
बाह्म यत्न विवरण

- वर्ग का पहला +दूसरा वर्ण तथा श, ष, स विवार, श्वास व अघोष कहलाते है।
- वर्ग का 3,4,5 + य, र, ल, व, ह संवार नाद घोष कहलाते है।
- वर्ग का 1,3,5 + य,र, ल, व वर्ण अल्प प्राण कहलाते है।
- वर्ग का 2, 4 + श, ष, स, ह वर्ण महाप्राण कहलाते हैं।
- स्वयें को उदात्त, अनुदात्त, स्वरित कहा जाता है।
- प या फ से पहले संकेत हो तो ये उपध्मानीय कहे जाते है इनका उच्चारण स्थान ओष्ठ होता है।

- क या ख से पहले संकेत हो तो ये जिव्हा मूलीय कहे जाते हैं इनका उच्चारण स्थान जिव्हामूल होता है।
- माहेश्वर सूत्र 14 हैं। इनमें 'ह' वर्ण का दो बार उच्चारण हुआ है।
- उपदेश आद्योच्चारण को कहते हैं– उपदेशः आद्योच्चारणं
- र प्रत्याहार में र् एवं ल् वर्ण आते हैं।
- अ–इ–उ–ऋ के 18 भेद हैं। 'लृ' वर्ण के दीर्घाभाव होने से 12 भेद है। एच्(ए–ओ–ऐ–औ) के ह्रस्वाभाव होने से 12 भेद हैं।
- विसर्ग जिस स्वर के साथ होगा उसी का उच्चारण स्थान ग्रहण करेगा। आयोगवाहा विज्ञेया आश्रय स्थान भागिनः । पा0 शि0
- ऋ व लृ परस्पर सवर्ण होने से 30 भेद वाले हैं।
- 'अणुदित् सवर्णस्य चाप्रत्ययः' सू0 में अण् प्रत्याहार पर णकार तक अन्यत्र पूर्व णकार तक ग्रहण होता है। इण् प्रत्याहार में पर णकार से ही ग्राहय है।
- प्रत्याहार लक्षण– प्रत्याह्रियन्ते संक्षिप्यन्ते वर्णाः यत्र स प्रत्याहारः
- लण् सूत्रस्थ अकार को अनुनासिक माना गया है
- 'र' प्रत्याहार में दो वर्ण होते है :– र,ल्
- प्रत्याहार संख्या लगभग 42 हैं।
- सम्पूर्ण अष्टाध्यायी के प्रति असिद्ध सूत्रः– अ अ (8–4–68)
- अष्टाध्यायी का अन्ति सूत्र :– अ अ
- अ अ सूत्र विधान करता है :– संवृत्त आकार का

स्थानी – यस्य स्थानेऽन्यद् विधीयते तत्स्थानी

आदेश– येन विधीयमानेन अन्यत् प्रसक्तं निवर्तते स आदेशः

- अमरकोषानुसार 'गव्यूति' का अर्थ 2 कोस
- प्रकृति, प्रत्यय की अर्थानुसार कल्पना से सिद्ध पद निपातन सिद्ध कहलाते है– धातु साधन कालानां प्राप्त्यर्थं नियमस्य च। अनुबंध विकाराणां रूढ्यर्थं च निपातनम् ।। म0 प्र0
- सपाद सप्त एवं त्रिपादी को विभक्त करने वाला सूत्र– पूर्वत्रासिद्धम् (8–2)
- रेफ व उष्मों का कोई सवर्ण नही होता रेफोष्मणां सवर्णाः न सन्ति (महाभाग्य
- देवांस्तव देवान्+तव में अनुस्वार निवृत्ति का कारण नियम– निमित्तापाये नैमित्तिकस्याप्यपायः

- कुत्ता+युवा+इन्द्र से सम्बद्ध सूत्र– श्वयुमघोनामतद्धिते
  सुभाषितः–

  काचंमणिं कात्र्चनमेक सूत्रे ग्रथ्नासि बाले किमिंद विचित्रम् । (प्रश्नः)
  विचारवान् पाणिनिरेक सूत्रे श्वानं मघवानमाह।। (उत्तरम्)
- युष्मद्, अस्मद् शब्दों के रूप तीनों लिंगों में एक जैसे होते हैं– अलिंगे युस्मदस्मदी
- त्यदादिगण पठित शब्दों में सम्बोधन नही होता त्यदादेः सम्बोधनं नास्ति।
- सम्बोधन में प्रथमान्त पद की आमन्त्रित संज्ञा होती है।
- आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत्।
- गो उपपद पूर्वक अत्र्चू धातु से निष्पन्न गवाक् शब्द के 109 रूप बनते हैं।
- पीलु शब्द पुल्लिंग में वृक्षवाचक तथा नपुंसक में तज्जन्य फलवाचक होता है।
- भागुरि के मतानुसार अव, अपि उपसर्ग के 'अ' का लोप होता है– अवगाह= वगाह, अपिधानं = पिधानम्

सन्धि

सन्धि 3 प्रकार की है – अय्, हल् व विसर्ग।
अच् सन्धि के अन्तर्गत यण्, गुण, वृद्धि, दीर्घ, अयादि, पूर्वरूप, पररूप,प्लुत तथा प्रकृति भाव सन्धि आती है।
हल् सन्धि में व्यत्र्जन, अनुस्वार, परसवर्ण कुक्टुकागम आदि होते हैं।
विसर्ग सन्धि में 'र' या विसर्गों का विकार होता है

उदाहरण

अहरह =	अहन्+अह
अहर्गण =	अहन्+गण
पुनारमते =	पुनर्+रमते
कस्कः =	कः+कः

संहितैकपदे नित्या, नित्याधातूपसर्गयोः ।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।

- मानव–माणव = मनु+तस्येंद से अण्– निपातन से णत्व = मानव माणव = ब्रह्मचारी

अपत्ये कुत्सिते मूढे मनोरौत्सर्गिकः स्मृतः।
नकारस्य च मूर्धन्यस्तेन सिद्धयति माणवः।।

- वरं सांशयिकात् निष्कात् असांशयिकः कार्षायणः लोकाय तिका
- लोट् लकार का प्रयोग लिङ् अर्थ में होता है।
- सकर्मकः– फल व्यधिकरण व्यापार वाचकत्वं सकर्मकत्वम्।
- अकर्मकः– फल समानाधिकरण व्यापार वा चकत्वं अकर्मकत्वम्।
- यदागमास्तद्गुणीभूतास्तद् ग्रहणेन गृहयन्ते । यथा भूव् ।
- विधि निमन्त्राणामन्त्रणाधीष्ट सम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ्।

विधि :– प्रेरणम्
निमन्त्रणं नियोगकरणं श्राद्धे भोजनादौ दौहित्रादेः प्रवर्तनम्।
आमन्त्रणं :– कामाचारानुज्ञा (यहाँ आमन्त्रित व्यक्ति स्वेच्छा से आमन्त्रण स्वीकार करने / न करने में स्वतन्त्र होता है। (अनुरोध भाव)
अधीष्ट :– सत्कारपूर्वक व्यापारः (भवान् मम पुत्रं अध्यापयतु / अध्यापयेत्
संप्रश्न :– प्रेरणा के साथ परामर्श भाव।

- उपसर्ग की गति (कार्य) तीन प्रकार का होता है :–
  धात्वर्थं बाधते कश्चिद् कश्चिद् तमनुवर्तते।
  विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्ग गतिस्त्रिधा।।
- 'ऋ' शब्द का षष्ठ विभक्ति एक. में 'उ0 बनता है।
  'अ' वर्ण वासुदेव का बोधक है
  'इ' वर्ण कामदेव का बोधक है
  'ई' वर्ण लक्ष्मी का बोधक है
  'उ' वर्ण शम्भु का बोधक है
- वृतु, वृधु, शृधु, स्यन्दू, कृपू ये 5 धातुएं वृतादि हैं।
- अष्टाध्यायी के छटे अध्याय के चतुर्थ पाद में 'आभीय' संज्ञक प्रकरण है।
- यङ् लुगन्त में अदादिगणवत् शपलुकादि कार्य होता है इसको 'चर्करितम् भी कहते है – चर्करितमिति यङ्लुगन्तस्य संज्ञा।

सुबन्त

सुऔ आदि 21 प्रत्यय होते है।
कर्त्ता आदि 6 कारक हैं। सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता।

- अकारान्त से पर टा को इन, ङसि को आत्, ङस् को स्य होता है – यथा रामेण, रामात् रामस्य।
- अकारान्त से परे 'ङे' को य होता है– रामाय
- अकारान्त सर्वनाम से परे ङे को 'स्मै' ङसि को स्मात् ङि को स्मिन् होता है – सर्वस्मै, सर्वास्मिन्
- पति शब्द समास में हरि के समान होता है।
- ह्रस्व, नद्यन्त, आबन्त के बाद आम् को नुटागम होता है – रामाणाम्
- अकारान्त सर्वनाम से परे जश् को शी होता है– सर्वे
- अ+आकारान्त सर्वनाम से परे आम् को सुटागम होता है = सर्वेषाम्
- षटसंज्ञक व स्वसृ आदि शब्दों से स्त्रीलिंग में भी ङीप् व टाप् प्रत्यय नही होते ।
- मधवन् शब्द को 'न' को विकल्प से 'त्' होता है।
- प्राचीन आचार्यों ने 'टा' को आङ् कहा है।
- पति समास में घी सज्ञक होता है।
- धातु में झल परवर्ती रहते अनुस्वार वर्गान्त वर्ण हो तो वह नकार जन्य होता है–
  नकार जावनुस्वारः पञ्चमो झलिधातुषु – महा0
  सर्वादिगण में शब्द – 35 है।

विद् धातु – वेत्ति रूपं विद् ज्ञाने 'विन्ते' विद् विचारणे। विद्यते विद् सत्तायां, विद्लृलाभे च विन्दति।।

नञ् भेद – पर्युदास व प्रसृज्य भेद से नञ् दो प्रकार का होता है। प्रर्युदास सादृश्य बोधक तथा प्रसृज्य अभाव बोधक होता है।

द्वौनञौ हि समाख्यातौ पर्युदास प्रसृज्यकौ।
पर्युदासः सदृश्यग्राही प्रसृज्यस्तु निषेधकृत्।।

''रामः लक्ष्मणेन मेघनांद घातयति'' – में प्रथम कर्त्ता प्रयोज्य तथा द्वितीय कर्त्ता प्रयोजक कहलाता है।

- बाहुलक के 4 भेद हैं– क्वचिद् प्रवृत्तिः क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव। विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।।
- उणादि प्रत्यय 325 हैं– उणादिप्रत्ययाः पादोत्तरशतत्रयम् ।
- वंशोद्विधा– विद्यया जन्मना च ।
- पूर्वाचार्यों ने प्रथम, द्वितीया,द्विवचन को औङ कहा है – औङ आपः
- कुछ विद्वानों ने नञ् के 6 अर्थ माने है।

तत्सादृश्यमभावश्च तदन्यत्वं तदल्पता।
अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट् प्रकीर्तिताः।।

- शाकटायन ने आर्य शब्द का अर्थ प्रतिबन्धार्थक माना है।
- अमर कोश में ःआभीर' शब्द महाशूद्र का पर्याय है।
- ऐन्द्र व्याकरण प्राच्य देशीय तथा पाणिनीय व्याकरण उदीच्च है

तिङत प्रकरण

भवादि 10 गण होते हैं। धातुए तीन प्रकार की होती है – परस्मैपदी, आत्मने पदी तथा उभयपदी

- भवादिगण में शप् प्रत्यय होता है– कर्तरिशप्।
- अदादि गण में शप् का लुक हो जाता हैः– अदि प्रभृतिभ्यः शपः।
- जुहोत्यादि गण में शप् को श्लु हो जाता है तथा धातु को द्वित्व होता है। वास्तव में लुक, श्लु व लुप् लोप को ही कहते है– प्रत्ययस्य लुकश्लुलुपः।
- दिवादि गण में श्यन प्रत्यय होता है जिसका ' य' धातु से जुड़ता है दिव्यति।
- तुदादिगण में 'श' प्रत्यय जुड़ता है।
- रुधादिगण में 'श्नम' प्रत्यय जुड़ता है यह धातु के बीच में जुड़ता है– रुणद्धि।
- तनादिगण में 'उ' प्रत्यय जुड़कर उसको गुण हो जाता है– तनोति।
- क्रयादिगण में 'श्ना' प्रत्यय जुड़ता है–क्रणाति
- चुरादिगण में 'णिच्' प्रत्यय जुड़ता है– चोरयति
- स्वादिगण में 'श्नु' प्रत्यय जुड़ता है– सुनोति
- चुरादिगण में 'णिचश्च' सूत्र आत्मने पद करता है।
- ''सत्याप–पाश–––––––––चुरादिभ्यो णिच् '' सूत्र में 12 प्रातिपदिकों का नामोल्लेख है। जुहोत्यादिश्यः श्लु, दिवादिभ्यः श्यन्, तुदादिभ्यः शः रुधादिभ्यः श्नम् तनादि कृभ्यः उः, क्रयादिभ्यः श्ना, स्वदिभ्यः श्नुः।
- धातु का मूल अर्थ कौमुदी से पाद करे यथा – हू = दानादनयोः
- धातु के आदि ष को स होता है = धात्वादेः षः सः।
- धातु के आदि ण को न होता है = णो नः ।
- धातु के आदि में ञि, टु, डु, की इत्संज्ञा होती है।
- इदित् धातु को नुम् होता है।

- यदि धातु में दो व्यन्जन हो तो दीर्घ अ से परे नु टागम होता है– तस्मान्नुड् द्विहलः = आनर्य
- लकार दश होते है :– लट्, लोट्, लृट्, ल्ट्, लेट् लकार टित् हैं तथा लङ् , लुङ् , लृङ् लकार ङित् है। लेट् लकार केवल वेद में प्रयुक्त है।
- वर्तमान काल के लिए लट् लकार होता है
- लुङ् का प्रयोग सामान्य भूत कालिक क्रियाओं के लिए होता है ।
- लङ् का प्रयोग आज से पूर्व हुए कार्य के लिए किया जाता है।
- लिट् का प्रयोग परोक्ष भूतकाल के लिए है।
- लुट् का प्रयोग आज न होने वाले भविष्यत् काल के लिए होता है।
- लृट् सामान्य काल के लिए होता है।
- लोट् आज्ञा, निमन्त्रण, आमन्त्रणादि के लिए है।
- विधिलिङ् लोट के अर्थों तथा उदपेशार्थ में प्रयुक्त होता है।
- आशीलिंङ आशीर्वाद देने के लिए प्रयुक्त होता है।
- लृङ एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया उसी पर निर्भर हो तब होगा।
- माङ का साथ लङ का प्रयोग होगा किन्तु माङ के साथ 'स्म' का प्रयोग हो तो लुङ् लकार का प्रयोग होगा।
- तिङ् प्रत्यय 18 होते है। इनमें तिप् , तस्, झि, सिप, थस–थ–मिप्–वस्–मस्–ये 9 प्रत्यय परस्मैद के हैं तथा त–आताम्–झ–थास्–आथाम्–ध्वम्–इड़–वहि–महिङ् ये 9 प्रत्यय आत्मनेपद के हैं। शानच् –कानच् प्रत्यय भी आत्मनेपद के हैं। चानश प्रत्यय परस्मैपद का है। क्रिया का फल स्वयं के लिए हो तो आत्मनेद का प्रयोग होता है। दूसरे के लिए क्रिया का अर्थ हो तो परस्मै–पद का प्रयोग होता है।
- लट्–लोट्–लङ्–विधिलिङ् ये 4 लकार शुद्ध सार्वधातुक होते है। लिट् व आशीर्लिङ् शुद्ध आर्धधातुक होते है। लुट् में तासि, लृट् व लृङ् में च्लि (सिचादि) प्रत्यय आर्धधातुक होने से ये आर्ध धातुक ही है।
- च्लि प्रत्यय लुङ लकार में, स्य प्रत्यय लृट्–लृङ में तास् लुट में, यासुट् लिङ् में सीयुट लिङ में, होता है।
- च्लि को पाँच आदेश (सिच्–चङ्–अङ–क्स–चिण्) होते है।
- सामान्यता 'झि' को अन्ति होता है किन्तु अभ्यस्त धातुओं के बाद झि को अति होता है।

- व्यञ्जनादि धातुओं को लुङ्–लृङ–लङ् लकार में अटागम किन्तु अजादि धातुओं को आटागम होता है। भवादि गण में भ्राश–भ्लाश्– भ्रम्–क्रम्–क्लम्–त्रस्–त्रुट् व लष् धातुओं से श्यन् प्रत्यय भी होता है।
- श्रु धातु को शृ आदेश तथा शप् को 'श्नु ' होता है।
- गूप्–धूप्–विच्छ–पण्–पन् धातुओं से स्वार्थ में आय् प्रत्यय होता है।
- कम् धातु को सार्व0 लकारों में णिङ् प्रत्यय होता है।
- शित् प्रत्यय परे होने पर पा को पिब्, घ्रा को जिघ्र ध्मा को धम, स्था को तिष्ठ, म्ना को मन, सद् को सीद् दाण् को यच्छ, दृश् को पश्य ऋ को ऋच्छ, सृ को धौ, शद् को शीय आदेश होता है।
- भुज् धातु से खाने अर्थ में आत्मनेपद प्रत्यय आते हैं।
- 'स्तम्भु' धातु से 'शप्' के स्थान पर 'श्ना' और 'श्नु' दोनों होते हैं।
- हि परे रहते हल् से पर 'श्ना' को शानच् होता है।
- णिजन्त धातुएं उभयपदी होती है।
- प्रेरणा अर्थ में णिच् प्रत्यय होता है।
- क्यच् प्रत्ययान्त धातुएं परस्मैपदी तथा क्यङ् प्रत्ययान्त धातु आत्मनेपदी होती है।
- भाव कर्मवाच्य में आत्मनेपद ही होता है।
- कृत्य प्रत्यय 7 होते हैं– तव्यत्–तव्य–अनीयर्–केलिमर्–यत्–क्यप्–ण्यत। ये सदैव कर्म एवं भाववाच्य में होते हैं।
- वु को अक तथा यु को अन होता है।
- क्विप् प्रत्यय का सर्वापहारी लोप होता है।
- परस्मैपदी धातु से 'क्वसु' तथा आत्मनेवदी धातु से कानच् प्रत्यय होते हैं।
- शतृ व शानच् वर्तमान काल के प्रत्यय है इन्हें 'सत्' भी कहते हैं।
- णमुल प्रत्यय बार–बार अर्थ में होता है तथाधातु को द्वित्य होता है यथा–स्मारं –स्मारं
- टाप् आदि –8 प्रत्यय स्त्री प्रकरण में होते है।
- स्वस्रादि सात शब्द है।
- शे मुचादिनाम् में 8 धातुए है।
- आय आदि 3 प्रत्यय है।
- सनादि 12 प्रत्यय है।

समास

इसके पांच भेद है। (समसनं समासः)

केवल समास :– विशेषसंज्ञा विनिर्मुक्तःकेवलसमास विशेष नियमों से मुक्त केवल समास होता है।

अव्ययीभाव– प्रायेण पूर्वपदप्रधानोऽव्ययीभावः पूर्व पद प्रधान अव्ययी भाव होता है।

तत्पुरूष :– प्रायेणोत्तर पद प्रधानः तत्पुरूषः । उत्तर पद प्रधान तत्पुरूष होता है। तत्पुरूष काभेद कर्मधारय तथा कर्मधारय का भेद द्विगु होता है।

बहुव्रीहि :– प्रायेणान्यपद प्रधानो बहु ब्रीहिः। अन्य पद प्रधान बहुब्रीहि होता है।

द्वन्द्व :– प्रायेणोभयपद प्रधानं द्वन्द्वः। उभयपद प्रधान द्वद्व समास होता है।

- व्यधिकरण तत्पुरूष में दोनों पदों में भिन्न–भिन्न विभक्तियाँ होती है इसके 6 भेद हैः– द्वितीया–तृतीया–चतुर्थी पंचमी–षष्ठी–सप्तमी तत्पुरूष।
- समानाधिकरण्य तत्पुरूष को कर्मधारय भी कहते हैं। इसके दोनों पक्षों में एक जैसी विभक्तियाँ होती है जैसे :– कृष्ण सर्पः

द्वन्द्व के तीन भेद हैः–

इतरेतर द्वन्द्व– जिसके पद अपना पृथक् व्यक्तित्व रखते हो जैसे–शिव केशवौ

समाहार द्वन्द्व :– जिसके पद आपस में समूह के बोधक हो जैसे– पाणिपादम्

एक शेष द्वन्द्व :– एक पद शेष होता है – यथा पितरौ।

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययी भावः।
तत्पुरूष कर्मधारय येनाहं स्यां बहुव्रीहिः।।

- 'ढ' प्रत्यय को तद्धित में 'एय्'
- घ प्रत्यय को तद्धित इय्
- ठ प्रत्यय को तद्धित इक्
- ख प्रत्यय को तद्धित ईन
- छ प्रत्यय को तद्धित ईय होता है।
- तलन्त प्रत्यय स्त्रीलिंग में होता है–लघुता
- द्वन्द्व समास में घिसंज्ञक शब्द पहले लिखा जाता है– हरि हरौ
- द्वन्द्व समास में कम स्वरों का पद पहले लिखा जाएगा – शिव केशवौ
- द्वन्द्व समास में अजादि पद पहले लिखा जाएगा ईशकृष्णौ
- जिस शब्द का प्रयोग पुल्लिंग व नपुसंलिंग दोनों में एक ही अर्थ के लिए हो तो वह 'भाषितपुंस्क' कहलाता है।

- आ–ऐ–ओ से प्रारम्भ होने वाले शब्दों की वृद्ध संज्ञा होती है।
- सामानाक्षर ऋतु व नक्षत्रों का कालक्रमानुसार पूर्व निपात होता है।
- पूज्य (अभ्यर्हित) का पूर्व प्रयोग द्वन्द्व में होता है।
- वर्णों में यथाक्रम का पूर्व प्रयोग द्वन्द्व में होता है।
- भ्राताओं में ज्येष्ठानुसार का पूर्व प्रयोग द्वन्द्व में होता है।
- नेवल से लेकर छोटे जीवों को 'क्षुद्रजन्तु' कहा जाता है। आनकुलात्क्षुद्रजन्तवः।
- मातृ, पितृ शब्द में द्वन्द्व समास में उदीच्य आचार्यो के मत में 'मातर पितरौ ' शब्द निपतित है।

शिष्ट ब्राह्मणाः– एतस्मिन्नार्य निवासे ये ब्राह्मणाः कुम्भीधान्याः अलोलुपा अगृहचमाणकारणाः किञ्चिदन्तरेण कस्याश्चिद् विद्यायाः पारगास्ते तत्र भवन्तः शिष्टाः –महाभाष्यम्

प्राच्य, उदीच्च भेदः शारावती नदी (अम्बाला की घाघर) ही प्राच्य व उदीच्य देशों की भेद कारक सीमा थी। यही व्याकरण शास्त्र के प्राच्चादि शब्दों से संकेतित है प्रागुदञ्चौ विभजते हंस क्षीरपाके यथा। विदुषां शब्द सिद्धयर्थं सा नः पातु शरावती।

- लोकायत सम्प्रदाय पाणिनि के समय नास्तिक सम्प्रदाय था।
- ऐतिह्यविद् आगरा को स्रुघ्न देश कहते है कुछ थानेसर से दक्षिण–पश्चिम 50 मील दूर मानते हैं।
- चुञ्चुप्–चणप्–प्रत्ययों में आदि में लुप्त यकार हैः– यकारादि चुञ्चुप चणपौ–लुप्तनिर्दिष्टो यकारः महा0 तद्धितप्रकरण
- मतुप् प्रत्ययान्त शब्द– भूमा (बहुत्व) निंदादि अर्थक होते हैं– भूम निंदा प्रशंसासु प्रशंसासु नित्ययोगेऽतिशायने। संसर्गेऽस्ति विवक्षायां भवन्ति मतुबादयः।।

लिंग निधारण :–

स्तन केशवती स्त्री स्याल्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
उभयोरन्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम्।।

परिभाषा :– अनियमे नियम कारिणी परिभाषा

- स्त्यै+डट्र = स्त्री
- पू+डुम्सुन = पूमान्

वार्तिक लक्षण :–

उक्तानुक्तदुरूक्तानां चिन्ता यत्र प्रवर्तते।
तं ग्रन्थं वातिकं प्राहुर्वातिकज्ञा विचक्षणाः। (पराशर उपपुराण)

सन्धि के नियम :–

संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः।

नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते।।

अव्ययः–

सदुशं त्रिपु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्।।

प्रत्याहारों में ह का 2 बार पाठ का उपयोग अट् व शल् प्रत्याहार द्वारा अर्हेण व अधुक्षत् रूपों की सिद्धि के लिए किया जाता है।

हकारो द्विरूपात्तोऽयमटि शल्यपि वात्र्छता।
अर्हेणाधुक्षदित्येतद् द्वयं सिद्धं भविष्यति।।

हृस्वादिः–

एकमात्रो भवेद् हृस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते ।
त्रिमात्रस्तु प्लुतोज्ञेयो व्यत्र्जनं चार्धमात्रकम् ।।

पक्षियों के स्वरः–

चाषस्तु वदते मात्रो द्विमात्रं त्वेव वायसः।
शिखी रौति त्रिमात्रं नकुलस्तु अर्धमात्रकम् ।।

प्रकरण लक्षण :–

शास्त्रैकदेश सम्बद्धं शास्त्रकार्यान्तरे स्थितम्।
आहुः प्रकरणं नाम ग्रन्थ भेदं विपश्चितः।। (पराशरोपपुराण)

सूत्र लक्षण :–

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमन वद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।

सूत्र भेद :– सूत्र भेद 6 होते है :–

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियमेव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रमुच्यते।।

भाष्य लक्षण :–

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।।

भर्तृहरि के गुरु = वसुरात
भर्तृहरि की महाभाव्य टीका – दीपिका
अष्टाध्यायी पर काशिकावृत्तिकार – जयदित्य
अष्टाध्यायी पर भागवृत्तिकार – विमल मति
अष्टाध्यायी पर भाषावृत्तिकार – बौद्ध विद्वान् पुरूषोत्तमदेव
अष्टाध्यायी पर शब्दकौस्तुम व्याख्या – भट्टो जिदीक्षित
रुपावतार ग्रन्थ के लेखक– सिंहली बौ विद्वान् धर्मकीर्ति

प्रक्रिया कौमुदी के लेखक–	आंध्रनिवासी रामचन्द्र
रुपमाला ग्रन्थ के लेखक –	संन्यासी विमल सरस्वती
व्याकरणासिद्धान्त कौमुदी	भट्टोजिदीक्षित
प्रौढ मनोरमा	"
शब्द कौस्तुभ	"
व्याकरण सिद्धान्त कारिका	"
वैयाकरण भूषण सार के लेखक –	कौण्डभट्ट
शब्देन्दुशेखर –	नागेशभट्ट
परिभाषेन्द्रशेखर –	"
वैयाकरणसिद्धान्त मञ्जूषा –	"
सारसिद्धान्त कौमुदी	वरदराज
लघु सिद्धान्त कौमुदी	"
मध्यसिद्धान्त कौमुदी	"
गीर्वाणपद मञ्जरी –	"
प्रक्रिया सर्वस्व के लेखक –	नारायण भट्ट
सरस्वतीकण्ठाभरण के लेखक –	भोज
क्षीरतरंगिणी के लेखक –	क्षीर स्वामी
धातु प्रदीप के लेखक –	मैत्रेयरक्षित
माधवीय धातु वृत्ति के लेखक –	माधवाचार्य
गणरत्न महोदधि के लेखक –	वर्धमान

सूत्र भेद (6)

- संज्ञा सूत्र– परः सन्निकर्षः संहिता
- परिभाषा :– स्थानेऽन्तरतमः तस्मिन्निति निर्दिष्टे
- विधि –इकोयेणचि
- नियम –सरूपाणमिकशेष एक विभक्तौ
- अतिदेश –स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ
- अधिकार – प्रत्ययाः
- स्वाङ्च्चोपसर्जनाद् – में स्वांग के तीन भेद है

अद्रवत्वं मूर्तिमत्स्वांगं प्राणिस्थमविकारजम्।
अतत्स्थं तत्र दृष्टं च तेन चेत्तत्तथा युतम्।।

- नामकरणं संज्ञा, अनियमे नियमकारिणी परिभाषा, कर्त्तव्यत्वेनोपदेशो विधि, बहुत्र प्राप्तौ संकोचं नियमः, अन्य तुल्यत्व विधानं अतिदेशः, उत्तर प्रकरणव्यापी अधिकारः।

- या या संज्ञा सा सा फलवती।
- आकृत्या गण्यते इति आकृतिगणः।
- शब्दो द्विधा –ध्वन्यात्मको वर्णात्मकश्च तत्राद्यो मृदंगदीनाम्
- व्यस्थित विभाषा में कहीं–कहीं विकल्प विधान में भावात्मक कार्य स्वीकृत है अभावात्मक नही। यथा गवाक्षः में नित्य अवङ् की प्रवृत्ति है। व्यवस्थित विभाषा 6 स्थानों पर मान्य है– देवत्रातः, गलः, ग्राहः, शानच+इति , गवाक्ष संशित (व्रत) अतः इनके वैकल्पिकरूप नही बनते। देवत्रातो गलो ग्राह इतियोगे च सद्विधिः। मिथस्ते न विभाष्यन्ते गवाक्षः संशितव्रतः।। शच्छोरिति सूत्रे महाभाष्यम्
- यथासंख्यमनु – अत्र संख्या शब्देन क्रमो लक्ष्यते काशिका
- विद्वान् किद्ग्वचो ब्रूते ? को रोगी ? कश्च नास्तिकः ? किद्क् चन्द्रं न पश्यन्ति ? सूत्रं तत्पणिनेर्वद। उ0 अर्थवद् अधातुर् अप्रत्ययः प्रातिपदिकम्
- एक शब्द के 8 अर्थ :–

एकोऽन्यार्थे प्रधाने च प्रथमे केवले तथा।
साधारणे सामनेऽल्पे संख्यायां च प्रयुज्यते।।

- सर्वनाम स्थान (5) सु–औ जस, अम्–औट्–सुडन पुस्कस्य
- पदस्थान (7) भ्यां–भिस्–भ्यस्–सुप्–स्वादिष्वर्सनाम स्थाने
- भ स्थान (9) शस्–टा–ङे–ङसि ङस्–ओस्–आम्–ङि यचिभम्

अवीतन्त्रीतरी लक्ष्मी धी ह्री श्रीणामुणादिषु।
सप्तानामपि शब्दानां सोर्लोपो न कदाचन।।

अतिदेश लक्षण :–

प्रकृतात् कर्मणो यस्मात् तत्समानेषु कर्मसु।
धर्मोपदेशो येन स्यात् सोऽतिदेश इति स्मृतः।।

अतिदेश सात प्रकार का है– सामान्य रुप – निमित– तादात्म्य – शास्त्र, कार्य–व्यपदेशतिदेश।

- प्रधी आदि शब्दों को नित्य स्त्री लिंग मानने वाला– हरदत्त
- प्रधी आदि शब्दों को नित्यस्त्री लिंग न मानने वाला – कैयट
- सर्वादिगण के अर्न्तगत ही त्यदादि 8 शब्दों की गणना है
- अभ्यस्त संज्ञक 7 धातुएं

जक्ष जागृ दरिद्राशास दीधीङ् वेवीङ् चकास्तथा।
अभ्यस्त संज्ञा विज्ञेया धातवो मुनिभाषिताः।।

- स्वरादिगण में पांच अव्यय रेफान्त है

उर्ध्वमानं किलोनमानं परिमाणन्तु सर्वतः।
आयामस्तु प्रमाणं स्यात् संख्या बाह्या तु सर्वतः।।

अर्थात् पुरूष की लम्बाई उर्ध्वमान है, तराजू से तोलना उन्मान है सब ओर से मापना परिमाण है, लम्बाई को प्रमाण कहते है।

रत्नि+अरत्नि :– कोहनी से बंद मुष्टि तक नाप रत्नि तथा कोहनी से कनिष्ठा छोर तक का माप अरत्नि कहलाता है बद्ध मुण्टिकरो रत्निररत्निः स कनिष्ठिकः

महाभाष्यानुसार गुण लक्षण :–

सत्वेनिविशते उपैति पृथक् जातिषु दृश्यते।
आधेयश्चाक्रियाजश्च सोऽसत्त्व प्रकृतिर्गुणः।।

आधार के भेद

1. औपश्लेषिक– कटे आस्ते, 2. वैषयिक– मोक्षे इच्छाऽस्ति 3. अभिव्यापक–तिलेषु तैल

अधिकारिक सूत्र प्रभाव त्रिधा होता है

सिंहावलोकितं चैव मण्डूकप्लुतमेव च ।
गंगाप्रवाहवच्चापि अधिकारास्त्रिधा मताः।।

व्याख्यान लक्षणः–

पदच्छेदः– पदार्थोक्ति विर्ग्रहो वाक्य योजना।
आक्षेपश्च समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम्

- विग्रहः– वृत्यार्थावोधकं वाक्यं विग्रहः
- विग्रह से रहित समास को नित्य समास या अस्वपद विग्रह कहते हैं– अव्यसी भाव समास में यह होता है।
- परवल्लिंग द्वन्द्वतत्पुरूषयोः
- संगति षडविधा

सप्रसंग उपोद्घातो हेतुताऽवसरस्तथा।
निर्वाहकैककार्यत्वे षोढ़ा संगतिरिण्यते।।

समास के 6 भेद

सुपां–सुपा तिङा नाम्ना धातुनाऽथ तिङा तिङा।
सुबन्तेनेतिविज्ञेयः समासः षड्विधोबुधैः।।

सुप्+सुप् = राजपुरूष, सुप्+तिङ– पर्यभूषयत् सुप्+प्रतिपदिक = कुम्भकारः सुप्+धातु– कटपू

तिङ+तिङ = पिबतखादता, तिङ+सुप् = कृन्तविचक्षणाः

- भर्गात्त्रैगर्ते (4–1–11) रावी सतलुज व्यास के मध्यभाग को ही त्रिगर्त प्रदेश कहते हैं।

शब्दार्थ

पपी = सूय,
माकिः, माकिम्, नकिः, नकिम्, आकीम् = नही
वर्षाभूः = मेंढक
दृन्भू = वृक्ष
आदह=निंदा
ग्लो = चन्द्रमा
विषु = अनेक
जोषम् = चुप
पिबध्यै = पीने के लिए
वषट्, श्रोषट, वौषट् = देव सम्बंधित दान में
विहायसा = आकाश
आर्यहलम् = बलात्
प्रबाहुकम् = एक ही समय
हिरूक् = बिना
प्रताम् =ग्लानि

निरुक्त

निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। निघण्टु की व्याख्या में ही'निरुक्त' रचा गया है। इसे वैदिक शब्दकोष भी कहते हैं। निरुक्त में 12 अध्याय है तथा 2 अध्याय परिशिष्ट रुप में है कुल 14 अध्याय है। निघण्टु में पांच अध्याय है। निरुक्त के प्रथम–द्वितीय–तृतीय अध्याय में नैघण्टुक काण्ड, 4–5–6 अध्याय को नैगम काण्ड या एकपदिक कहा जाता है। 7 से 12 अध्याय तक दैवत काण्ड कहा गया है। इस प्रकार निरुक्त 3 काण्डों में विभक्त है।
निरुक्त के प्रयोजन 5 हैं :–

वर्णागमो वर्णविपर्यश्च द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पंचविधं निरुक्तं ।।

4 पदजात :– चत्वारि पदजातानि नामाख्यातोपर्सगनिपाताः
नामः सत्व (जीव) प्रधान नाम कहलाते है – सत्वप्रधानानि नामानि
अख्यातः– भाव (क्रिया) प्रधान आख्यात है – भाव प्रधानमाख्यातम्
उपसर्ग :– 22 होते हैं। शाकटायन ने उपसर्गों का अपना कोई अर्थ नही माना।
निपातः विविध अर्थों में प्रयुक्त होते है उच्चावचेष्वर्थेषु निपतन्ति ये तीन अर्थों में प्रयुक्त होते है।

1. उपमा :– इव न चित् नु 2. कर्मोपसंग्रह :– च 3. पदपूर्ति :– नूनं सीमः
भाव विकार :– 6 होते है । जायते – अस्ति–विपरिणमते–वर्धते–अपक्षीयते–विनश्यति
शब्द प्रकार – शब्द 3 प्रकार के हैं:– प्रत्यक्षवृत्ति, परोक्षवृत्ति–(अविद्यमानक्रिया) प्रकल्प्य क्रिया
शब्द को अनित्य मानने वाले – ओदुम्बरायण
6 भाव विकार मानने वाले – वार्ष्यायणि
उपसर्ग में विविध मानने वाले – गार्ग्य
नाम धातुज मानने वाले – शाकटायन
सभी नाम धातुज नही मानने वाले – गार्ग्य
संहिता परः सन्निकर्षः संहिता –
प्रकृष्टों यः सन्निकर्षः संश्लेषः स्वराणां व्यत्र्जनानां सा संहितोत्युच्यते– शौनक (ऋ0 प्रति0)
दुर्गाचार्य–संहिता को मुख्य पदों को गौणात्मानते है। सभी देवों को जानने का दावा करने वाला – आचार्य शाकपूणि।
ऋचाएं – 3 प्रकार की परोक्ष–प्रत्यक्ष, आध्यात्मिक
इन्द्रियनित्यं वचनमौदुम्बरायणः
षडभावविकराः भवन्तीति वार्ष्यायणिः
न निर्बद्धाः उपसर्गः अर्थान् निराहुरिति शाकटायन
उच्चावचाः पदार्था भवन्तीति गार्ग्यः
नामानि आख्यातजानि – शाकटायन
अनर्थकाः हि मन्त्रा – कोत्सः
चत्वारवर्णाः पत्र्चमनिषादः – औपमन्यवः
तास्त्रिविधा ऋचः
आध्यात्मिक ऋचाएं हैं– इन्द्रवैकुण्ठ–लव–वागृम्भणी सूक्त तीन सूक्तों में ।
तिस्रः एव देवता–नैरुक्ता
निरुक्तकार कितने– 14 (यास्कसहिता)

भवेद् वर्णागमाद ' हंसः सिंहो ' वर्ण विपर्ययात्।
गूढोत्मा 'वर्ण विकृते वर्ण नाशात् पृषोदरम्।।

हस–हिस–गूढात्मा–पृषदुदरम् –मूल शब्द

छन्द

यदक्षर परिमाणं तच्छन्द :– छन्द को वेदों का पाँव कहा गया है। छन्द 'छद्' धातु से बनता है जिसका अर्थ है 'ढ़कना'– छन्दांसि छादनात् आचार्य पिंगल रचित छन्द सूत्र प्रथम ग्रन्थ है। इसमें पहले 4 अध्यायों में वैदिक छन्द तथा अन्तिम 4 अध्यायों में लौकिक छन्द है। कुल 8 अध्याय हैं।

ज्योतिष

ज्योतिष को वेद का 'चक्षु' कहा गया है। प्रथम ग्रन्थ आचार्य लगध का वेदांग ज्योतिष है इसका संबंध ऋग्वेद व यजुर्वेद से है। ऋग्वेद से सम्बंधित आर्ष ज्योतिष में 36 श्लोक तथा यजुष् से सम्बन्द्ध याजुष ज्योतिष में 43 श्लोक हैं।

पंचसिद्धान्तिका वराहमिहिर रचित
वृहत्संहिता " "
वृहज्जातक " "
लघुजातक " "
ब्रहमस्फुटासिद्धान्त ब्रहम गुप्त रचित
खण्ड खाधक " "
सिद्धान्तशिरोमणि भास्कराचार्य रचित
करण कुतूहल " "
लीलावती " "
बीजगणित " "
लीलावती पुत्री थी – भास्कराचार्य की
लीलावती का विषय – गणित
ग्रहलाघव – गणेश दैवज्ञ
मुहूतचिन्तामणि– रामदैवज्ञ
सिद्धान्त त्तत्व विवेक – कमलाकर भट्ट

लौकिक काव्य

रामायण की रचना वाल्मीकि ऋषि ने की है कथा 7 काण्डों में विभक्त है। बाल–अध्योध्या–अरण्य–किंस्किंधा–सुन्दर–युद्ध व उत्तर काण्ड। 24000 श्लोक होने से इसको चतुर्विशंति सहस्त्री भी कहते हैं। रामयण के प्रत्येक हजार श्लोक का प्रथम अक्षर गायत्री मन्त्र के 24 अक्षरों के क्रम से शुरू होता है। तमसा नदी के तट पर क्रोत्र्च वध के अवसर पर वाल्मीकि के मुख से निकला श्लोक :–

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रोत्र्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।

दशरथ की पत्नियाँ :– कैकेयी, कौशल्या, सुमित्रा। राम कौशल्या पुत्र, भरत कैकेयी पुत्र तथा लक्ष्मण व शत्रुघ्न सुमित्रा पुत्र थे। राम पत्नी सीता, लक्ष्मण पत्नी उर्मिला, भरत पत्नी मांडवी,

शत्रुघ्न पत्नी श्रुतकीर्ति थी । सुग्रीव की पत्नी रोमा, बाली की पत्नी तारा थी। जटायु का भाई संपाती था। रावण विश्रवा का पुत्र तथा माता कैकशी थी। कुम्भकर्म भी विश्रवा का पुत्र था। मेघनाद रावण का मन्दोदरी से उत्पन्न पुत्र था। मेघनाद की पत्नी सुलोचना थी। सुषेण लक्ष्मण को ठीक करने वाला रावण का वैद्य था।

रामायण के काण्ड सर्गों में विभक्त हैं। सर्वाधिक अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग है। रामायण की पूर्व पीठिका में नारद ने ऋषि वाल्मीकि को राम कथा सुनाई है। रामायण में जावालि ऋषि ने राम को नास्तिक मत का प्रोलभन दिया है। पम्पासरोवर का वर्णन अरण्यकाण्ड में है। राम ने चतुर्मास्य प्रस्रवण गिरी पर बिताया था। वानरों ने सीता खोज से प्रसन्न होकर मधुवन को उजाड़ा था। अगस्त्य ऋषि ने रावण के वंश की कथा राम को सुनाई थी। लवणासुर को शत्रुघ्न ने मारा। राम ने शम्बूक को मारा। वर्तमान रामायण में लगभग 645 सर्ग हैं। सबसे ज्यादा सर्ग युद्ध काण्ड 128 में है तथा कम किंस्किन्धा 67 में हैं। रामायण के शृंगवेरपुर व गोप्रतार स्थलों को महाभारत में तीर्थ कहा गया है। अयोध्या कोशल देश की राजधानी थी। रामायण की मिथिला व विशाला नगरी बाद में वैशाली नगर बनी।

महाभारत

वेदव्यास की रचना है इसके क्रमशः तीन नाम हैं :– जय इसमें 8800 श्लोक थे। भारत इसमें 2400 श्लोक थे। महाभारत में 100000 श्लोक है इसे शतसाहस्री संहिता भी कहते हैं। इसमें 18 पर्व हैं– प्रथम पर्व आदि तथा अन्तिम स्वर्गारोहण पर्व हैं। इसमें कपोतलुब्धक –नल –शकुन्तला– मत्स्य– राम– गंगावतरण–ऋषिशृंग –शिवि उशीनर सावित्री उपाख्यान प्रमुख हैं।

पात्र परिचय :– व्यास पराशर एवं सत्यवती के कनीन पुत्र थे (कर्ण कुन्ती एवं सूर्य के कनीन पुत्र थे।) व्यास के अपर नाम कृष्ण द्वैपायन, कृष्णमुनि, बादरायण हैं। धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं दासी पुत्र विदुर नियोग विधि स वेदव्यास एवं अम्बिका , अम्बालिका एवं दासी की सन्तान हैं। महाभारत में शान्तिपर्व 14000 श्लोक सबसे बड़ा तथा महाप्रसथानिक पर्व 115 श्लोक सबसे छोटा है। **जय** में कौरवों पर पाण्डवों की विजय की कथा है। **भारत** वैशम्पायन ने जनमेजय के नागयज्ञ के अवसर पर भारत का प्रवचन किया थां

महाभारत – नैमिषारण्य में शौनक ऋषि से अनुष्ठित यज्ञ (द्वादश वार्षिक सत्र) के अवसर पर सौति नामक ऋषि ने महाभारत का प्रवचन किया था । शौनकादि ऋषि श्रोता थे। सावित्री की कथा वन पर्व में, इन्द्र द्वारा कवच कुण्डल लेना भी वन पर्व में, कीचक वध विराट पर्व में, कृष्ण का शान्ति दूत बनना उद्योग पर्व में, कर्ण को जन्म वृत्तन्त श्री कृष्ण ने उद्योग पर्व में, गीता उपदेश भीष्म पर्व में, अश्वथामा की मणि निकालना सौप्तिक पर्व में, गान्धरी द्वारा कृष्ण वंश नष्ट होने का शाप स्त्री पर्व में पराशर गीता – हंसगीता वर्णन शान्तिपर्व में, भीष्म उपदेश शान्ति पर्व में, भीष्म का स्वर्गारोहण, विष्णु सहस्रनाम, शिवसहस्रनाम अनुशासन पर्व में, युधिष्ठिर द्वारा अश्वमेध यज्ञ, अनुगीता आश्वमेधिक पर्व में, यादव विनाश श्रीकृष्ण का परमधामगमन मौसल पर्व में, पाण्डवों

की हिमालय यात्रा महाप्रस्थानिक पर्व में मिलता है। स्वर्गारोहण पर्व को भारत सावित्री भी कहते है। अश्वत्थामा ने नारायणास्त्र का प्रयोग द्रोण पर्व में किया। अम्बोपाख्यान उद्योग पर्व में है। महाभारत के अवशिष्ट भाग को खिलपर्व (हरिवंश पर्व) कहा जाता है। इसे वैशम्पायन ने जानमेजय को सुनाया था। इसमें भगवान श्री कृष्ण के वंश (वृष्णि–अन्धक) की कथा है। इसमें शान्तरस प्रमुख है।

पुराण सहिता

पुराण का अर्थ – प्राचीन

माहपुराण कितने – 18

उपपुराण कितने – 18

18 पुराण – मत्स्य–मार्कण्डेय–भविष्य–भागवत–ब्रह्म–ब्रह्माण्ड – ब्रह्मवैवर्त –विष्णु– वामन–वराह–वायु–अग्नि–नारद–पद्म–लिंग–गरुड़–कूर्म तथा स्कन्द।

18 उपपुराण सनत्कुमार–नारसिंह–स्कान्द –शिवधर्म–आश्चर्य–नारदीय–कापिल–औशनस–वारुण–कल्कि–कालिका–माहेश्वर–साम्ब–सौर–पाराशर–मारीच–भार्गव व नन्द।

- ब्रह्म पुराण को आदि पुराण भी कहते है।
- कोणार्क के सूर्य मन्दिर का उल्लेख –सौर उपपुराण में
- अंशो में बटा पुराण – विष्णु पुराण में
- रामानुज का प्रमाण ग्रन्थ – विष्णु पुराण
- शिव का वर्णन :– वायु पुराण में
- सर्वाधिक प्रचलित – भागवत पुराण
- भागवत में – 12 स्कन्ध 335 अध्याय 18000 श्लोक
- भागवत में श्री कृष्ण जन्म– तृतीय स्कन्ध में
- भागवत में श्री कपिल जन्म– तृतीय स्कन्ध में
- भागवत में दक्ष शिव कथा– चतुर्थ स्कन्ध में
- भागवत में गद्य प्रयोग – पंचम स्कन्ध में
- भागवत में सबसे बड़ा स्कन्ध 10 वाँ (90 अध्याय)
- भागवत में कृष्णलीला समाप्त (मृत्यु) 11 वें स्कन्ध में
- भागवत में कलियुग राजाओं का वर्णन– 12 वें स्कन्ध में
- दुर्गासप्तशती गृहीत है– मार्कण्डेय पुराण में
- अग्नि द्वारा वशिष्ठ को उपदेश– अग्नि पुराण में

- विविध कला–कोश–ज्योतिष–गणित–भूगोल–छन्दादि का विशेष ज्ञान– अग्नि पुराण में
- देवनामों पर खण्ड किस पुराण में है–ब्रह्मवैवर्तपुरा0
- देवप्रतिमा निर्माण विधि –वराहपुराण में
- गंगासहस्त्रनाम स्त्रोत –स्कन्द पुराण में
- शिव व विष्णु की अभिन्नता वर्णित – कूर्मपुराण में
- काशी व प्रयाग महत्त्व – कूर्मपुराण में
- ईश्वर गीता व व्यास गीता वर्णित – कूर्मपुराण
- पांचरात्र मत का प्रथम प्रतिपादक– कूर्म पुराण
- प्रेतकल्प का वर्णन – गरुड़ पुराण में
- अध्यात्म रामायण किसका अंश है– ब्रह्मण्ड पुराण का
- पुराणं कतिलक्षणम् – पञ्चलक्षणं (दशलक्षणं)

सूक्तियाँ

- गायन्ति देवाः किल गीतकानि– विष्णु पुराण
- वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने– नारद पुराण
- सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तारणि च– अमर कोश

कालिदास

- कालिदास की प्रसिद्धि– उपमा कालिदासस्य
- कालिदास की रचनाएं – 2 महाकाव्य (कुमार संभवम् व रघुवंश) तीन नाटक (अभिज्ञान, शाकुन्तलं, मालविकाग्निमित्रं –विक्रमोर्वशीय) दो खण्ड काव्य (ऋतुसंहार–मेघदूत)
- कालिदास के आश्रयदाता– विक्रमादित्य
- नवरत्न कौन? धन्वन्तरि–क्षपणक–अमरसिंह–शंकु–वेताल भट्ट–घटकर्पर–वराहमिहिर–वंररुचि।
- पत्नी द्वारा पृष्ट प्रश्न– अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः ?
- 'अस्ति ' से रचित कालिदास ग्रन्थ– कुमार संभवम्
- 'कश्चित् से रिचत कालिदास ग्रन्थ–मेघदूत
- 'वाग' से रचित कालिदास ग्रन्थ–रघुवंश

कुमार संभवम्

- कुमार संभवम् में सर्ग– 17 सर्ग (8 कालीदासकृत)
- कुमार का अर्थ– कार्तिकेय
- कुमार का जन्म –कार्तिकेय 11 वें सर्ग में
- हिमालय वर्णन– प्रथम सर्ग में
- कामदेव भस्म– तृतीय सर्ग
- रति विलाप– चतुर्थ सर्ग
- पार्वती तपस्या– पंचम सर्ग
- शिव पार्वती विवाह– सप्तम सर्ग
- तारकासुर वध 17 वे सर्ग में

रघुवंश

- रघुवंश परिचयः– 19 सर्ग 1569 श्लोक
- रघुवंश के वर्णित राजा– 31
- क्रम विवरण – दिलीप –रघु–अज–दशरथ–राम–कुश–अन्तिम राजा अग्नि वर्ण
- कुश का पुत्र – अतिथि
- क्षयरोग से मृत्यु –अग्निवर्ण की
- सूर्यवंश के प्रथम राजा– मनु
- कामधेनू की पुत्री– नन्दिनी
- दिलीप की सेवा गौ के लिए – 21 दिन
- रघु दिग्विजय– 4 सर्ग में
- कौत्स के गुरु– वरतन्तु
- कौत्स द्वारा रघु से मांगी राशी – 14 करोड़ स्वर्णमुद्राएं
- रघु धन के लिए किस पर आक्रमण– इन्द्र पर
- विदर्भ राज भोज की बहन– इन्द्रमती
- अज को जगाने के लिए सूतों द्वारा गाया गीत– प्रभात गीत

- इन्दुमती स्वयंवर–षष्ठ सर्ग
- इन्दुमती की उपमा– दीपशिखा से
- इन्दुमती मृत्यु – अष्टम सर्ग में
- इन्दुमती द्वारा चयनित वर – अज
- इन्दुमती मृत्यु कारण– नारद के हाथ से गिरी हुई माला द्वारा
- दशरथ द्वारा श्रवण का वध – नौवे सर्ग में
- दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ– दशम सर्ग में
- सीता स्वयंवर– परशुराम संवाद – 11 वे सर्ग में
- रावण वध – 12 वें सर्ग में
- सीता परित्याग – 14 वें सर्ग में
- कुश की पत्नी – कुमुद्वती
- अग्निवर्ण के पिता– सुदर्शन

ऋतु संहार

- कुल सर्ग 6 (144 पद्य)
- वर्णन – ग्रीष्म से आरम्भ करके 6 ऋतु वर्णन
- अन्तिम ऋतु – वसन्त

मेघदूत

- विभक्त– पूर्व मेघ+उत्तरमेघ दो भाग
- श्लोक 63+52=115श्लोक
- छन्द– मन्दाक्रान्ता
- नायक– अलकापुरी निवासी यक्ष
- यक्ष किस का सेवक है– कुबेर का
- मेघदूत में सन्देश वाहक – मेघ
- मेघ का मार्ग– रामगिरी पर्वत से मालव प्रदेश आम्रकूट, नर्मदा नदी, विदिशा नगरी, नीच गिरी, निर्विन्ध्या नदी, उज्जयिनी, महाकाल मन्दिर, सिप्रा नदी, देवगिरी, चर्मण्वती नदी,

चम्बल , कुरूक्षेत्र, सरस्वती नदी, कनखल, गोदावरी, गंगा नदी, हिमालय। क्रोञ्चरन्ध्र, कैलास तथा मानसरोवर वर्णन,

- यक्ष का निवास – रामगिरी पर्वत
- यक्ष का घर कहाँ– अलकापुरी में कुबेर के घर के उत्तर दिशा में
- वियोग के कितने मास शेष – 4 मास
- मेघदूत में किस मन्दिर की आरती का वर्णन– उज्जयिनी के महाकाल मन्दिर की
- किस मास से मेघदूत का प्रारम्भ – आषाढ के प्रथम दिन

सूक्तियाँ

मेघालोके भवति सुखिनो, कामार्ता हि प्रकृतिकृपणा, यात्र्चा मोघा वरमधिगुणे, प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः, रिक्तःसर्वो भवति हिलघु, स्त्रीणां आद्यं प्रणयवचनं, मन्दायते न खलु सुहृदां, वित्तेशानां न च खलु वयो, सूर्यापाये न खलु कमलं, प्रायः सर्वोभवति करुणाद्रवृत्ति, नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

मालविकाग्निमित्र

एतिहासिक नाटक– मालविकाग्निमित्र
वर्णन – शुंगवंशी राजा अग्निमित्र व विदर्भ राजकुमार मालविका
अंक– 5
मालविका का संगीत शिक्षक– गणदास नाट्याचार्य
अग्निमित्र की महारानी– धारिणी
धारिणी की दासी – मालविका
सन्यासिनी– कौशिकी
मालविका का नृत्य किस अंक में – द्वितीय
अग्निमित्र की छोटी रानी – इरावती
मालविका को कारागार में कौन डालता– धारिणी 4 अंक
मालविका की मुक्ति कौन करता – विदुषक
अग्निमित्र के पिता– पुण्यमित्र
अश्वमेध यज्ञ कौन करता है – पुण्यमित्र
यवनों पर विजय किसी– वसुमित्र की
कामदेव का विषदग्ध बाण– मालविका

सूक्तिः– पुराणमित्येव न साधु सर्वम् नाट्यं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्। श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्म संस्था

विक्रमोर्वशीय – 5 अंक का त्रोटक
प्रकार – उपरुपक
नायक/नायिका– पुरुरवा (विक्रम) उर्वशी
मूल स्त्रोत– ऋग्वेद (10–65) शतपथ, ब्राह्मण
किस पुराण से साम्य– मत्स्य पुराण उर्वशी कथा
अप्सरा किस राक्षस से आक्रान्त– केशी राक्षस
पुरुरवा की रानी– औशीनरी
स्वर्ग में उर्वशी द्वारा उच्चरित नाम (प्रमाद वश) 'पुरुषोत्तम विष्णु के स्थान पर 'पुरुरवा
नटक में वणित मणि – संगमनीय मणि
पुरुरवा उर्वशी पुत्र– आयुष
आयुष का पालन– च्यवन ऋषि आश्रम में
उर्वशी को शाप देने वाला – भरत
पुरुरुवस् (मेघ) व उर्वशी(विद्युत्) का
संयोग से प्राप्ति– आयुष् (अन्न) की
उपरोक्त प्रतीकात्मक नाम की व्याख्या– निरुक्तानुसार
पुरूरवा का विलाप किस भाषा में – अपभ्रंश– भाषा की गीतियों में
विक्रमोर्वशीयं का भरत वाक्य
परस्पर विरोधिन्योरेक संश्रयदुर्लभम्।
सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु।।

सूक्तियाँ :– आविर्भूते शशिनि तम सामुच्यमानेव रात्रिः।
अनुत्सेकः खलु विक्रमांलकारः, अनुरागोऽनुरागेण परीक्षितव्यः।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

शाकुन्तलं के विषय में जर्मन महाकवि गेटे के उद्गार डा0 वामन विष्णु मिराशी के शब्द में – **वासन्तं कुसुमं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वच यद् ऐश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे शाकुन्तलं सेव्यताम्**

- कुल अंक – 7
- दुष्यन्त का राज्य – हस्तिनापुर

- शकुन्तला किसी की पुत्री– विश्वामित्र+मेनका
- दुर्वासा शाप किस अंक में –चतुर्थ में
- शकुन्तला की सखी – अनसूर्या व प्रियंवदा
- कण्व कहाँ गए थे – सोमतीर्थ
- चतुर्थ अंक के 4 श्लोक :–

1. यास्यत्यद्य शंकुतलेति
2. पातुं न प्रथमं व्यवस्यति
3. शुश्रुषस्व गुरुन्
4. अस्मान् साधु विचिन्त्य

शकुन्तला की अंगुठी कहाँ गिरी – शचीतीर्थ में
राजतिरस्कार के बाद मेनका शकुन्तला को कहाँ रखती है :– मारीच आश्रम में
राजा को पुत्र भरत के दर्शन कब होते है :– 7वें अंक में
शकुन्तलोपाख्यान महाभारत के – आदि पर्व में

सुभाषित

बलवदपिशिक्षितानां, सतां हि सन्देह पदेषु, गुर्वपि विरह दुःखं आशाबन्धः, औत्सुक्य मात्रमवसाययंति प्रतिष्ठा, सुशिण्यपरिदत्ता विद्येव

भास – इनकी रचनाएं गणपति शास्त्री ने 1909 में प्रकाशित कराया।
कुल नाटक – 13
उदयनकथामूल नाटक– प्रतिज्ञायौगंधरायण–स्वप्नवासव दत्तम्
रामायणमूलक –प्रतिमा नाटक – अभिषेक नाटक
महाभारत मूलक – ऊरुभंग–दूतवाक्य–पंचरात्र–दूतघटोत्कच–कर्णभार–मध्यमव्यायोग–बालचरितम्
लोककथामूलक– अविमारक – चारुदत्त

स्वप्नवासवदत्तम् –

अग्नि द्वारा न जलने वाली कृति– स्वप्नवासवदतम्
सूक्तियाँ खगावासोपेताः , प्रायेण हिनरेन्द्रश्रीः,
कः कं शक्तो रक्षितुं , प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पाद् , दुःख न्यासस्य रक्षणम् , चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्ति।
भास द्वारा प्रयुक्त सर्वाधिक छन्द – अनुष्टुप (437 बार)

मंगलाचरण में अलंकार – मुद्रालंकार जिसमें मंगलाचरण में ही पात्रों के नामोल्लेखित हों।
कालिदास द्वारा भास को प्रदत्त उपाधि– प्रथित यशसाम्
जयदेव द्वारा भास को प्रदत्त उपाधि– भासोहासः
मृच्छकटिकं के रचनाकार– शुद्रक
मृच्छकटिकं का स्वरूप – प्रकरण
अंक – 10
प्रथमांक का नाम – अलंकार न्यास
पंचमांक – दुर्दिन
सप्तमांक– आर्योपहरणक
दशमांक– संहार
स्वर्ण गाड़ी का वर्णन– पंचमांक में
नायक / नायिका– चारुदत्त वसन्तसेना
द्यूतकार– संवाहक
बौद्धभिक्षु बनने वाला–संवाहक
चौर्यकला निपुण–शर्वालिक
चारुदत्त की पत्नी– धूता
शर्वालिक की प्रयेसी – मदनिका
चारुदत्त का पुत्र– रोहसेन
नाटक में वर्णित उद्यान– पुण्पकरण्डक
चिकित्सालय का नाम– बौद्ध बिहार
नाटक में मृत्युदण्ड किसे मिला– चारुदत्त को
राजा पालक को मारने वाला– आर्यक
राजश्यालक कौन – शकार
कुल पात्र– 30

सूक्तियाँ

द्यूतं हिनाम पुरुषस्य, सुखं हि दुःखमनुभूयशोभते, पुरुषेषु न्यासानिक्षिप्यन्ते
मुद्राराक्षस नाटक के लेखक – विशाखादत्त
चन्द्रग्रहण से आरम्भ नाटक – मुद्राराक्षस
कुल अंक – 7
नायिका रहित नाटक – मुद्राराक्षस
कुल पात्र – 29

एकमात्र स्त्रीपात्र – चन्दन दास की पत्नी
सूक्तियाँ अत्यादरः शंक नीयः, हिमवति दिव्यौषधः, पुरुध्रीणां प्रज्ञा, सेवा लाघवकारिणीं,
प्रिय दर्शिका :– 4 अंक लेखक – हर्षवर्धन
गर्भनाटक योजना किस अंक में हैं – तृतीय अंक में
रत्नावली – 4 अंक– हर्षवर्धन रचित,
उदय व सिंहल देश की कुमारी रत्नावली (सागरिका,) नायक + नायिका।
सिंहल देश के प्रधानमन्त्री– वसुभूति
नागानन्द – 5 अंक – हर्षवर्धन रचित
विधाधर राजकुमार जीमूत वाहन द्वारा शंखचूड नामक सर्प की रक्षा गरुड़ से की जाती है।
यह बौद्ध धर्म पर आश्रित नाटक है।
वेणीसंहार– भट्टनारायण कवि – 6 अंक भट्टनारायण की उपाधि– मृगराजलक्ष्मा
दुर्योधन का मित्र – चार्वाक
दुर्योधन की पत्नी– भानुमती
उत्तररामचरितम्–भवभूति (श्रीकण्ठपदलात्र्छन)
राम के गुरुजन व माताएं कहाँ गई– ऋण्यश्रृंग के यज्ञ में
यज्ञ कितने वर्ष का था – द्वादश वार्षिक
ऋण्यश्रृंग कौन है – दशरथ का जमाता
दशरथ की पुत्री – शान्ता
शान्ता को किसने गोद लिया– रोमपाद राजा ने
चित्रवीथी किस अंक में है– प्रथमोअंक में
चित्रक्रम कहाँ तक है– विश्वामित्र आश्रम से सीता अग्नि परीक्षा तक
छायांक कौन सा है– तृतीय अंक
चन्द्रकेतू कौन है– लक्ष्मण का पुत्र
गर्भनाटक किस अंक में है– सप्तम अंक में
प्रधान रस– करुण
सूक्तियाँ :'– तीर्थोदकं वह्निश्च, सतां सद्भि संगः, गुणः पूजा स्थानं गुणीषु, पुरन्ध्रीणां चितं सुकुमारं, व्यतिषजति पदार्थान्तरः, एकःरसः करुणःएव
मालतीमाधव– 10 अंक का प्रकरण
लेखक – भवभूति
मालती+माधव की प्रेम कथा
तान्त्रिक का नाम– अघोरघण्ट
कपालकुण्डला कौन – अघोरघण्ट की शिष्या
नरबलि प्रथा– मालती माधव में

किसकी बलि की तैयारी है – मालती की

महावीर चरितम् 7 अंक भवभूति रचित

रामायण कथाश्रित– बाल से युद्ध काण्ड तक

रावण का मन्त्री– माल्यवान्

मन्थरा कौन थी– शूर्पणखा

महावीर कौन है– श्रीराम

नाटक – लेखक

अनर्घराघव– मुरारि

आश्चर्यचूड़ामणि– शक्तिभद्र

बालरामायण – राजशेखर

बालभारत –राजशेखर

कपूर मंजरी –राजशेखर

हनुमान्नाटक– हनुमान कवि

महानाटक किसे कहते है– हनुमान्नाटक को

विदूषक, सूत्रधार, विण्कम्भक से रहित – हनुमान्नाटक

प्रसन्नाराघव– जयदेव

हास्य चूड़ामणि–वत्सराज

किरांतार्जुनीयं –वत्सराज

समुदमन्थन–वत्सराज

सक्मिणी हरण–वत्सराज

त्रिपुरदाह–वत्सराज

प्रबोध चन्द्रोदय–कृष्ण मिश्र

दार्शनिक नाटक कौन है– प्रबोध चन्द्रोदय

मोहराज पराजय– यशपाल

संकल्प सूर्योदय– वेदान्त देशिक

चैतन्य चन्द्रोदय– कर्णपूर

अम्तोदय–गोकुलनाथ

भगवदज्जुकीय (प्रहसन) बौधायन

मत्तविलास–सिंहविष्णु वर्मा

लटमेलक प्रहसन– शंखधर

धूर्त समागम–ज्योतिरीश्वर

गौरीदिगम्बर प्रहसन– शंकर मिश्र

हास्यार्णव प्रहसन– जगदीशवर भट्टाचार्य
बुद्धचिरतम् – 28 सर्ग– अश्वघोष रचित
सौन्दरनन्द– 18 सर्ग– बुद्ध द्वारा सौतेले भाई नन्द का धर्म परिवर्तन है।
नन्द की पत्नी का नाम– सुन्दरी
शारिपुत्र प्रकरण– 9 अंक
राष्ट्रपाल नाटक– चीनी भाषा में – अश्वघोष
बौद्ध कवि– अश्वघोष
सुवर्णाक्षी पुत्र, साकेत निवासी , महाकवि, महावादी, आर्य – अश्वघोष
किरातार्जुनीयं – भारवि– 18 सर्ग
दण्डी के प्रपितामह – भारवि
भारवि के पिता–नारायणस्वामी
महाशैव कौन है– भारवि
किरातार्जुनीयं का कथानक – महाभारत (वनपर्व)
श्रियः से आरम्भ– किरातार्जुनीयं
सर्गान्त में लक्ष्मीशब्द– किरातार्जुनीयं

सूक्तियाँ

हितं मनोहारि च, वरं विरोधोऽपि समं, अहोदुरन्ता, वसन्तिहि प्रेम्णि, आपातरम्या विषयाः सहसा विदधीत न, तेजोविहीनं विजहाति, प्रकर्षतन्त्रा हिरणे, व्रजन्ति ते मूढधिय,

रावण वध (भट्टिकाव्य) – भट्टि कवि 22 सर्ग 1624 पद्य यह चार काण्डों में विभक्त है (व्याकरण दृष्टि से)
जानकीहरण– कुमार दास – 20 सर्ग
शिशुपाल वधं – माघ– 20 सर्ग
माघ के पिता – दत्तक(सर्वाश्रय)
दत्तक के पिता– सुप्रभदेव
सूर्य का वर्णन– 11वें सर्ग में

सूक्तियाँ – गृहानुपैतुं प्रणयाद भिप्सवो, श्रेयसि केन तृप्यते, सदाभिमानैक धना हि मनिनः, ज्ञातसारोऽपि खल्वेकः, महीयांसः प्रकृत्या मित, क्रिया समभिहरिण विराध्यन्तं , सर्वः स्वार्थं समीहते नान्यस्य गन्धमपि मानभृतः, समय एव करोति परिभवोऽरिभवो, क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति,
काफिणाभ्युदय– शिव स्वामी

हरविजय – रत्नाकर
रामचरित – अभिनन्द
श्री कण्ठ चरित – मङ्ख
राघवपाण्डवीय– कविराज माधव भट्ट
रामायण+महाभारत की कथा है– राघवपाण्डवीय में
द्विसंधान काव्य में प्रथम रचना– राघवपाण्डवीय
राघव–पाण्डव–यादवीय– पं0 चिदम्बरम्
<u>नैषधीय चरितम्–</u>हर्ष– 22 सर्ग
श्री हर्ष के माता–पिता– मामल्ल देवी / श्रीहीर
हर्ष के आश्रय दाता– कान्यकुब्ज नरेश जयचन्द्र
दो पान व आसन हर्ष की कौन देता था– कान्यकुब्ज नरेश जयचन्द्र
पंचनली के देवता– इन्द्राग्नियमवरुण नल
पंचनली का वर्णन– 13वें सर्ग में
सूक्ति– मितं च सांरच, आर्जवं हि कुटिलेषु , कर्म कः स्वकृतमत्र, कार्य निधानाद्धि, ब्रुवते हि फलेन साधवो,

नवसाहसांक चरित– पद्मगुप्त (परिमल)
विक्रमांक देव चरित– बिल्हण
काश्मीर के राजाओं का इतिहास– राजतरंगिणी
राजतरंगिणी के लेखक– कल्हा
राजतरंगिणी का विभाजन– तरंगों मे 8 तरंग
सोमपाल विलास– जल्हण
पृथ्वीराज विजय – जयानक
कुमारपाल चरित – हेमचन्द्र
कीर्ति कौमुदी– सोमेश्वर देव
मधुराविजय– गंगादेवी
हम्मीर महाकाव्य– नयचन्द्र
राठौरवंश काव्य– रुद्रकवि

<u>दूत काव्य</u>

चन्द्रदूत– जम्बू कवि
पवनदूत– धोयी कवि
भ्रमर दूत– रुद्र

मयूर संदेश– रंगाचार्य
भृंगदूत– गंगानन्द
जैन मेघदूत– मेरुतुंग
उद्धव संदेश– रुपगोस्वामी
कोकिल संदेश– नृसिंह,उदण्ड, वेकटाचार्य
मनोदूत– विष्णुदास
गाथा सप्तशती– हाल कवि
गाथा नाम है– छन्द का
गाथा की समानता– आर्या छन्द से
गाथा सप्तशती की भाषा– प्राकृत
श्रृंगार–वैराग्य–नीतिशतक– भर्तृहरि
अमरुशतक– अमरकवि
अमरु राजा के मृतशरीर में प्रवेशित– शंकराचार्य
अमरुशतक का रस – श्रृंगार
चौरपञ्चाशिका– बिल्हण
चौरपञ्चाशिका में छन्द– वसन्ततिलका
गीत गोविन्द– जयदेव
आर्यासप्तशती– गोवर्धनाचार्य
भामिनी विलास– पण्डित राज जगन्नाथ

स्तोत्र

शिव महिम्न स्तोत्र– पुष्पदन्त
सूर्यशतक– मयूर भट्ट
सूर्य शतक में छन्द– स्रगधरा
चण्डीशतक – बाणभट्ट
सुभाषितावली– वल्लभदेव

काव्यशास्त्र

काव्य प्रयोजन विश्वनाथ के अनुसार– चतुर्वर्ग फल प्राप्ति
भरत मुनि
मम्मट– 6 प्रयोजन –

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतर क्षतये ।

सद्यः परनिवृत्तये कान्तासमिततयोपदेशयुजे ।।

अग्निपुराण

काव्यलक्षण	ग्रन्थ	लेखक

शब्दार्थो सहितौ काव्यम्–काव्यालंकार/भामह
शब्दार्थो काव्यम्– काव्यालंकार/रुद्रट
शब्दाथौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालंकारौ काव्यम् – काव्यानुशासन
तददौषो शब्दार्थौ सगुणावन लंकृती पुनः क्वापि– काव्यप्रकाश (मम्मट
शरीरं ताव दिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली– काव्यादर्श/दण्डी
रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यं– रसगंगाधर/जगन्नाथ
वक्रोक्ति काव्यजीवितम्– कुन्तक
काव्यस्यात्मा ध्वनिः – ध्वन्यालोक/आनन्दवर्धन
औचित्यविचार चर्चा– क्षेमेन्द्र
वाक्यं रसात्मकं वाक्यं – साहित्यदर्पण/ विश्वनाथ
नाटयशास्त्र के लेखक– भरतमुनि
नाटयशास्त्र में अध्याय– 36/37
रीतिरात्मा काव्यस्य – वामनाचार्य
ध्वन्यालोक में उद्योत– चार
दशरुपक के लेखक– धनञ्जय
कविकण्ठाभरण , सुवृत्ततिलक, औचित्य विचार चर्चा– क्षेमेन्द्र
नाट्यदर्पण– रामचन्द्र गुणचन्द्र
रसगंगाधर में आनन– दो
साहित्य दर्पण – विश्वनाथ
काव्यलक्षण– वाक्यं रसात्मक काव्यम्
दोष लक्षण– रसापकर्षकाः दोषाः
गुण कैसे हैं– उत्कर्षहेतवः प्रोक्ता गुणालंकाररीतयः
वाक्यस्वरुप – वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः
महावाक्य – वाक्योच्चयो महावाक्यम्
शब्द– 3– वाचक, लाक्षणिक, व्यञ्जक
अर्थ– 3– वाच्य, लक्ष्य, व्यंग्य
संकेत संभव है– जातौ गुण द्रव्य क्रियासु
शब्द की मुख्यशक्ति– अभिधा

अभिधा द्वारा वोधित अर्थ– मुख्यार्थ, अभिधेयार्थ, वाच्यार्थ
लक्षणा के भेद– 80
संयोगादि कितने हैं– 14
आर्थीव्यत्र्जना भेद– 10
रस लक्षण–
विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा। रसतामोति रत्यादिः स्थायिभावाः सचेतसाम्।।
विभाव के दो भेद– आलम्बन, उदीपन भाव
नायिका भेद– 3 स्वाऽन्या, साधारण, स्त्री
स्वकीया नायिका भेद– तीन– मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा
मध्या, प्रगल्भा भेद– तीन– धीरा, अधीरा, धीराधीरा
स्वकीया के कुल भेद– तेरह
परकीया के भेद– 2 विवाहिता– अन्या (कन्या)
अवस्था भेद से नायिका– 8 प्रकार की
नायिका के कुल भेद– 128,128 3=384
स्थायी भाव– 9
संचारी, व्यभिचारी भाव– 33
रस भेद– 8
काम दशाएं – 10
नायक भेद– चार धीरललित, धीर प्रशान्त, धीरोद्धत, धीरोदात्त
काव्य भेद– 2– ध्वनि, गुणीभूत व्यंग्य
ध्वनि लक्षण– वाच्यातिशयिनि व्यंग्ये ध्वनिस्तकाव्यमुत्तमम्
अर्थशक्त्युद्भव ध्वनि भेद– 12
ध्वनि के शुद्ध भेद– 51
ध्वनि के कुल भेद– 5304+51=5355
गुणीभूत व्यंग्य लक्षण– अपरं तु गुणीभूत व्यंगयं वाच्यादनुत्तमे व्यंग्ये।
गुणीभूत व्यंग्य के भेद
रुपक लक्षण– तद् रुपारोपात्तु रुपकम्
अभिनय लक्षण– भवेदभिनयोऽवस्थानुकारः
अभिनय भेद– 4 आंगिक, वाचिक, सात्त्विक, आहार्य
रुपक के भेद– नाटकादि दश
उपरुपक के भेद–18
नाटक में कितनी संधियाँ हों – 5
अंक – 5 से 10 तक

मुख्य रस – श्रृंगार या वीर
गोपुच्छ जैसी समाप्ति किसकी हो – नाटक की
सर्वे निष्क्रान्ताः कब हो– अंकान्त में
नान्दी के भेद– 2 अष्टपदा एवं द्वादश पदा नांदी
भारती वृत्ति– संस्कृत में वार्तालाप

भारती के भेद– 4 प्ररोचना, वीथी, प्रहसन, आमुख
प्रस्तावना के भेद– 5 उद्घातक, कथोद्घात, प्रयोगातिशय, प्रवर्तक,अवलगित
अर्थोपक्षेप भेद– 5 विष्कम्भक, प्रवेशक, चूलिका, अंकावतार, अंकुख
अर्थप्रकृतियों के भेद– 5 बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी, कार्य
कार्य अवस्था– 5 आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम
सन्धि लक्षण –अन्तरैकार्थसम्बंध सन्धिरेकान्वये सति।
सन्धि भेदः– 5 मुख–प्रतिमुख–गर्भ–विमर्श–उपसंहृति ,
शापादि का भय किस सन्धि में होता है– विमर्श में
उपसंहृति सन्धि का अपन नाम – निर्वहण
किस सन्धि में अद्भुत कार्य हो – निर्बहण में
श्रृंगार रस में वृत्ति होती है– कैशिकी
वीर, रौद्र, बीभत्स रस में वृत्ति– सात्त्वती व आरभटी
सर्वज होती है सभी रसों में – भारती
मनोरञ्जन, नृत्य, गीत, स्त्रीकुल युक्त वृत्ति– कैशिकी
कैशिकी के भेद– 4 नर्म, नर्मस्फूर्ज, नर्म स्फोट, नर्मग में सत्त्व, शूरता, दान, दया, हर्षयुक्त एवं शोक रहित वृत्ति– सात्त्वती
सात्त्वती के अंग– 4 उत्थापक, सांघात्य, संलाप, परिवर्तक
माया, इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, वध, बन्धन, युक्त, वृत्ति– आरभटी
आरभटी के अंग– 4 वस्तूत्थापन, सम्फेट, संक्षिप्ति, अवपातन
प्रासंगिक, एकदेशस्य चरित्र कहलाता है– प्रकरी
जो प्रासंगिक कथा दूर तक व्याप्त हो– पताका
अश्राव्य को कहते हैं– स्वगतम्
महाकाव्य – बन्धा होता है – सर्गों में
महाकाव्य में मुख्य रस– श्रृंगार , वीर यत्शान्त
महाकाव्य में कम से कम सर्ग – 8 ही
आर्ष महाकाव्य में सर्गों का नाम – आख्यान
प्राकृत महाकाव्य में सर्गों का नाम – आश्वास

अपभ्रंश महाकाव्य में सर्गों का नाम – कुड्वक
खण्डकाव्यं भवेकाव्यस्यैक देशानुसारि च ।
गद्य काव्य भेद– 4 मुक्तक, वृत्तगन्धि, उत्कलिकाप्राय चूर्णक।
कवि वंश वर्णन होता है– आख्यायिका में
आख्यायिका बंटी होती है– आश्वासों में
चम्पू काव्य– गद्य पद्यमयं काव्यं – चम्पूरित्यभिधीयते
गद्य पद्यमयी राज स्तुति कहलाती है– विरुद
विविध भाषाओं से निर्मित काव्य– करम्भ्ज्ञक
दोषलक्षण– रसापकर्षका– दोषाः
भेद– 5 पद–पदांश–वाक्य–अर्थ–रस
गुण भेद– तीन माधुर्य– ओज–प्रसाद
समास रहित गुण– माधुर्य
दीर्घ समास गुण – ओज
सभी रसों में होने वाला गुण– प्रसाद
वामन समर्थित गुण– दश
साहित्य दर्पण का मंगला चरण
शरदिन्दु सुन्दर –प्रकाशयतु।
रीति लक्षण– पद संधटना रीति।
रीति भेद– 4 वैदर्भी, गौडी, पात्र्चाली, लाटिका

काव्य प्रकाश – मम्मट

मंगलाचरण
नियतिकृतनियम रहितां ––– भारती कवेर्जयति
काव्यहेतू– शक्ति, निपुणता, अभ्यास
काव्य लक्षण– तददोषौ
काव्य भेद– 3 ध्वनि, गुणीभूतव्यंग्य, चित्र काव्य
ध्वनि लक्षणः–
इदमुत्तमतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद् ध्वनिर्बुधैः कथितः।
गुणी भूत व्यंग्य– अतादृशि गुणीभूत व्यंग्यं तु मध्ययम्
चित्रकाव्य भेद– शब्दचित्र, वाच्य चित्र
रस स्वरुप कारणान्यथ कार्याणि सहकारिण यानिच।
भरत का रस सूत्र लक्षण
विभावानु भाव व्यभिचारी संयोगाद् रसनिष्पति।
रसवाद कितने – चार

भट्टलोल्लट का – रसोत्पत्तिवाद (मीमांसा दर्शन)
शंकु का – रसानुमितिवाद (न्याय दर्शन)
भट्टनायक का – रसभुक्तिवाद (सांख्य)
अभिनव गुप्त का – रस व्यक्तिवाद
नाट्य में वर्णित रस – आठ
स्थायी भाव
श्रृंगार=रति हास्य=हास करुण=शोक रौद्र=क्रोध वीर=उत्साह भयानक=भय बीभत्स=जुगुप्सा
अद्भुत=विस्मय शान्त=निर्वेद वात्स्लय=
ध्वनि भेद = 52+10404=10455
गुणीभूत (मध्यम) काव्य भेद= 8 भेद
माधुर्य गुण युक्त रीति =वेदर्थी
ओज गुण युक्त रीति = गौड़ी
वैदभी व पांचाली के गुणों से युक्त =लाटी रीति
वैदर्भी व गौड़ी के वर्णो से रहित = पांचाली
वेद का सातवां अंग – अलंकार यायावरीय अनुसार
पंचम विद्या– अलंकार शास्त्र
सौन्दर्यमलंकार – वामनानुसार
काव्यालंकार/भामह में 6 परिच्छेद 400 पद्य हैं।
काव्यार्दश /दण्डी में 4 परिच्छेद 600 पद्य है।
काव्यालंकार सूत्र/वामन में 5 अधिकरण 319 सूत्र हैं।
काव्यालंकार /रुद्रट में 14 अध्याय 724 पद्य है।
ध्वन्यालोक/आनन्द वर्धन में 129 कारिका है
दशरुपक /धनत्रजय में 4 प्रकाश 3000 कारिकाएं हैं।
सरस्वती कंठाभरण/भोज में 5 परिछेद 634 कारिकाएं हैं।
चंद्रालोक/जयदेव में 10 मयूख 340 अनुष्टुप्घ हैं।
काव्यप्रकाश/मम्मट में 10 उल्लास 142 कारिकाएं हैं।
पंडित जगन्नाथ को पण्डितराज उपाधि दाता – शाहजहाँ

दर्शन

नास्तिको वेदनिन्दक :– मनुस्मृति
चार्वाक दशान का मूल– बार्हस्पत्य सूत्र
अहिंसा परमो धर्म' मानने वाले– जैन

त्रिपिटक (सुत्त, विनय, अभिधम्म) साहित्य– बौद्ध दर्शन
नास्तिक दर्शन – तीन– चार्वाक, जैन, बौद्ध
आस्तिक दर्शन– छः
न्याय दर्शन के सूत्र रचनाकार – अक्षपाद गौतम
न्याय दर्शन के सूत्र भाष्यकार – वात्स्यायन
न्याय दर्शन के सूत्र वार्तिककार– उद्योतकर
वैशषिक दर्शन के सूत्र रचनाकार – कणाद्
वैशषिक दर्शन के सूत्र व्याख्याकार– शंकर मिश्र
वैशषिक दर्शन के सूत्र भाष्यकार – प्रशस्तपाद
सांख्य दर्शन के सूत्रकार– कपिल
सांख्य दर्शन के भाष्यकार– विज्ञान भिक्षु
सांख्य दर्शन के वृत्तिकार– अनिरुद्ध
योग दर्शन के सूत्रकार– पतञ्जली
योग दर्शन के भाष्यकार– व्यास
योग दर्शन के वृत्तिकार– भोजराज
योग दर्शन के वार्तिककार – विज्ञान भिक्षु
मीमांसा दर्शन के सूत्रकार – जैमिनी
मीमांसा दर्शन के भाष्यकार– शबर मुनि
मीमांसा दर्शन के वार्तिककार– कुमटिल भट्ट
मीमांसा दर्शन के वृत्तिकार– प्रभाकर
मीमांसा दर्शन के निबंधकार– शालिक नाथ माधवाचार्य
वेदान्त दर्शन के सूत्रकार– बादरायण
वेदान्त दर्शन के भाष्यकार – अनेक –

शंकराचार्य– अद्वैत (शारीरिक भाष्य)
रामानुज– विशिष्टाद्वैत (श्री भाष्य)
निम्बकार्चाय– द्वैताद्वैत (वेदान्त परिजात)
मध्वाचार्य– द्वैत (पूर्ण प्रज्ञ)
वल्लभाचार्य– शुद्धाद्वैत (अणु भाष्य)
विज्ञान भिक्षु– अविभागद्वैत (विज्ञानाम्त)

आगमों के भेद – तीन
पांचरात्र, वैखानस या वैष्णव
शैव (पाशुपत–सिद्धान्त–त्रिक– प्रत्यभिज्ञा)
शक्त (समय–कील)

दुखत्रय – आधिभौतिक, आध्यात्मिक, अधिदैविक (सांख्यकारिकानुसार)

चार्वाकदर्शन

अपर नाम – लोकायत दर्शन
आचार्य – चार्वी (चार्वाक)
चार्वाक के गुरु – बृहस्पति
लोकायत के प्रथमोल्लेख– रामायण (अयोध्या काण्ड)
प्रमुख ग्रन्थ – बार्हस्पत्य सूत्र
प्रथम सूत्र – अथातः तत्त्वं व्याख्यास्यामः
4 तत्त्व – पृथ्वी जल तेज वायु
आकाश का विशेषण– भूतवैरल्प
अपवर्ग का लक्षण – मरणमेव अपवर्गः
प्रमाण – एक प्रत्यक्ष
पुरुषार्थ क्या है ? काम (अर्थकामौ)

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।

विद्या लक्षण– दण्डनीति
ईश्वर कौन – राजा

जैन दर्शन

जैन, जिन का अर्थ – जीतने वाला
पहला तीर्थंकर – ऋषभ देव
कुल तीर्थंकर– 24
अन्तिम – महाबीर वर्धमान
जन्म– बिहार में कुण्डग्राम में राजा सिद्धार्थ के घर माता त्रिशला।
प्रथम शिष्य – इन्द्र भूति ब्राह्मण
दो पन्थ – श्वेताम्बर, दिगम्बर
प्रथम ग्रन्थ – अंग (भाषा अर्धमागधी)
महत्वपूर्ण सिद्धान्त – अनेकान्तवाद
अनेकान्तवाद का अपर नाम – स्याद्वाद
प्रमुख नय– सप्त भंगी नय
तत्त्व – 7

जैन धर्म के पद – 5
मोक्ष लक्षण – कृत्सन कर्मक्षयो मोक्षः

बौद्ध दर्शन

बुद्ध का जन्म पिता/माता/विमाता– कपिलवस्तु/शुद्धोधन/महामाया/गौतमी प्रभावती
गौतम का बचपन का नाम – सिद्धार्थ
गृहत्याग का नाम – महाभिनिव्क्रमण
ज्ञान प्राप्ति स्थान/समय – उरवेला (गया) 471 ई0पू0 वैशाख पूर्णिमा
प्रथम उपदेश का नाम – धर्म चक्र प्रवर्तन
बौद्ध धम्र की शाखाएं – 2 हीनयान, महायान
ग्रन्थ – तीन
सुन्तपिटक क. दीर्घ निकाय ख. मज्झिमकाय ग. संजुतकाय घ. अंगुत्तरक ङ. खुदक
विनय पिरक क. खन्दक ख. सुत्तविभंग
अभिधम्मपिटक :
बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय
वैभाषिक
सौत्रान्तिक
विज्ञानवाद
शून्यवाद

न्याय दर्शन

प्रमाणैरर्थपरीक्षणं न्याय – वात्स्यायन
न्याय भेद 1. प्राचीन न्याय 2. नव्यन्याय
प्राचीन न्याय गौत्तम न्याय सूत्रों से सम्बद्ध है
नव्य न्याय गंगेश उपाध्याय रचित तत्त्वचिन्तामणी ग्रन्थ से प्रारम्भ हुआ है।
न्याय में पदार्थ – 16
प्रमाण– 4 – प्रत्यक्ष–अनुमान–उपमान–शब्द
प्रत्यक्ष– साक्षात्कारि प्रमाणकरणं प्रत्यक्षम् साक्षात्कारि प्रमायाः करणं त्रिविधम् इन्द्रियं, इन्द्रियार्थ सन्निकर्षं , ज्ञानम् च।
अनुमान – लिंग परामर्शोऽनुमानम्
2 भेद– स्वार्थानुमानं परार्थानुमानम्
परार्थानुमानं के पाचं अवयव– प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन।
हेत्वाभास– असिद्ध, विरुद्ध, अनेकान्तिक, प्रकरणसम, कालात्यदिष्ट (अबाधित विषय)

उपमानः– यथागोस्तथा गवयः
शब्द प्रमाण – आप्तवाक्यं शब्दः
आप्त पुरुष – यथार्थ भूतस्य अर्थ स्योपदेष्टा
कारण – यस्यकार्यात् पूर्वाभावो नियतोऽनन्यथा सिद्धश्च तत्कारणम्
कारण के तीन भेद– सामवायी, असमवायी, निमित्त।

प्रमेय संख्या – 12
इन्द्रियाँ – 6 घ्राण–रसना–चक्षु–त्वक्– श्रोज–मन
अर्थ– 6 द्रव्यगुण कर्म सामान्य विशेष समवायः
गुण – 24

वैशषिक दर्शन

प्रर्वतक / सूत्र संख्या – कणाद / 370
रावण भाव्य से सम्बंद्धित दर्शन – वैशेषिक
पदार्थ – 7 द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय अभाव
द्रव्य– 9 पृथ्वि जल तेजवायु आकाश काल–दिग् आत्मा मन
गुण– 17 या 24
कर्म 5 – उत्क्षेपण–अवक्षेपण–आकुंचन–प्रसारण–गमन
सामान्य (जाति) – 3 भेद – पर–अपर–परापर
विशेष
समवाय = नित्यसंम्बंध अयुतसिद्ध
अवयव– अवयवी
गुण–गुणी
क्रिया–क्रियावान
जाति–व्यक्ति
विशेष–नित्यद्रव्य
अभाव– 2 भेद
संसर्गाभाव – अन्योऽयाभाव

1. प्रागभाव
2. प्रध्वंसाभाव
3. अत्यन्ताभाव

<u>सांख्य दर्शन</u>

सांख्य परम्परा के आचार्य – कपिल –आसुरि– पत्र्चशिख ईश्वर कृष्ण
प्रसिद्ध ग्रन्थ/लेखक–सांख्यकारिका/ईश्वर कृष्ण
सांख्यकारिका का अपरनाम–सुवर्ण सप्तति/कनकसप्तति
सांख्यकारिका की प्राचीन टीका– माठर वृत्ति
वाचस्पतिमिश्र टीका– सांख्यतत्त्व कौमुदी
शंकराचार्य टीका – जयमंगला
सत्कार्यवाद का प्रमाण

असद् करणादुपादानग्रहणात् सर्वसंभवाभावात्।
शक्तस्य शक्य करणाद् कारणाभावाच्च सत्कार्यम्।।

सांख्य के तत्त्व– 2 प्रकृति+पुरुष
पुरुषसिद्धि में प्रमाण

संघात परार्थत्वात् त्रिगुणादि विपर्ययात् अधिष्ठानात्
पुरुषोऽस्ति भोक्तृभावात् कैवल्यार्थ प्रवृत्तेश्च।।

पुरुष की अनेकता –

जन्ममरणकरणानां प्रतिनियमात् अयुगपत् प्रवृत्तेश्च।
पुरुषं बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्य विपर्ययाच्चैव।।

दुःखनिवृत्ति का कारण – व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्
सांख्य के तत्त्व – 25
मूल प्रकृति – 1
प्रकृति विकृति– 7–महत्–अहंकार–पंचतन्मात्रा
विकृति – 16 पंचज्ञान– पंच कर्म–पंचमहाभूत+मन
पुरुष– 1
सृष्टिप्रक्रिया

प्रकृतेर्महस्ततोऽहंकाररसतस्माद् गणश्चषोडशः।
तस्मादपि षोडशकात्पत्र्चभ्यः पंच भूतानि।

प्रमाण–

प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधंमनुमानम्।
तल्लिंगलिगिंपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनं तु।।

त्रिगुण–

प्रीत्यप्रीतिविषादात्मकाः प्रकाश प्रवृत्ति नियमार्थाः।
सत्त्वं लघु प्रकाशकमिण्टमुपण्टम्भकं चलं रजः।।

गुरुवरणमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः।।

बुद्धि भेद– 50 (विपर्यथ–5+अशक्ति 28+तुष्टि 9+सिद्धि 8)

विपर्यय के अवान्तर भेद– 62 (तम व मोह 8+8+ महामोह 10+तामिस्र व अन्धतामिरः 18+18)

बुद्धिवध– 11

भौतिक सर्ग– 8

तिर्यग योनि – 5

मानव – 1

सर्ग (सृष्टि) 14

सूक्ष्मशरीर तत्त्व– 17

योग दर्शन

ग्रन्थ लेखक – योग सूत्र/ पतञ्जलि

योगसूत्र में पाद– 4 समधि–साधन–विभूति–कैवल्य

योगलक्षण– योगश्चित्त वृत्तिनिरोधः

चित्तस्वरूप – 3 प्रकार प्रख्याशील–प्रवृत्तिशील–स्थितिशील

क्लेश प्रकार – 5 अविद्या–अस्मिता–राग–द्वेष– अभिनिवेश

योग के अंग – 8 यम नियमासन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि।

यम– सत्याहिंसास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः – 5

नियमाः शौच सनतोष तप स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि– 5

आसन– हाथ पाँवादि की विशेष स्थिति स्वस्तिकादि

प्राणायाम– प्राण को नियमित करना– पूरक– कुंभक रेचक

प्रत्याहार– इन्द्रियों को विषयों से रोकना

धारणा– मन का नियमन

ध्यान– ईश्वर चिन्तन

समाधि– 2 सविकल्प निर्विकल्प संप्रज्ञात– असंप्रज्ञात

ईश्वर लक्षण– क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः

कर्म भेद– 4 प्रकार का

प्रज्ञा भेद – 7

चतुर्व्यूह– हेय, हेयहेतू –हान–हानोपाय

पूर्व मीमांसा दर्शन

प्रवर्तक – जैमिनी
विषय– कर्मकाण्ड
धर्म लक्षण– चोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः

वेदान्त (उत्तर मीमांसा)

प्रर्वतक – बादरायण
विषय– ज्ञानकाण्ड
कोश– 5 अन्नमय–प्राणमय–मनोमय–विज्ञानमय–आनन्दमय
विकार– सतत्वतोऽन्यथा प्रथा विकार इत्युदाहृतः।
विवर्त– अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्त इत्युदाहृतः।।
शमदि षट्क सम्पत्ति
शमदमोपरतितितिक्षासमाधान श्रद्धा – 6
साधन चतुण्ट्य– नित्यानित्य वस्तु विवकः इहामुत्रार्थफल भोग
विराग – शमदि षट्क सम्पत्ति – मुक्षुत्व
अनुबंध चतुष्ट्य– अधिकारी – विषय– सम्बंध प्रयोजन
पंचीकरण –

द्विधाविधाय चैककं चतुर्धा प्रथमं पुनः।
स्वस्वेतर द्वितीयांश योजनात्पत्र्च ते

स्थूल शरीर – 4 प्रकार– जरायुज–अण्डज–उद्भिद्ज–स्वेदज
अज्ञानं तु सदसद्भ्यानिवर्चनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधिभावरुपं 2 शक्तियाँ – आवरण–विक्षेप
जगत् रचना वाली शक्ति–विक्षेप शक्ति
अध्यारोप– वस्तुन्यवस्तु आरोपः
वस्तु – ब्रह्म
अवस्तु– अज्ञानादि सकल जडसमूहः
प्रमाण
प्रमाकरणं प्रमाणं– न्याय दर्शन तर्कभाषा
चार्वाक– एक प्रमाण– प्रत्यक्ष
बौद्ध – प्रत्यक्ष अनुमान
जैन– प्रयक्ष अनुमान
न्याय वैशेषिक– 4 प्रत्यक्ष अनुमान उपमान–शब्द
सांख्य योग– 3 प्रत्यक्ष अनुमान शब्द
पूर्वमीमांसा – वेदान्त 6 प्रत्यक्ष–अनुमान–उपमान–शब्द–अर्थापत्ति–अभाव
सम्बधत्रय– समानाधिकरण्य विशेषण विशेष्य– लक्ष्यलक्षण

पांच वायु – प्राणापानव्यानुदान समान

संस्कृत–वाङ्‌यम से सम्बद्ध कुछ महत्वपूर्ण तथ्य

1. ऋग्वैदिक मण्डलों / सुक्तों /मन्त्रों की संख्या है – 10/1028/10580
2. अमरसिंह कृत कोष का नाम – नामलिंगानुशासन
3. संस्कृत का आदिकाव्य– रामायण
4. शिवमहिम्नः स्तोत्र के रचयिता – पुष्पदन्त
5. विष्णुसहस्त्रनाम स्त्रोत का आधारग्रन्थ– महाभारत
6. भगवद्‌गीता के वक्ता–संजय
7. भगवद्‌गीता का आधारग्रन्थ – भीष्मपर्व (महाभारत)
8. मुख्य (शंकर भाष्ययुक्त) उपनिषदों की संख्या– दश
9. वेदत्रयी का अभिप्राय – ऋग्वेद/यजुर्वेद/सामवेद
10. प्रस्थानत्रयी का अभिप्राय – शंकरभाष्य (ब्रह्मसूत्र/गीता/उपनिषद्)
11. वृहत्त्रयी से संकेतित ग्रन्थ – शिशुपालवधम्/किरातार्जुनीयम्/नैषधम्
12. लघुत्रयी से संकेतित ग्रन्थ – रघुवंशम् /कुमारसम्भवम् / मेघदूतम्
13. 'त्रिमुनि' से संकेतित व्याकरणाचार्य–पाणिनि/पतञ्जलि/कात्यायन
14. उपनिषद् वाङ्‌यम में तीन रात्रि तक प्रतीक्षा करने वाला तथा बदले में तीन वरदान देने वाला नचिकेता/यम
15. 'नमस्त्रिमूर्तयेतुभ्यम्' से युक्त रचना–कुमारसम्भवम्
16. त्रिगुणों की संख्या/नाम/स्वरूप–3/सत्त्व/रज/तम/प्रकाशक/चल/गुरु
17. तीनपदों वाला वैदिकछन्द–गायत्री
18. त्रिगुणों की साम्यावस्था–प्रकृति
19. 'त्रिगुणों में क्षोभ की अवस्था –सृष्टि
20. 'त्रिणाचिकेतस् उपाधिवाला–अग्नि (कठोपनिषद्)
21. देवताओं के तीन निवास स्थान – पृथ्वी/द्युलोक/अन्तरिक्ष
22. त्रिविक्रम' उपाधि वाला देवता– विष्णु
23. तीन पग मेंविश्व को नापने वाला देवता– विष्णु
24. त्रिकाल में संकेतित – भूत/वर्तमान/भविष्य
25. त्रिकाल से संकेतित– धर्म/अर्थ/काम

26. आचार्य पाणिनि कृत सुप्रसिद्ध व्याकरण ग्रन्थ–अष्टाध्यायी या लिंगानुशानम्
27. कुमारिलभट्ट का प्रिय शास्त्र मीमांसाशास्त्र
28. मृच्छकटिकम् की रूपक विधा– प्रकरण
29. मृच्छकटिकम् के नायक/नायिका–चारुदत्त /बसन्त सेना
30. संगीतरत्नाकर के रचनाकार – शांर्ग देव
31. चाणक्यकृत प्रसिद्ध ग्रन्थ – अर्थशास्त्र
32. महाकवि कालिदास विरचित दूतकाव्य – मेघदूतम्
33. जर्मन कवि के द्वारा शिर पर उठाया गया नाटक – अभिज्ञानशाकुन्तलम्
34. नीतिशास्त्रीय ग्रन्थ 'पंचतन्त्र' के रचनाकार – विष्णु शर्मा
35. पञ्चतन्त्र पर आधारित 'हितोपदेश' के रचनाकार– नारायण पण्डित
36. रामायण के नामक 'श्रीराम' की नाट्यशास्त्रीय प्रकृति – धरोदात्त
37. महाभारत के नायक 'युधिष्ठर' की नाट्यशास्त्रीय प्रकृति– धीरशान्त
38. महाभारतस्य 'भीम' की नाट्यशास्त्रीय प्रकृति– धरोद्धत
39. महाभारतस्य 'अज्ञातवास' में द्रौपदी का नाम था–सैरन्ध्री
40. जैनागमों की भाषा– अर्धमागधी
41. कामशास्त्र विषयक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ व ग्रन्थकार– कामसूत्र/वात्स्यायन
42. पंचदशी के लेखक – विद्यारण्य
43. नासदीयसूक्त से सम्बद्ध वेद व सूक्त की प्रकृति–ऋग्वेद/दार्शनिक
44. बुधकौशिक कृत स्तोत्र – रामरक्षा स्तोत्र
45. शंकराचार्य का सुप्रसिद्ध कार्य– शारीरक भाष्य
46. 'चर्पटमंजरी स्तोत्र' के रचयिता – शंकराचार्य
47. संगीतशास्त्रीय श्रुतियाँ हैं – सामवेद
48. गायत्री मन्त्र के द्रष्टा ऋषि– विश्वामित्र
49. 'गान्धर्ववेद ' का आधार है– सामवेद
50. गायत्री मन्त्र के द्रष्टाऋषि– विश्वामित्र
51. मीमांसाशास्त्रीय 'गुरुमत' के प्रवर्तक आचार्य– प्रभाकर मिश्र
52. ' भक्ति ' को स्वतन्त्र रस मानने वाले हैं– रूप गोस्वामी
53. विशालकाय ग्रन्थ 'अद्भुतसागर' से सम्बद्ध विषय–विशेष–ज्योतिष शास्त्र
54. महाकवि बाणभट्ट के आश्रयदाता– हर्षवर्द्धन
55. महर्षि वेदव्यास के पिताश्री – पराशर
56. भास्कराचार्य से सम्बद्ध विषय–विशेष–ज्योतिष
57. 'कृष्णकर्णामृतम्' के रचयिता– लीलाशुक
58. 'विक्रमांगदेवचरितम्' के लेखक – विल्हण

59. 'बुद्धचरितम्' के रचयिता– अश्वघोष
60. 'शान्तरस को सर्वश्रेष्ठ मानने वाले–भट्टतौत
61. अभिनवगुप्ताचार्य का निवास क्षेत्र– काश्मीर
62. 'अभिनवभारती' टीका से सम्बद्ध ग्रन्थ– नाट्यशास्त्र
63. रसशास्त्र में साधारणीकरण के प्रतिपादक– भट्टनायक
64. शब्द का मुख्य अर्थ – वाच्यार्थ या मुख्यार्थ
65. 'व्यक्तिविवेक' से सम्बद्ध विषय–विशेष– साहित्य
66. भट्टनारायण की एक उत्कृष्ट रचना– वेणीसंहारम्
67. वेदों के सर्वश्रेष्ठ व प्रमाणिक भाष्यकार–सायणाचार्य
68. प्रमुख वैदिक स्वर–उदात्त/अनुदात्त/स्वरित
69. राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ आधुनिक संस्कृत कवि–मथुरानाथ भट्ट
70. भट्टलोल्लट –सममत रस–सिद्धान्त–उत्पत्तिवाद
71. संस्कृत में शास्त्रपरक–काव्यलेखन के प्रवर्तक–भट्टि
72. महाकवि भट्टि–कृत महाकाव्य–रावणवधम्
73. 'प्रौढ़मनोरमा'टीका का आधारभूत ग्रन्थ– सिद्धान्तकौमुदी
74. भारतीय–ललितकलाओं के आद्य आचार्य–भारतमुनि
75. 'शतपथब्राह्मण' सम्बद्धवेद–शुक्लयजुर्वेद
76. शंकराचार्य के पूर्ववर्ती वेदान्ताचार्य–भर्तृप्रपंच
77. 'राजतरंगिणि' सम्बद्ध ऐतिहासिकवर्णन से सम्बद्ध प्रदेश–विशेष–कश्मीर
78. भर्तृहरि के 'शतकत्रय' व उनके विषय–शृंगार/नीति/वैराग्य
79. 'तैत्तिरीयसंहिता' की सामान्य संज्ञा है– कृष्णायजुर्वेद
80. 'वाजसनेयिसंहिता' की सामान्य संज्ञा है– शुक्लयजुर्वेद
81. महाकवि भवभूति का निवासक्षेत्र–विदर्भ
82. अध्यायसमाप्तिसूचकवाक्य का अभिधान विशेष – पुष्पिका
83. 'पदवाक्यप्रमाणज्ञ' उपाधिधारी महाकवि–भवभूति
84. भवभूति का मूलनाम–श्रीकण्ठ
85. 'षण्णमत–प्रतिष्ठापनाचार्य' उपाधिंधारी विद्वान्–शंकराचार्य
86. साहित्यिक धरातल पर रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक–वामन
87. कविराज विश्वनाथकृत 'काव्य–लक्षण–' –वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
88. पाणिनि व्याकरण के आधारभूत सूत्र–माहेश्वरसूत्र
89. 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य के रचनाकार–भारवि
90. कादम्बनी की काव्यविद्या–कथा
91. हर्षचरितम् की काव्यविधा व लेखक– आख्यायिका/बाणभट्ट

92. 'भास' की उपधिविशेष है – अग्निमित्र
93. 'भासनाटकचक्र' की पाण्डुलिपि प्रापत करने वाले–टी.गणपति शास्त्री
94. मेघदूतस्थ 'रामगिरि' को रामटेक वतलाने वाला विद्वान्– डॉ. मिराशी
95. परम्परानुसार कालिदास के आश्रयदाता का नाम विक्रमादित्य
96. 'भासनाटकचक्र– की मूलप्रति –मलयालम्
97. भासनाटकचक्रस्थ नाटकों की कुल संख्या – 13
98. वह महान् नाटक जो अग्निपरीक्षा में नहीं जला–स्वप्नवासवदत्तम्
99. भास के अधिकाशं नाटकों की कथावस्तु का आधार– महाभारत
100. कालिदासोक्त नाटककार का नाम विशेष–भास
101. 'ललितासहस्त्रनाम' की व्याख्या–सौभाग्यभास्कर
102. सिद्धान्त–शिरोमणि' सम्बद्ध विषय–विशेष–ज्योतिर्गणित
103. आश्चर्यचूडामणि नाटक के रचयिता–शीलभद्र
104. मधुसूदनसरस्वती कृत सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ –अद्वैतसिद्धि
105. 'भक्तिरसायन' के लेखक– मधुसूदन सरस्वती
106. 'सर्वमूल' संज्ञक ग्रन्थों के रचयिता– आनन्दतीर्थ
107. मध्वाचार्य के दीक्षागुरु– अच्युतप्रेक्ष
108. 'राजानक' उपाधि से विभूषित आचार्य–मम्मटाचार्य
109. 'वाग्देवतावतार' उपाधि वाले आचार्य–मम्मटाचार्य
110. साहित्यशास्त्र का प्रसिद्ध आकार ग्रन्थ– काव्यप्रकाश
111. 'शिल्पशास्त्रविधान' के लेखक– मय
112. 'सूर्यशतकम्' के प्रणेता कवि– मयूर
113. जगत् को शाश्वत मानने वाला दर्शनविशेष– पूर्वमीमांसा
114. मीमांसक मतानुसर 'मुक्ति' का आधार– कर्म
115. 'गोरखनाथ' के गुरु–मत्यस्येन्द्रनाथ
116. 'अणुभाष्य' के लेखक– वल्लभाचार्य
117. रधुनाथ शिरोमणि से सम्बद्ध विषयविशेष–न्याय
118. 'गांधिविजयम्' नाटक के लेखक–मथुराप्रसाद दीक्षित
119. 'मदनविनोद' ग्रन्थ से सम्बद्ध विषयविशेष– आयुर्वेद
120. मधुच्छन्दा ऋषि के पुत्र– विश्वामित्र
121. विश्व के सर्वश्रेष्ठ गणितशास्त्र के वैज्ञानिक– भास्कराचार्य
122. वेदों के अनुसर 'अग्नि' के प्रथम आविष्कारक– भृगु
123. 'सरस्वती–कण्ठाभरण' के रचनाकार–भोजराज
124. 'समरांगण–सूत्रधार' का विषय–वास्तुशास्त्र

125. 'राजमार्तण्ड' टीका का आधारग्रन्थ–योगसूत्र
126. 'भोजप्रबन्ध' के लेखक–वल्लाल सेन
127. मीमांसक मण्डनमिश्र की पत्नी का नाम –भारती
128. वाचस्पति मिश्र की पत्नी का नाम– भामती
129. 'नामूलं लिख्यते किञ्चिद्' इस प्रतिज्ञावाक्य से सम्बद्ध – मल्लिनाथ
130. सुप्रसिद्ध संस्कृत लेखक महालिंग का निवासक्षेत्र– मद्रास
131. 'गणितसार– संग्रह के लेखक– महावीराचार्य
132. 'ध्वनि–सिद्धान्त' के प्रथम खण्डनकर्ता– आचार्य महिमभट्ट
133. 'व्यक्तिविवेक' के रचनाकार– आचार्य महिमभट्ट
134. 'ज्योतिष' रत्नाकर ' का मुख्य विषय–फलित ज्योतिष
135. 'माध्यन्दिन–संहिता ' का अपरनाम–शुक्लयजुर्वेद
136. 'वेददीपभाष्य' के रचयिता–महीधर
137. महेश ठक्कुर को आश्रयदेने वाला वादशाह– अकबर
138. महाकवि माघ का निवास क्षेत्र–सौराष्ट्र
139. अष्टाध्यायी की काशिका वृत्ति पर 'न्यास' की रचना करने वाले – जिनेन्द्रबुद्धि
140.'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के श्रेष्ठ टीकाकार– राघवभट्ट
141. बुद्धपरक स्तोत्र ग्रन्थ है– अध्यर्धशतक
142. सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'रोगविनिश्चय' के लेखक – माधव
143. मित्रमिश्रकृत प्रसिद्ध ग्रन्थ– वीरमित्रोदय
144. मुहम्मद तुगलक द्वारा सम्मानित आचार्य–मुनिभद्रसूरि
145. आचर्य वल्लभ सम्बद्ध सम्प्रदाय– पुष्टिमार्ग
146. 'अनर्घराघवम्' नाटक के रचनाकार–मुरारि
147. 'नयविवके' ग्रन्थ के प्रणेता–मुरारि मिश्र
148. मैक्डोनल का जन्मस्थान– मुजफ्फरनगर

- 'दयानन्दलहरी' के रचियता– मेघाव्रत शास्त्री
- याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम – मैत्रेयी
- 'निरुक्तम्' नामक वेदांग के प्रसिद्ध आचार्य– यास्क
- कालिदासकृत सुप्रसिद्ध नाटक– अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- 'मृच्छकटिकम्' नाटक के लेखक– शूद्रक
- नाट्यशास्त्र के अनुसार रसों की संख्या– आठ
- 'जवाहरलाल नेहरूविजयम्' नाटक के लेखक– रमाकान्तमिश्र
- 'रत्नखेट' उपाधि से विभूषित –श्रीनिवास दीक्षित

- कालिदास की सुप्रसिद्ध उपाधि' दीपशिखा' का आधार– रघुवंशम् (संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ)
- 'रासपञ्चाध्यायी' को अन्तर्भूत करने वाला ग्रन्थ– भागवत पुराण
- महाभारत के क्रमिक तीन नाम– जय/भारत/शतसाहस्त्री
- राजशेखर की विदुषी पत्नी का नाम– अवन्तिसुन्दरी
- 'काव्यमीमांसा' के रचनाकार– राजशेखर
- विश्व के सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण– आचार्य पाणिनि
- शंकराचार्य का जन्मस्थान– कालडी केरल
- :श्रीकण्ठचरित' के लेखक– मंखक
- भागवत की श्रीधरी टीका का नाम – भावार्थ दीपिका
- केरल के राजाओं में सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार– रामवर्मा
- एक सौ बीस वर्षों तक जीने वाले दार्शनिक विद्वान– रामानुजाचार्य
- दश प्रकार के रूपकों की रचना करने वाले विद्वान्– ह्री. रामानुजाचार्य
- 'परमार्थदर्शन' के प्रणेता– पं0 रामावतार शर्मा
- लक्षण–ग्रन्थ 'काव्यालंकार के लेखक आचार्य–रुद्रट
- वेदांग ज्योतिष के प्रणेता आचार्य–लगधाचार्य
- अलाउद्दीन खिजली द्वारा सम्मानित जैन पण्डित– ललितकीर्ति
- 'खाण्डवदहनम्' महाकाव्य के प्रणेता– ललितमोहन भट्टाचार्य
- लौगाक्षिभास्कर के 'अर्थसंग्रह' का विषय – पूर्व मीमांसा
- श्रीमद्भागवत की सम्पूर्ण श्लोक संख्या – अट्ठारह हजार
- श्रीमद्भागवत की कुल अध्याय संख्या –तीन सौ पंतीस
- अष्टाध्यायी पर लिखित वार्तिकों की संख्या– लगभग पाँच हजार
- 'वृहज्जातकम्' का विषय– ज्योतिषशास्त्र
- 'पञ्चसिद्धान्तिका' ग्रन्थ के लेखक– वाराहमिहिर
- 'बृहज्जातकम्' का विषय– भविष्यकथन
- वल्लभाचार्य के चित्र को दिल्ली दरबार में स्थापित करने वाला–सिकन्दर लोदी
- वल्लभाचार्य का जलसमाधि क्षेत्र–काशी
- सम्प्रति वल्लभाचार्य के उपलब्ध ग्रन्थों की संख्या – 31

- ऋग्वेद सप्तमण्डल के द्रष्टा ऋषि– वशिष्ठ
- पुराणों के अनुसार वशिष्ठ के भाई का नाम – अगस्त्य
- वह विद्वान् जिसे द्वितीयबुद्ध की संज्ञा दी गयी–वसुबन्धु
- वसुबन्धु के 'अभिधम्मकोश' से सम्बद्ध बौद्धसम्प्रदाय विशेष– वैभाषिक
- 'नरनारायणानन्दम्' के प्रणेता महाकवि–वस्तुपाल
- 'लघुभोजराज' की उपाधि से विभूषित–वस्तुपाल
- 'अष्टांगसंग्रह' के रचयिता वाग्भट्ट का जन्मक्षेत्र–सिन्धु
- आयुर्वेद को विदेशों में प्रतिष्ठित करने वाले – वाग्भट्ट
- 'काव्यानुशासन' एवं छन्दोनुशासनं ' के लेखक – वाग्भट्ट
- वैशेषिक–दर्शन के अतिरिक्त अन्य सभी दर्शनों पर टीकाएं लिखने वाला विद्वान् – वाचस्पति मिश्र
- 'भामतीप्रस्थान' के रचयिता– वाचस्पति मिश्र
- 'तात्पर्याचार्य' एवं षड्दर्शनीवल्लभ' उपाधि विभूषित– वाचस्पति मिश्र
- अभिनव–वाचस्पति मिश्र का प्रमुख ग्रन्थ– विवादचिन्तामणि
- कामविषयक ग्रन्थ का लेखक ब्रह्मचारी विद्धान्–वात्स्यायन
- वात्स्यायन–कामसूत्र के अधिकरणों की संख्या–सात
- वह स्तोत्र जिसके पाठ से वादिराज सूरि को कुष्ठरोग से मुक्ति मिली– एकीभावस्तोत्र
- रीति सम्प्रदाय के प्रवर्तक– आचार्य वामन
- जयादित्य के सहयोग से 'काशिकावृत्ति' की रचना करने वाले– वामन
- 'सिद्धान्तकौमुदी' पर वासुदेव दीक्षित लिखित टीका– बालमनोरमा
- 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' नामक टीका के लेखक – वाचस्पति मिश्र
- 'मिताक्षरा' टीका का आधारग्रन्थ–याज्ञवल्क्य–स्मृति
- गुजरात में पुष्टि सम्प्रदाय का प्रचार करने वाले– विट्ठलनाथ
- पंचदशीकार विद्याराण्य स्वामी का मूलनाम–माधवाचार्य
- 'जिनसहस्त्रनाम' के प्रणेता– विनयविजयगणि
- ज्योतिष– विषयक 18 टीका ग्रन्थों के लेखक– विश्वनाथ
- रसवादी प्रमुख साहित्यकार–विश्वनाथ कविराज
- संस्कृत सुभाषित– कोशों में सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ–सुभाषितरत्नभाण्डागारम्

- वैविध्यपूर्ण चरित्रवाला वैदिक ऋषि–विश्वनाथ
- शुनः शेप को पुत्रवत् स्वीकार करने वाला वैदिक ऋषि– विश्वामित्र
- ऋषि विश्वामित्र का मूलनाम– विश्वरथ
- शांकरमत को पाखण्ड कहने वाला व्यक्ति– विश्वासभिक्षु
- 'रणवीरज्ञानकोश के रचयिता– विश्वेश्वर पण्डित
- ' सर्वज्ञसूक्त' के रचियता व रुद्रसम्प्रदाय के प्रवर्तक– विष्णुस्वामी
- वल्लभमत की अन्तिम भागवत टीका– भागवतचन्द्र – चन्द्रिका
- ऋगर्थदीपिका वेदभाष्य के लेखक– वेंकटमाधव
- उत्तररामचरित चम्पू के रचयिता– वेंकटध्वरी
- 'जय' को 'भारत' का स्वरूप देने वाले आचार्य–वैशम्पायन
- ऋग्वेद के पदपाठ कर्ता– शाकल्य
- कृष्णदेवराय के गुरु –व्यासराय
- नव्यवेदान्त के प्रवर्तक आचार्य– व्यासतीर्थ
- महाभारत की रचना का स्थान– बदरीक्षेत्र
- सोलहवर्ष की अवस्था में विश्वविश्रुत भाष्यग्रन्थ–लेखक – आदिशंकराचार्य
- तुषागिनदहन द्वारा गुरुद्रोह का प्रायश्चित करने वाले आचार्य– कुमारिल्ल भट्ट
- 'सौन्दर्यलहरी' स्तोत्र के रचयिता– आदिशंकराचार्य
- शंकराचार्यकृत लोकप्रिय प्रकरणग्रन्थ– विवके चूडामणि
- शंकराचार्यकृत तान्त्रिक स्तोत्र ग्रन्थ– सौन्दर्यलहरी
- फिद्सूत्रों के कर्ता– शंतनु
- 'ब्राह्मणसर्वस्व' के लेखक– हलायुध
- मीमांसा सूत्रों के पहले भाष्यकार– शबर
- शरणदेवकृत 'दूर्घटवृत्ति' का आधारग्रन्थ– अष्टाध्यायी
- प्रत्यके संस्कृत शब्द को धातुज मानने वाले प्रथम वैज्ञानिक – शाकटायन
- अ.भा.स. कवि सम्मेलन में पद्यात्मक अध्यक्षीयभाषण देने वाले – शालिग्राम शास्त्री
- मृच्छकटिककार शुद्रक की मृत्यु का कारण– अग्निप्रवेश
- 'आन्ध्रपाणिनि' उपाधि के पात्र – शेषाचलपति
- ज्योतिष की प्रत्येक शाखा पर ग्रन्थ लिखने वाले महाराष्ट्रीय विद्वान् – श्रीपति भट्ट

- 'शास्त्रकाव्य' की संज्ञा वाला महाकाव्य– नैषधम्
- षड्गुरुशिष्य की सर्वानुक्रमणी वृत्ति का नाम– वेदार्थदीपिका
- 'स्वयम्भूस्त्रोत्र' के रचयिता– समंतभद्र
- चारों वेदों की दैवत संहिताओं के सम्पादन कर्ता– वेदमूर्ति सातवलेकर
- महाराष्ट्रीय विवाह–विधि में गेय मंगलाष्टकछन्द– शार्दूलविक्रीडित
- शुल्कयजुर्वेद का अन्तिम अध्याय– ईशावास्योपनिषद्
- 'गदनिग्रह' के रचयिता– सोढ्ढल
- कालिदास के काव्यों की रीति– वैदर्भी
- सोमदेवकृत 'कथासरित्सागर' का आधार– बृहत्कथा गुणाढ्य
- 'कल्याणमन्दिर–स्तोत्र' सम्बद्ध सम्प्रदाय– जैन
- प्रत्यभिज्ञा दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ– शिवदृष्टि
- 'भारत' ग्रन्थ को 'महाभारत' करने वाले – सौती
- ऋग्वेद के प्राचीनतम भाष्यकार–स्कन्द स्वामी
- हर्षवर्द्धन की कृतियाँ – रत्नावली /प्रियदर्शिका / नागानन्दम्
- योगवाशिष्ठ की श्लोक संख्या– 32 हजार
- वेदान्त–मतानुसार जगत् का आदिकरण–ब्रह्म
- अथर्ववेद की अपर संज्ञा– ब्रह्मवेद/भृग्वंगिरावेद
- अथर्ववेद के काण्डों की संख्या–बीस
- काव्यप्रकाशस्य अलंकारों की संख्या– 61
- भारत में बोली जाने वाली कुल बोलियाँ – लगभग 1650
- वर्णसमाम्नाय के प्रत्याहार सूत्रों की संख्या– 14
- पाणिनिकृत अष्टाध्यायी की सूत्र संख्या– 3981
- 'गीतगोविन्द' का श्रणव किए बिना अन्नग्रहण न करने वाला राजा–उत्कल नरेश कामदेव
- भास्कराचार्य की विदुषी कन्या– लीलावती
- हेमचन्द्र सूरि की उपाधि–कलिकाल सर्वज्ञ
- तैत्तिरीय–संहिता के पदपाठकार–आत्रेय
- विष्णुधमोत्तर पुराण में अध्यायों की संख्या – 807

- वाल्मीकि को विष्णु का अवतार मानेवाला पुराण–विष्णुधर्मोत्तर
- दशलक्षणी पुराण–श्रीमद्भागवत
- प्राचीनतम महापुराण– वायुपुराण
- कृष्णप्रिया राधा का उल्लेखकर्ता पुराण– ब्रह्मवैवर्त पुराण
- श्रीमद्भागवत पुराण के संवाद–शकु परीक्षित
- हंसगीता को अन्तर्भूत करने वाला ग्रन्थ–विष्णुधर्मोत्तर पुराण
- कच द्वारा शुक्राचार्य से प्राप्त की गयी विद्या–संजीवनी
- चन्द्रमा को एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में प्रविष्ट होने का समय लगता है– 60 घटी
- सूर्य को एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में प्रविष्ट होने में समय लगता है – 13 दिन
- राशिचक्र के अन्तर्गत आने वाले नक्षत्रों की संख्या – 27
- चन्द्रमा की सम्पूर्ण कलाएं – सोलह
- धर्मशास्त्रों में विधर्मीय विवाह विषयक विचार– नहीं हैं
- चौबीस जैन पुराणों में सर्वाधिक प्रसिद्ध – आदिपुराण
- आदिपुराण के रचयिता–जिनसेन
- ऋषीभदेव विषयक पुराण– आदिपुराण
- कामसूत्रकार वात्स्यायन का मूलनाम–मल्लनाग
- छेक, वृत्ति, श्रुति, अन्त्य और लाट से सम्बद्ध अलंकार अनुप्रास
- चम्पू काव्यों में सबसे बड़ा काव्य– आनन्दवृन्दावनचम्पू
- 'आनन्दवृन्दावनचम्पू ' के लेखक – कविकर्णपूर
- ऋग्वेद से सम्बन्धित ऋत्विक् विशेष– होता
- सर्वज्ञानमयो हि सः – मनु
- ज्योतिष विषयक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ आर्यभटीय का अपरनाम– आर्यसिद्धान्त
- 'सर्पसत्र' करने वाले पौराणिक राजा– महाराजा जनमेजय
- जैनमतानुसार भगवान् श्रीकृष्ण के गुरु– तीर्थंकर नेमिनाथ
- ऋग्वेद की कुल शब्दसंख्या– एक लाख तिरपन हजार आठ सौ बत्तीस
- ऋग्वेद की कुल अक्षर संख्या – चार लाख बतीस हजार
- 'गांधीसूक्तिमुक्तावली ' के लेखक – श्री चिंतामणराव देखमुख
- 'हरि' शब्द के सोलह अर्थों को वतलाने वाला कोश– अमरकोश

- भवगद्गीता के 18वें अध्याय की संज्ञा– एकाध्यायी गीता
- 'औचित्य–विचारचर्चा के लेखक– क्षेमेन्द्र
- शांत को ही सर्वश्रेष्ठ रस मानने वाला आचार्य–भट्टतौत
- 'काव्यमीमांसा' के लेखक– राजशेखर
- दण्डी के काव्यादर्श का जर्मन अनुवादकर्ता विद्वान् – बोथलिंग
- संस्कृत व्याकरण में धातुओं के विभाग का आधार – दश गण
- व्याकरणशास्त्र में न्यासकार उपाधि से प्रसिद्ध – जिनेन्द्रबुद्धि
- 'किरातार्जुनीयम्' काव्य की सर्गसंख्या/लेखक–18/भारवि
- 'लक्ष्मीपदांक' उपाधि वाला महाकाव्य–किरातार्जुनीयम्
- भारवि की वाणी को 'नारिकेलफल' की उपमा देने वाला विद्वान्–मल्लिनाथ
- जयदेव कृत 'चन्द्रालोक' से प्रभावित ग्रन्थ– कुवलयानन्द
- वर्तमान 'कूर्मपुराण' की श्लोक संख्या– 6 हजार
- 'व्यासगीता' को अन्तर्भूत करने वाला पुराण– कूर्मपुराण
- कृष्णयजुर्वेद के प्रथम आचार्य–वैशम्पायन
- पातञ्जलमहाभाष्य के अनुसार यजुर्वेद की शाखाएं– 101
- 'उमाहेमवती आख्यान विषयक उपनिषद्– केनोपनिषद्
- 'कोकिलसंदेश' के रचयिता–उद्दण्ड कवि
- कौटिल्य अर्थशास्त्र मे ंअधिकरणों की संख्या– 15
- कौटिल्य अर्थशास्त्र में अध्यायों की संख्या– 150
- चाणक्यसूत्रों की कुल संख्या– 571
- आगमों की कुल संख्या– 64
- गरुडपुराण के दोनों खण्डों की कुल अध्याय संख्या 264
- 'साहित्य–संगीत–कला–विहीनः से सम्बद्ध–भर्तृहरि
- महाभारत का अन्तिमपर्व– स्वर्गारोहणपर्व
- सुप्रसिद्ध शकुन्तलोपाख्यान विषयक महाभारत का पर्व–आदिपर्व
- वह ग्रन्थ जिसका खिलभाग हरिवंशपुराण है– महाभारत
- महाभारत की सर्वमान्य टीका व लेखक– भारतभावदीप/ नीलकण्ठ चतुर्धर
- 'श्लोकत्वमाद्यत यस्य शोकः' से कालिदास ने जिसका संकेत किया है – वाल्मीकि

- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'–मनु
- महर्षि पाणिनि का निवास स्थान– शालातुर
- 'रघुवंशम्' के अन्तिम व 19वें सर्ग से सम्बद्ध राजा– अग्निवर्ण
- बुद्धचरितम् की कुल संख्या– 28
- आर्यशूर की जातकमाला में जातकों की संख्या– 34

- 'किरातार्जुनीयम्' का चित्रकाव्यमय सर्ग– 15 वाँ सर्ग
- भारवि का कवित्वविषयक प्रसिद्धगुण– अर्थगौरव
- श्रीलंकानिवासी जानकीहरणम् के लेखक– कुमारदास
- शिशुपालवधम् महाकाव्य की सर्ग संख्या– 20
- सोढ्ढवल की अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार 'सर्वेश्वर ' उपाधि सम्पन्न– बाणभट्ट
- बालभारत के रचयिता–अमरचन्द्रसूरि
- 'हयग्रीववधम् ' काव्य के प्रणेता– भर्तृमेण्ठ
- रत्नाकर विरचित 'हरविजयम्' की सर्ग संख्या–50
- संस्कृतसाहित्य में 'हास्य' के धरातल पर सर्वश्रेष्ठ लेखक– क्षेमेन्द्र
- 'परिमल' उपाधि से अलंकृत– पद्यगुप्त
- 'शान्तिशतकम्' के रचयिता– शिल्हण
- पाणिनीय धातुपाठ में धातुओं की कुल संख्या– 1944
- संस्कृतसाहित्य का प्राचीनतम् सूक्तिसंग्रह ग्रन्थ–सुभाषितरत्नकोष
- सुभाषितों का महतम संग्रह ग्रन्थ– सुभाषितरत्नभाण्डागारम
- संस्कृतसाहित्य में अहकारपूर्ण गर्वोक्तियों के लिए प्रसिद्ध पण्डित जगन्नाथ
- चौरपञ्चाशिका के रचनाकार–विल्हण
- सम्मोहनतन्त्र के अनुसार वैष्णवतन्त्रों की संख्या– 75
- महाभारत वनपर्व में यक्षप्रश्नों की संख्या – 72
- सम्पूर्ण तान्त्रिक वाङ्‌यम में सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ– तन्त्रालोक
- तन्त्रालोक के लेखक– अभिनवगुप्त
- सर्वप्रथम यज्ञोपवीत का निर्देश करने वाला ग्रन्थ–तैत्तिरीय आरण्यक
- 'देवीपुराण' के वक्ता ऋषि–वशिष्ठ

- देवभागवत के सातवें स्कन्द के नवें अध्याय में लिखित गीता–देवीगीता
- दुर्गासप्तशती को अन्तर्भूत करने वाला पुराणग्रन्थ–मार्कण्डेय पुराण
- दुर्गासप्तशती के वक्ता– सुमेधा ऋषि
- धातुपाठविष्यक सायणाचार्यकृत ग्रन्थ का नाम– धातुवृत्तिसुधानिधि
- 'पञ्चतन्त्रसम्मत' कुल कथाओं की संख्या– 87
- पञ्चतन्त्र के रचनाकार व विषय– विष्णु शर्मा/राजनीति
- छन्दशास्त्र में 8 गुणों की पद्धति के प्रवर्तक– आचार्य पिंगल
- सबसे बड़ा उपनिषद् ग्रन्थ– बृहदारण्यकोपनिषद्
- वृहदारण्यकोपनिषद् के प्रधानतत्त्वज्ञ–याज्ञवल्क्य
- छः वेदांगों के अतिरिक्त वेदविषयक जानकारी देने वाला श्रेष्ठ ग्रन्थ– वृहद् देवता
- काव्य प्रकाश की कुल कारिकाएं– 142
- श्रीमद्भागवत के वर्तमान अध्यायों की संख्या– 335
- पातञ्जल–महाभाष्य के आह्निकों की कुल संख्या– 85
- पाणिनिकृत अष्टाध्यायी के सूत्रों की कुल संख्या–3981
- जैमिनिकृत मीमांसा सूत्रों की कुल संख्या–2644
- 'मीमांसासूत्र' का अपरनाम – द्वादशलक्षणी
- 'मृडानीतन्त्र' की विशेष शिक्षा – सोना बनाने की प्रक्रिया
- यजुर्वेद से सम्बद्ध ऋत्विक्– अध्वर्यु
- शुक्लयजुर्वेद के अध्यायों की संख्या– 40
- योगयाशिष्ठ की श्लोक संख्या–32 हजार
- श्रीरामरक्षा स्तोत्र की कुल श्लोक संख्या–40
- वाल्मीकिरामायण की अपरसंज्ञा– 'चतुर्विंशतिसाहस्त्री–संहिता'
- भट्टिकाव्य' रावणवधम् के 22 सर्गों की कुल श्लोक संख्या– 3600
- वाल्मीकिरामायण के काण्ड/सर्ग/श्लोक–7/645/24000
- रुद्राध्याय के नमक और चमक में प्रत्येक में अनुवाक संख्या– ग्यारह
- 'दशकुमारचरितम्' के सप्तम्–उच्छ्वास की विशेषता– निरोष्ठ्यवर्ण हैं।
- कणादकृत वैशेषिक सूत्रों की संख्या–270
- श्रयंक उपाधि वाला महाकाव्य–शिशुपालवधम्

- सबसे बड़ा व प्राचीन शुल्बसूत्र–बोधायन 525 सूत्र
- महाभारत के शांतिपर्व में उल्लिखित गीता– हंसगीता
- 'शून्यतासप्तति' के रचयिता– नागार्जुन
- साहित्यिक कृतियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य
- भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के अध्याय– 36 अध्याय
- संस्कृत साहित्य का प्रथम ऐतिहासिक ग्रन्थ– राजतंरगिणी।
- मेघदूत की कथा शेली कैसी है– गेय
- रति विलाप किस काव्य में है– कुमारसम्भवे
- मालती माधव कीदृशी रचना– प्रकरण
- रुपकाः कति – दश
- एक पात्र प्रायोजित रुपक– भाण
- षोडश नामकोपेतं नाटकम्– डिम
- वृहत्कथा की भाषा– पैशाची
- शल्मलि वृक्ष का वर्णन– कादम्बरी
- रघुवंशे कति राज्ञाः वर्णनं – 31
- मध्यम व्यायोग में मध्यय कः – भीम
- कालिदास के अग्निमित्र की दूसरी पत्नी– इरावती
- शकुन्तलां कः शप्तवान्– दुर्वासा
- संस्कृत का आदिकाव्य – रामायण
- मृच्छकटिकम् की रुपक विद्या– प्रकरण
- कादम्बरी की रुपक विद्या– कथा
- हर्षचरितम् की रुपक विद्या– आख्यायिका
- किरातार्जुनीयम् का चित्रमय सर्ग – 15वाँ
- श्री शब्द से आरम्भ काव्य– किरातार्जुनीयम्
- 'शकुनासोपदेश' कुत्र किद्यते– कादम्बरी
- 'नलचम्पू' का अपन नाम – दमयन्ती कथा
- 'विक्रमोर्वशीय' का नायक – पुरुरवा नायिका उर्वशी
- अभिज्ञान शाकुन्तल की सर्वप्रथम अनुदित भाषा– जर्मन

- संस्कृत साहित्य का विशाल महाकाव्य– त्रिपुर दाह
- 'शास्त्र काव्य' की उपाधि वाला काव्य– नैषध
- श्रयंक की उपाधि वाला काव्य– शिशुपाल वध
- किरात के आद्यः तीन सर्ग– पाषाणत्रय
- महाभारत का प्रथम पर्व– आदि पर्व
- महाभारत छटा पर्व – भीष्म, अन्तिम–स्वर्गारोहण
- वृहत्त्रयी–किरात, शिशुपाल, नैषध
- लघुत्रयी– रघुवंश, मेघदूत, कुमार सम्भव
- गद्यत्रयी– वासवदत्ता, कादम्बरी, दशकुमार चरित
- ध्वन्यालोक में कितने भाग हैं– कारिका, वृत्ति व उदाहरण
- आचार्य भामह ने काव्यालंकार में प्रयुक्त अलंकार – 23
- महाकाव्य का विभाजन किस में होता है– सर्गों में
- कालिदास की पत्नि का नाम – विद्योतमा
- ग्रन्थ में पुष्पिका कहाँ होती है– अन्ते ग्रन्थस्य
- रामायण के आदि व अन्त काण्ड– बालकाण्ड व उत्तर काण्ड
- 'शत साहस्त्री संहिता' का – महाभारत
- मनुस्मृति में कुल अध्याय– 12 अध्याय
- साहित्य दर्पणानुसार महाकाव्ये न्यून सर्ग– मात्र 8
- काव्यप्रकाशे उक्त अलंकार– 67
- मेघदूत में प्रदर्शित छन्द– मन्दाक्रान्ता
- वृहज्जातक का विषय– भविष्य कथनम्
- भागवत पर आधारित नाटक– बाल चरितम्
- काव्यप्रकाशे– 10 उल्लास, 142 कारिकाएं 603 उदाहरण है
- महाभारत के कुल श्लोक– 1 लाख
- रामायण के कुल श्लोक– 25 हजार
- कस्मिन् नाटके विदूषक पात्रं नास्ति– उत्तर राम चरित
- ऐसा नाटक जिसकी नायिका ने पूरे नाटक में कोई श्लोक नही कहा– उत्तर रामचरितम् नायिका सीता

- 'मृच्छकटिकम' का अपर नाम – चारुदत्त
- चौरपंचाशिका का लेखक छन्द व श्लोक संख्या – विल्हण, वसन्त तिलका 500
- नाट्य शास्त्र में – 4 अलंकार 10 गुण व 10 दोषों का वर्णन है।
- नाट्यशास्त्रानुसार 14 मन्वन्तरों की समाप्ति – कल्प
- राजतरांगिणी – 8 तरग, शान्त रस,
- . ऋतु संहार – 6 सर्ग
- वक्रोति जीवितम् – 4 उन्मेष (10 उतरार्द्ध 11वीं पूर्वाध)
- शुल्व सूत्रों का विषय– वेदीनिर्माण
- उत्तर रामचरित के तीसरे अंक का नाम– छायाङ्क
- रामायण किस ग्रन्थ का नाम है– योग वाशिष्ठ रामायण
- बाल्मीकीय रामायण कया संस्थया शोधपूर्ण प्रकाशितं – ओरिएण्टल इन्सटीच्यूट, बरोदा
- महाभारतस्य आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशन– भण्डाकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्सटीच्यूट पुणे बी.ओ.आर.आई. पुणे
- राजधर्म पर्व महा0 के किस पर्व का अंग है– शान्ति पर्व
- 'विष्णुसहस्त्रनाम स्तोत्र' महाभाराते कस्मिन् पर्वणि– अनुशासन पर्व में
- उत्तररामचरितानुसार राम के अश्वमेध यज्ञ को करवाने वाला ऋषि– वामदेव ।
- पत्र्चनली वर्णन नैषध के किस सर्ग में है– 13 वे

साहित्य सामान्य ज्ञान

- महाकवि कालिदास की उपाधि क्या है– दीपशिखा कालिदास
- महाकवि भारवि की उपाधि क्या है– आतपत्र भारवि
- 'राजानक' उपाधि है– मम्मटाचार्य
- बाण की उपाधि क्या है – तुरंग बाण
- 'अग्निमित्र' उपाधिधारी कौन है– भास
- 'माघ' की उपाधि क्या है – घण्टामाघ
- 'पदवाक्य प्रमाणज्ञः कः – भवभूति
- 'आदि शाब्दिक' उपाधिधारी कः– शाकटायन

- त्रिजटा किसकी पत्नी थी– विभीषण की
- रावण का मन्त्रि कौन था– माल्यवान
- दशरथ के पिता का नाम – राजा अज
- भरत की पत्नी का नाम – माण्डवी
- माण्डवी के पिता का नाम– क्षीरध्वज
- जनक का मूल नाम – क्षीरध्वज
- लक्ष्मण की पत्नी का नाम– उर्मिला पुत्री क्षीरध्वज जनक
- अंगद किस का पुत्र था– बाली का माता–तारा
- जाम्बवत् कौन था– सुग्रीव का महामन्त्री
- राम के ज्येष्ठ पुत्र का नाम– कुश
- लक्ष्मण किसके अवतार थे– शेषावतार
- जटायु किस पर्वत पर रहता था– प्रस्रवण
- मयदानव की पुत्री– मंदोदरी
- यज्ञ के भेद– पांच– भू–नृ–देव–पितृ–अतिथि
- हिन्दू धर्म में कितने संस्कार है 16 संस्कार गृहय सूत्रों में वर्णित
- सुनाम कौन था– घृतराष्ट्र का एक पुत्र
- 'विरुपाक्ष' किसे कहते हैं– भगवान् शंकर
- रुद्र कितने हैं– ग्यारह
- नाटक में कितनी संन्धि होती है– पांच
- नाटक में नायक के प्रकार– धीरोधात, धोरीद्धत, धीरललित, धीरप्रशांत
- छन्द में कितने प्रकार के गण हैं– आठ
- मात्रिक छन्दों में कितने गण हैं– पाँच
- अनुष्टुप् छन्द में कितने अक्षर है– 8
- शिखरिण छन्द में कितने अक्षर है– 17
- मालिनी छन्द में कितने अक्षर है–15
- स्रग्धरा छन्द में कितने अक्षर है–21
- शार्दूलविक्रीडितं छन्द में कितने अक्षर है–19
- इन्द्रवज्रा छन्द में कितने अक्षर है– 11

- उपेन्द्र वज्रा छन्द में कितने अक्षर है–11
- तोटक छन्द में कितने अक्षर है– 12
- हरिणी छन्द में कितने अक्षर है– 17
- आर्या छन्द में कितने अक्षर है– 18 व दूसरे पाद में 15
- उपजाति छन्द में कितने अक्षर है–11
- मालभारिणी छन्द में कितने अक्षर है–11
- द्रूत विलम्बित छन्द में कितने अक्षर है–12
- मन्दाक्रान्ता छन्द में कितने अक्षर है– 17
- वसन्ततिलका छन्द में कितने अक्षर है– 14
- भोजन में कितने रस हैं– 6
- ज्योतिष शास्त्र में कितने नक्षत्र हैं– 28
- संस्कृत में 1 घण्टे का क्या कहते है– होरा
- शनि एक राशि में कितने समय तक रहता है– अढाई वर्ष
- सूर्य को फारसी में क्या कहते हैं– आफताब
- चाँद को फारसी में क्या कहते हैं– मेहताब
- नक्षत्र किसे कहते है– तारों के समूह को
- नाट्य शास्त्र का दूसरा नाम– साहस्त्री
- नाट्य शास्त्र के लेखक–भरतमुनि
- हिन्दी वर्णमाला में कितने वर्ण हैं– 44 वर्ण
- सिखों के अन्तिम गुरू– गुरू गोबिन्द सिहं
- लक्ष्मण के कितने पुत्र थे– चन्द्र व केतु
- लक्ष्मणं कः वैद्य पुनरुज्जिवितवान्– सुषेण वैद्य
- दशरथ की पुत्री व जामाता– शान्ता व ऋष्यंश्रृग
- शत्रुघ्न की पत्नी का नाम – श्रुतकीर्ति
- रावण की माता व पिता– कैकशी व विश्रवा
- वेदव्यास की माता का नाम– सत्यवती, पिता– पराशर
- दुर्योधन की पत्नी का नाम– भानुमति
- दुर्योधन की बहन का नाम – दुःशाला

- भीम के पुत्र का नाम – घटोत्कच
- श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र– प्रद्युम्न
- वभ्रुवाहन की माता व पिता–चित्रंगदा व अर्जुन
- अज्ञातवास में द्रौपदी का नाम – सैरन्ध्री
- अज्ञातवास में अर्जुन का नाम– वृहन्नला
- अज्ञातवास में भीम का नाम – वल्लभ
- अज्ञातवास में युधिष्ठिर का नाम– कंक
- महाभारते भीष्म कतमे दिवसे वाणैः क्षतः– दशवे दिवसे
- शची–इन्द्र के पुत्र का नाम– जयन्त
- इन्द्रजित कः – मेघनाद
- शल्य किसका मामा था– नकुल व सहदेव का
- नकुल व सहदेव की माता– माद्री
- इन्द्र वाहनः कः – ऐरावत हाथी
- हनुमान की माता व पिता– अंजना व पवन
- वाल्मीकि की पत्नी – कृतवती
- 'शतसाहत्री संहिता' क्या है– महाभारत
- श्रीकृष्ण के पितामह– शूरसेन
- शूरसेन की पुत्री व पुत्र– कुन्ती व वासुदेव
- कंस का पिता उग्रसेन
- इक्ष्वाकु वंश का राजगुरु– वाशिष्ठ
- गान्धारी कस्य पुत्री– सुबला
- महाभारत में यक्ष ने युधिष्ठिर से कितने प्रश्न किए – 72 प्रश्न
- सर्पयज्ञ किसने किया– परीक्षित के पुत्र जन्मेजय ने
- चन्द्रमा एक राशि में कितने समय तक रहता है– 30 घटी
- पाण्डवों की मृत्यु के बाद राजा– परीक्षित, पुत्र अभिमन्यु व माता उतरा
- अभिमन्यु की माता व पिता– सुभद्रा व अर्जुन
- वाल्मीकि का मूल नाम – रत्नाकर
- राम पुत्र लव की राजधानी– श्रीवस्ती

- ययाति के पुत्र का नाम– पुरु+माता शर्मिष्ठा
- जरासंध कंस का क्या लगता था– ससुर
- लवणासुर को किसने मारा– शत्रुघ्न
- राम के धनुष का नाम– कोदण्ड
- शिव के धनुष का नाम– पिनाक
- अर्जुन के धनुष का नाम – गाण्डीव
- को गुडाकेश के धनुष का नाम– अर्जुन
- परशुराम ने किस पर्वत पर तपस्या की– महेन्द्र पर्वत
- भरत का वास्तविक नाम– सर्वदमन
- चार युगों के बीत जाने को क्या कहते हैं– मन्वन्तर चतुर्युगी
- नाट्यशास्त्रानुसार चार युगों की आवृति कितने बार होती हैं– 71 बार
- सतयुग को कौन से मन्बन्तर के नाम से जानते हैं– स्वाम्भुव
- 'नपुंसकों भव' अर्जुनं का शप्तवती– उर्वशी
- पाड़वों के आज्ञातवास का आधार पर्व– विराट् पर्व
- अज्ञातवास में द्रोपदी का नाम– सैरन्ध्री, उपाधि–मालिनी
- अज्ञातवास में युधिष्ठिर का नाम– कंक
- अज्ञातवास में भीम का नाम वल्लभ
- अज्ञातवास में अजुर्न का नाम वृहन्नला
- अज्ञातवास में नकुल का नाम ग्रनिथक
- अज्ञातवास में सहदेव का नाम अरिष्टनेमि

रस	स्थाई भाव	देवता
• श्रृंगार	रति	विष्णु
• हास्य	हास	विष्णु
• करुण	शोक	यम
• रौद्र	क्रौध	रुद्र
• वीर	उत्साह	इन्द्र
• भयानक	भय	काल
• वीभत्स	जुगुप्सा	महाकाल

- अद्भूत विस्मय ब्रह्म
- शान्त शम श्री नारायण
- वत्सल प्रेम लोक माताएं
- काव्य गुण कितने हैं मुख्य तीन, प्रसाद, माधुर्य, ओज
- रीति – वैदर्भी, गौडी
- 'वाणी बाणोबभूव किसने कहा– गोवर्धनाचार्य
- बौद्ध साहित्य की भाषा– पाली
- 'पीयूष वर्ष' उपाधिधारी– जयदेव
- अभिनव गुप्ताचार्य का निवास क्षेत्र– काश्मीर
- भवभूति का मूल नाम– श्री कण्ठ
- अलंकार सम्प्रदाय के प्रवर्तक– भामह
- रीति– वामन
- कादम्बरी की काव्य विद्या– कथा
- हर्षचरितम्– आख्यायिका
- वहनाट्क जो अग्नि परीक्षा में नही जला– स्वप्नवासवदत्तम
- विश्वामित्र का पिता – ऋषि मधुच्छन्द
- महाकवि माघ का निवास क्षेत्र– सौराष्ट्र
- याज्ञवल्क्य की पत्नी का नाम– मैत्रेयी व गार्गी
- राजशेखर की विदुषी पत्नी का नाम– अवन्ति सुन्दरी
- 120 वर्षों तक जीने वाले दार्शनिक– रामानुजाचार्य
- विश्वामित्र का मूल नाम– विश्वरथ
- जय को भारत का रूप देने वाले– वैशम्पायन
- फिट् सूत्रों के कर्त्ता – शंतनु
- शूद्रक की मृत्यु का कारण– अग्नि प्रवेश
- भारत को महाभारत का रूप देने वाले – सौति
- गीत गोबिन्द के भक्त राजा– उत्कल नरेश कामदेव
- सूर्य का नक्षत्र परिवर्तन का समय – 13 दिन
- चन्द्रमा की सम्पूर्ण कलाएं– 16

- वात्स्यायन का मूल नाम– मल्लनाग
- कौटिल्य कौन था– चाणक्य
- चाणक्य सूत्रों की कुल संख्या– 571
- आगमों की कुल संख्या– 64
- दुर्गा सप्तशती के वक्ता– सुमेधा ऋषि
- सोना बनाने की प्रक्रिया कहाँ वर्णित है– मृडानी तन्त्र
- ऋषि भारद्वाज के पिता का नाम– वृहस्पति
- श्री हर्षस्य माता पिता – मामल्ल देवी व श्री हीर
- आश्रम–ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास
- पंचाग– तिथि, नक्षण, योग, वार, करण
- अवताराः कति दश, प्रथमावतार– मत्स्यावतार
- अश्वघोष का अपर नाम – आर्य भदन्त
- अश्वघोष का जन्म स्थान– साकेत आयोध्या
- भारवि के माता–पिता– सुशीला व श्रीधर
- भारवि का निवास स्थान– धारानगरी
- माघ के पिता का नाम– श्री दत्तक
- श्री हर्ष के आश्रयदाता– जयन्त चन्द्र (जयचन्द)
- बाण के पिता का नाम– चित्रभानु
- बाण पुत्र का नाम – पुलिन्द भट्ट (भूषण भट्ट)
- किरातार्जुनीये किरातः कः– शिव
- जयदेव का निवास क्षेत्र– बंगाल
- रुय्यक के शिष्य का नाम – मंखक
- सिद्धान्त कौमुदी की बाल मनोरमा टीका के कर्त्ता– वासुदेव दीक्षित
- भारत का पंचाग किस संवत पर आधारित है– शक् संवत
- चाणक्य का पूरा नाम– विष्णु गुप्त चाणक्य
- भास्कराचार्य से सम्बन्धित विषय– ज्योतिष
- शान्त रस को सर्वश्रेष्ठ मानने वाले– भट्टतौत
- गोरखनाथ के गुरु– मत्स्येन्द्रनाथ

- ध्वनि सिद्धान्त के प्रथम खण्डन कर्त्ता– महिम भट्ट
- अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन के अध्यात्मिक अध्यक्षीय भाषण दने वाले – शाली ग्राम शास्त्री
- जैन धर्म में शलाका पुरुषों की कुल संख्या – 63
- स.सा. में गर्वपूण उक्तियों के कर्त्ता– जगन्नाथ
- स्वामी विवेकानन्द का मूल नाम– नरेन्द्र नाथ
- बुद्ध (तथागत) का समाधिस्थल – कुशी नारा कुशीनगर
- छन्द शास्त्र में मात्रा गणना को क्या कहते है – जाति
- छन्द शास्त्र में त्रिक क्या है– गण
- पाद के अन्त में क्या लगता है– यति
- प्रहेलिका अलंकारों की किस कोटि में है– चित्रालंकार
- लॉं कानून ग्रन्थ के रचनाकार – प्लेटो
- छन्द शास्त्र के प्रवर्तक– पिंगलाचार्य
- उद्भट्ट किसका सेनापति था– काश्मीर नरेश जयापीड का
- उद्भट्ट का वेतन – एक लाख दीनार प्रतिदिन
- 'लोल्लट' कहाँ के निवासी थे– काश्मीर के
- काव्य शास्त्र में कितने सम्प्रदाय हैं– 6
- काव्य शास्त्र में सर्व प्राचीन सम्प्रदाय– रस
- रस साम्प्रदाय के प्रवर्तक– भरत मुनि
- गौतम बुद्ध की पत्नी– यशोदरा
- कति रसवादाः – चार 1. रसोत्पत्तिवाद (भटलोलट) 2. अनुमितिवाद (शंकुक) भुक्तिवाद (भट्टनायक) अभिव्यक्तिवाद (अभिनव गुप्त)
- संचारी भावाः कार्त – 33
- पद दोष– 14 मात्र
- काव्य दोष – 16 मात्र
- वाक्य दोष – 13 मात्र
- रस दोष– 13
- अर्थ दोष– 23

- लक्षणस्य लक्षण किम्– असाधारणधर्म वचनम्
- प्रलयकाल में मनु की नौका कहाँ रुकी – मनोख सर्पण
- प्रलयकाल में मनु की सहायता किसने की – मत्स्य ने
- भारवि का प्रिय छन्द– वंशस्थ।
- बृहस्पति की पत्नी –तारा
- साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के पिता का नाम– चन्द्रशेखर
- साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ के पुत्र का नाम–अनन्त दास
- विश्वनाथस्य महाकाव्य– राघव विलासे
- विश्वनाथस्य सम्प्रदाय – वैष्णव
- विश्वनाथस्य निवास– कलिंग
- साहित्य दर्पण का काल– 1354 ई. 10 परिच्छेद
- विश्वनाथानुसार काव्य प्रयोजन– धमार्थ – काम– मोक्ष– चतुवर्ग प्राप्ति
- काव्य लक्षणम्– वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
- मम्मट – तददोषौशब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि।
- कुन्तक– वक्रोति काव्यं जीवितम्
- आनन्द वर्धन– काव्यस्यात्मा ध्वनिः
- जगन्नाथ – रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
- विश्वनाथ का रस लक्षण– विभावेनानुभावेन व्यक्तः संचारिणा तथा रसतामेति रत्यादि स्थायिभावा सचेतसाम् ।
- भरत मुनि का मूल सूत्र – विभावानुभावसंचारिसंयोगाद्रस निष्पतिः
- भारते कस्मिन् ग्रामे सर्वेजनाः संस्कृते वदन्ति– मट्टूर ग्रामे
- शकुतला की अंगूठी किस तीर्थ में गिरी– शची तीर्थ
- कालिदास महोत्सव कहाँ होता है– उज्जैन नगरे
- चैतन्य महाप्रभु कहाँ के निवासी– बंगाल
- 'कालिदासो बिलास' किस का कथन है– जयदेव
- पंचामृते – दुग्ध, दधि, घृत, मघु, शर्करा
- निघण्टु के रचयिता– काश्यप,प्रजापति।
- गौतम बुद्ध का वास्तविक नाम– सिद्धार्थ

- चार धाम– रामेश्वर, बद्री, द्वारका व पुरी
- भारवि का प्रिय छन्द– वंशस्थ
- 'पक्षिल स्वामी' का अपर नाम – वात्स्यायन
- ऐरावत हाथी की पत्नी– अभ्रमु
- इन्द्र के घोड़े का नाम– उच्चैः श्रवा
- द्रोणाचार्य के माता व पिता – अप्सरा घृताची व ऋषि भारद्वाज
- लाक्षागृह का निर्माण किसने किया– पुरोचन ने
- विष्णु का वाहन क्या है– पक्षिराज गरुड़
- लक्ष्मी का वाहन क्या है– उलूक
- सरस्वती का वाहन क्या है–हंस
- शनि का वाहन क्या है–कपोत
- गणेश का वाहन क्या है–मूषक
- कार्तिकेय का वाहन क्या है–मयूर
- शिव का वाहन क्या है– बैल
- परशुराम की माता व पिता– रेणुका व जमदग्नि
- भवभूति की माता का नाम – जतुकर्णी
- बाण के आश्रय दाता राजा– हर्षवर्धन
- दमयन्ती कहाँ की राजकुमारी थी– कुण्डिनपुर
- पंचतन्त्र में तन्त्र शब्द का क्या अर्थ है– शास्त्र
- भू दान यज्ञकर्त्ता कौन थे– विनोवा भावे
- भामती टीका के कर्त्ता– वाचस्पति मिश्र
- वाचस्पति मिश्र की पत्नी– भामती
- साहित्य दर्पण की पुष्पिका में विश्वनाथ के तीन विशेषण–
- ध्वनि सम्प्रदाय के प्रर्वतक– आनन्द वर्धन (950–1100)
- त्रिपुर सुन्दरी को प्रसन्न करने के लिए श्री हर्ष ने मन्त्र – चिन्तामणि
- श्री हर्ष ने अपनी हार का बदला किससे लिया – उदयनाचार्य से खण्डन खण्ड खाद्य ग्रन्थ लिखकर
- अभिनव भारति टीका कर्त्ता – अभिनवगुप्त (950 ई. से 1030 ई. तक

- अम्बिका दत्त व्यास– 1850–1900 तक
- अश्व घोष– 1–50 ई.
- भारवि किसके सभा कवि थे– विष्णु वर्धन के
- भवभूति के अश्रयदाता– राजा यशोवर्मा
- निरुक्त शास्त्र के प्रथमाचार्य– शाकपूणि
- भास्कानुसार ऋचाएं – 3 प्रकार– परोक्ष+कृत– प्रत्यक्षकृत व आध्यात्मिक
- ज्योतिष में नपुंसक ग्रह– बुध
- एहोल में प्राप्त शिलालेख में वर्णित कवि– कालिदास व भारवि
- वामन के आश्रय दाता– काश्मीर नरेश जयादित्य
- महाभारत के युद्ध में प्रथम शंखनाद कर्त्ता– भीष्म
- 'इन्द्र शत्रु वंर्धस्य' मन्त्र के विनियोग कर्त्ता– कल्पम अध्वर्यु
- उत्तर राम चरित में प्रदर्शित चित्रवीथी प्रथमांके निर्माता चित्रकारः– अर्जुन
- अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की – इन्द्रकील
- चिरन्जीवी कितने हैं– सात
- आध्यात्मिक देवता के सूक्त– मात्र तीन वाक् सूक्त–हिंरण्यगर्भ– नासदीय
- वेदों का प्रथमांग्लनुवादक– ग्रिफिथ
- किस उपनिषद पर शंकर के दो भाष्य है– केनोपनिषद पर
- एकलव्य के पिता का नाम– निषादराज हिरण्यधनुः
- मेघदूते कालिदासः कं दार्शनिकं व्यंजनया व्यनक्ति – दिङ्नाग
- 'इन्द्रधनुष महोत्सव' कस्मिन काले पाल्यते– वर्षायाः अन्ते
- नागानन्दस्य नाटकस्य नायकः कः – जीमूत वाहनः
- रत्नावली नाटिका का आधार ग्रन्थ– वृहत्कथा
- रत्नावली के नाटिका के लेखक हर्षवर्धन का नामान्तर– शीलादित्य
- मुद्राराक्षसे पाटलिपुत्रस्य अन्यत नाम किं – कुसुम पुरम्
- मुद्राराक्षसे पाटलिपुत्रस्य अन्यत् नाम किं – कुसुमपुरम्
- मुद्राराक्षसे चाणक्य चन्द्रगुप्तं किं कथयन् सम्बोधयति– वृषलः
- मुद्राराक्षसे महानन्दस्य मन्त्री राक्षसः कस्याः जातेः आसीत – ब्राह्मण
- वर्षर्तोः वर्णनं मृच्छकटिकस्य कस्मिन् अंके– पंचमे

- मृच्छकटिके पालकस्य हत्यायाः पश्चात् आर्यकेन चारुत्ताय का नगरी प्रदत्ता– कुशावती
- 'पुराकविनां गणनाप्रसंगे– कस्ये उक्तिः – हरे (हरिहारावली में)
- अभिज्ञान के आरम्भ में किस ऋतु का वर्णन है– ग्रीष्मस्य
- विक्रमोर्वशीये विदूषकस्य नाम किं – माणवक
- विक्रमोर्वशीये पुरुरवा के रथ का नाम– सोमदत्त
- मालविकाग्निमित्र का प्रथमाभिनय किस अवसर हुआ– वसन्तोत्सव पर
- मालविकाग्निमित्र उदयन की राजधानी – कौशाम्बी
- महाभारते नामकेतु इति नाम कस्य– दुर्योधन
- भासनाटक चक्रेऽपि––– न पावकः कस्य उक्ति– राजशेखर
- कीचक वध किस उत्सव के दौरान हुआ था– वसन्तोत्सव
- 'विष्णु सहस्त्रनाम सतोत्र' कुतः गृहीतः– महाभारतात
- विष्णु पुराणे– 126 अध्याय 23000 श्लोक व छः अंश है।
- मार्कण्डेय पुराणे– 2 खण्डे. 207 अध्याय व 18000 श्लोक
- जयकाव्य 24000 श्लोकके रचयिता– कृष्ण द्वैपायन
- महाभारत 100000 श्लोको का रुप देने वाले – सौति
- वन में पाण्डवों का पुरोहित ऋषि– धौम्य ऋषि
- लाक्षागृह का निर्माण कर्त्ता– पुरोचन
- भगदत वधकर्त्ता– अर्जुन
- शान्तनु के पिता का नाम– प्रतीप
- युयुधान किसका उपनाम है– सात्यकि का
- जयद्रथ की ध्वजा का अंकित चिन्ह– वराह
- अर्जुन की ध्वजा पर अंकित चिन्ह– कपि
- अर्जुन द्वारा उलूपी से उत्पन्न पुत्र– इरावान!
- अर्जुन द्वारा नागकन्या चित्रांगदा से उत्पन्न पुत्र– बभ्रुवाहन
- अर्जुन ने चाक्षुषी विद्या किससे सीखी – चित्ररथ गन्धर्व से
- शकुनि के पुत्र उलूक का वध करने किया– सहदेव ने
- बकासुर किस नगरी में रहता था– एकचक्रा नगरी
- एकलव्य के पिता का नाम– हिरण्य धनुष

- पाण्डव पक्ष से लड़ने वाले धृतकेतु के पिता– शिशुपाल
- उत्तमौजा किस नगर के यौद्धाओं के लिए प्रयुक्त – पांचाल
- शिखण्डी का वध किसने किया– अश्वत्थामा ने
- द्रोपदी, नकुल, सहदेव का हरणकर्त्ता राक्षस– जटासुर
- वनवास में पाण्डवों का अन्तिम निवास क्षेत्र– द्वैतवन (कुरुक्षेत्र में)
- विराट् की पत्नी का नाम– सुदेशणा
- भगदत्त द्वारा छोड़ा गया नारायण अस्त्र कृष्ण को लगकर किस वस्तु में परिणत हुआ– वैजयन्ती माला
- कृष्ण ने यादवों के विनाश का समाचार किसके हाथ हस्तिनापुर भेजा– दारुक के
- यदु विनाशक मूसल किसके पेट से निकला था– साम्ब प्रद्युम्न के

साहित्यिक सूक्तियां

- 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' – हितोपदेश
- 'रम्या रामायणी कथा' – नलचम्पू
- 'निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य– हर्षचरित (बाण)
- 'नारिकेल फल सम्मितं ––– मल्लिनाथ
- 'बाण कवीनामिह चक्रवर्ती' सोड्ढल
- 'पंचबाणस्तु बाणः' जयदेव
- बाणस्तु पंचाननः' श्रीचन्द्र देव
- शिशुपाल वध– महीयांस प्रकृत्या मितभाषिण। तृप्तिर्योगः परेणापि महिम्ना न महात्मानाम। विपक्षमखिलीकृत्य प्रतिष्ठा खलु सुदुर्लभा। उपकर्त्रिणा सन्धिर्म मित्रेणोपकारिणा। श्रेयसि केन तृप्यते।
- किरातार्जुनीयम्– हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः। न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः। स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्। वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः, अहो दुरुन्ता बलवद्ध विरोधिता। सहसा विदधीत न क्रियाम विवके परमापदां पदम्। गुरुतांनयन्ति हि गुणाः किं सहन्ति। सुदुर्लभाः सर्वमनोरमाः गिरः।
- कुमार सम्भवे– एकोहि दोषो गुण सन्निपाते। न धर्म वृद्धेषु वयः समीक्ष्यते । न रत्नमनिवष्यति । न धर्म वृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। न रत्नमनिवष्यति मृग्यते हि तत्, प्रियेषु

सौभाग्यफला हि चारुता । शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्। मनोरथानां गतिर्न विद्यते। शशिना सह याति कौमुदी ।

- रघुवंश– पदं हि सर्वत्र गुणै र्निधीयते। तेजषांहि न वयः समीक्ष्यते।

- अभिज्ञान शाकुन्तल – भति स्नेह पाप शंकी। अर्थो कि हन्या परकीय एव। काम स्वतां पश्यति। किमिव हि मधुराणां मण्डनं न आकृतिनाय्। न प्रभातरलं ज्यातिरुदेति वसुधात लात्। भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। गुर्वपि आशावन्धः विरह दुखं साहयति।
- मुद्राराक्षस– अत्यादरः शंकनीयः
- उत्तरराचरितम् – अपि ग्रावा रोदितिऽपि दलति बज्रस्य हृदयम् 'तीर्थोदकं च वहिनश्च नाव्यतः शुद्धियर्हतः । सतां सद्भिः सह संग कथमपि पुण्येन भवति। वितरति गुरू प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे। एको रस करुण एव निमित भेदात गुणाः पूजास्थानं न लिंग न च वयः । ते हि नो दिवसा गता ।
- मृच्छकटिकम् भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति च। निस्तेजाः परिभूयते। स्वे गृहे कुक्कुरोऽपि तावत् चण्डो भवति। वहुदोषा हि शर्वरी । सर्वत्रार्जवं शोभते।
- स्वप्नवासवदतम्– अनतिक्रमणियो हि विधिः । कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले। चक्रार पंक्तिरिव गच्छति भाग्य पंक्ति, दुःख व्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः । दुःखं न्यासस्य रक्षणम्, स्त्री स्वभावस्तु कातरः।
- महाभारत – अहिंसा परमो धर्मः।
- पंचतन्त्रम्– वचस्तत्र प्रयोक्तव्यम् यत्रोचितं लभते फलम्, विद्वान सर्वत्र पूज्यते।
- नीतिशतक– विद्याविहीनः पशुः । वाग्भूषणं भूषणम। न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः । विधि रहो वलवान इति मे मति। सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ति।
- भागवत– विधि रहो। बलवानिति में मतिः
- भाष्य– ब्राह्मणेन निष्कारणो षडंगों
- ईशावस्योपनिषद– मा गृध कस्यस्विद्धनम् विद्ययाऽमृतं अश्नुते। कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
- कठोपनिषद– सह नावतु सह नौ भुनक्तु ।
- मुण्डकोपनिषद – सत्यमेव जयते। भिद्यते हृदय गन्थिः। द्वा सुपर्णा सयुजा।

श्रीमद् भगवद् गीता

- श्रीमद्भगवद् गीता के लेखक– वेदव्यास

- श्रीमद्भगवद् गीता कुल अध्याय – 18
- गीता के प्रथम अध्याय का नाम– अर्जुन विषाद योग
- गीता महाभारत के किस पर्व से गृहीत – भीष्म पर्व
- संस्कृत वाडमय में कुल गीताग्रन्थ– 36
- गीता का प्रथम श्लोक– धर्मक्षेत्रे
- गीता का अन्तिम श्लोक– यत्र योगेश्वरो
- गीता के किस अध्याय में अधिक श्लोक – 18 वे में 78 श्लोक
- गीता के किस अध्याय में सबसे कम श्लोक– 15 वें में 20 श्लोक
- गीता में कुल श्लोक – 700 है
- गीता पर माधवाचार्य का भाष्य– गीता भाष्य
- गीतानुसार युद्ध में प्रथम शंखनाद कर्त्ता– भीष्म
- कृष्ण का शंख – पांचजन्य
- युधिष्ठिर का शंख– अनन्त विजय
- भीम का शंख – पौण्ड्र
- अर्जुन का शंख– देवदत्त
- नकुल का शंख – सुघोष
- सहदेव का शंख– मणिपुष्पक
- पाण्डव सेना का व्यूह रचयिता– धृष्टधुम्न
- 'चातुर्वर्ण्यमया सृष्टं चौथा अध्याय
- 'सर्वदेवमयी गीता' कहाँ से गृहीत है– स्कन्द ग्रन्थ
- 'गीता सुगीता कर्त्तव्या' – महाभारत
- 'सर्वशास्त्र मयी गीता' – महाभारत
- कौरव सेना का परिमाण– 13 अक्षौहिणी
- पाण्डव सेना का परिमाण– 7 अक्षोहिणी
- 'गीता प्रवचन' व्याख्या – विनोवा भावे
- आनन्द गीता' – अरविन्द
- 'गीता की प्रथमाग्ल व्याख्याकार– श्रीमती एनीवेसेन्ट
- गीता का प्रथमांग्लानुवादक– विहकिन्स

- गीता के पश्चिम संस्करण गुजरात संस्करण के अनुसार श्लोक – 742
- गीता पर उपलब्ध भाष्य– आचार्य शंकर का
- अभिनव गृप्त कृत गीता भाष्य– गीतार्थ संग्रह
- गीता पर निम्बार्क भाष्य– निम्बार्काचार्य
- गीता पर मध्वभाष्य– आनन्द तीर्थ
- गीता पर पैशाचभाष्य– हनुमत्पण्डित
- गीता पर द्वैतभाष्य– विष्णु स्वामी
- गीता पर शांकर भाष्य– शंकराचार्य
- वासवी टीका– वसुगुप्त
- गीता पर गीता व्याख्या– आनन्द वर्धन , अभिनव गुप्त
- गीतार्थ संग्रह– यामुनाचार्य
- आनन्द वर्धिनी टीका– आनन्द वर्धन
- सर्वतोभद्र व्याख्या– रामकण्ठ
- गीता की सर्वप्रथम भक्तिपरक व्याख्या कर्त्ता– रामानुजाचार्य
- शंकर से पूर्व गीता पर भाष्यकार– बोधायन भाष्य अनुपलब्ध
- भगवान दास के साथ मिलकर गीता की प्रथमाग्लव्याख्यात्री– एनोवसेंट
- शैव व मीमांशक मत में गीता का प्रमुख प्रतिपा्दित सिद्धान्त – ज्ञान कर्म समुच्य सिद्धान्त।
- गीता के अनुसार कर्म के कारण– अधिष्ठान, 2 कर्त्ता, 3 करण, 4 विभिन्न प्रकार की चेष्टाए 5 दैव
- 'गीता के अनुवाद के विना अंग्रेजी साहित्य अधूरा है– एडविन अरनाल्ड
- 'उपनिषदों में ही मुझे शान्ति मिली है– एडविन अरनाल्ड
- 1954 में जापान पर बमबारी के समय की घटना पर किस यूरोपीय वैज्ञानिक ने गीता के (कालोऽस्मि लोकक्षय) आदि दो श्लोकों का स्मरण किया था– सुषेन हावर
- प्रस्थानत्रयी में गीता किस प्रस्थान के अर्न्तगत है – स्मृति प्रस्थान
- गीता के विषय में कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, पुस्तकों के रचयिता– स्वामी विवेकानन्द
- गीता पर उपलब्ध प्रथम भाष्य किसका है– शंकराचार्य

- गीतोपदेश पश्चात् महाभारत में गीता सदृश उपदेश का क्या नाम है– अनुगीता
- शंकराचार्य ने अपने भाष्य में किस अध्याय पर व्याख्या नहीं लिखी –प्रथम अध्याय पर
- वल्लभ सम्प्रदाय में गीता की दो टीकाएं– तत्वदीपिका 2. अमृततरंगिणी

पौराणिक साहित

- पुराण कितने हैं– 18
- पुराणों का लेखक– वेद व्यास (सम्भवतः)
- प्रथम व अन्तिम पुराण – मत्स्य व स्कन्द पुराण
- पुराणों में भगवत् का न0 3 पर
- विष्णु पुराण में कुल अध्याय– 126
- श्रीमद् भागवत पुराण के संवादक– शुक परीक्षित
- पुराणों में मुनि त्रयः – व्यास, पराशर, शुकदेव
- मत्स्य पुराण के रचयिता– जिनसेन
- पुराणानुसार वाशिष्ठ के भाई– अगस्त्य
- पौराणिक भूगोल के अनुसार द्वीप – 7
- प्रलय कितने प्रकार की है– नैमितिक, प्राकृतिक, आत्यन्तिक, नित्य
- दिग्गज– पूर्वादिक्रम से ऐरावत, पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अंजन, पुष्पदन्त, सार्वभौम व सुप्रतीक
- पराशरस्य पितुर्नाम किम् ? – शक्तिः
- सरस्वती की वीणा का नाम– कच्छपी
- नारद की वीणा का नाम– महती
- शिव के धनुष का नाम– अजगवम्
- अजामिलोपाख्यान कस्मिन पुराणे– भागवत पुराणे
- चतुः पंचाशत् पुराणानि चेत तेषां त्रिधा विभाजनं कीदृशं – 18 पुराण 18 उपपुराण 18 औप पुराण
- सप्तशती पाठ– चण्डीपाठ कस्य पुराणस्य भाग– मार्कण्डय पुराण
- कस्मिन पुराणे कुरुक्षेत्रस्य महात्म्यं सर्वाधिकमस्ति– वामन पुराणे

- विष्णु पुराणे विभाजनस्य एककं किम् ? अंशाः
- पुराणस्य पंचलक्षणं – सर्गश्च प्रतिसर्गश्च

सामान्य ज्ञान

- भारत की पहली फिल्म– राजा हरिश्चन्द्र
- भारत की पहली बोलती फिल्म– आलम आरा
- संगीत शास्त्र में श्रुतियाँ– 22 मात्र
- राष्ट्रीय खेल दिवस– 29 ध्यान चन्द जन्म दिवस
- शहीद दिवस 30 जनवरी महात्मा गांधी मृत्यु दिवस
- वायु सेना का आदर्श वाक्य– नभः स्पर्श दीप्तम्
- जल सेना– शं नो वरुणः
- डाक विभाग– सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय
- आकाशवाणी– सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय
- दूरदर्शन– सत्यं शिवं सुन्दरम्
- वीमा– योगक्षेमं वहाम्यहम
- टेलीफोन– अहर्निशं सेवामहे
- भारतीय खाद्य निगम– सुविनियोगाद् समृद्धिः
- लोक सभा में लिखित आदर्श वाक्य– धर्मचक्र प्रवर्तनाय
- अग्नि शमन सेवा– त्राणाय सेवामहे
- एक रूपए के नोट पर हस्ताक्षर कर्त्ता– वित्त सचिव
- बाकी के नोटों पर हस्ताक्षर कत्ता– गवर्नर ऑफ रिजर्व बैंक
- राष्ट्रीय विज्ञान दिवस – 28 फरवरी
- भारत में कुल पिन कोड– आठ
- विवाह के अवसर पर किस देश में रामायण मंचन होता है– थाईलैंड
- संस्कृत आयोग कब बैठा– अक्तूबर 1956 में
- संस्कृत आयोग के अध्यक्ष– सुनीति कुमार चैटर्जी
- नेहरु पुरस्कार किस क्षेत्र में दिया जाता है– विश्व शान्ति के लिए

- राज्य सभा में कितने सदस्य हैं– 250
- लोक सभा में कितने सदस्य– 545
- हरियाणा विद्यान सभा में कितने सदस्य – 90
- कांग्रेस की स्थापना कब व किसने की– 1885 सर ए.ओ. मयूम ने
- कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन कहाँ हुआ– मुम्बई में
- भारत में प्रथम बार रेल कब व कहाँ चली– 1853 में बम्बई व थाना के बीच
- भारत में गुरुदेव के नाम से विख्यात– रवीन्द्रनाथ टैगोर
- राष्ट्रगान को गाने में समय– 48 से 52 सैकिण्ड
- भारत में जल पोत निर्माण केन्द्र – विशाखापतनम
- भारत के प्रथम उपग्रह का नाम– आर्यभट्ट
- दशमलव की खोज किसने की– आर्यभट्ट ने
- आर्य भट्ट का विषय क्षेत्र– गणित
- भारत का प्रथम अन्तरिक्ष यात्री– राकेश शर्मा
- भारत की प्रथम अन्तरिक्ष महिला यात्री– कल्पना चावला करनाल
- विश्व का प्रथम चांद पर उतरने वाला – यूरि गागरिक रुस
- भाजपा कि स्थापना कब हुई 1977 में 1984 में कही पर
- भारत की पहली रंगीन फिल्म– कागज के फूल
- भारत की पहली संस्कृत फिल्म– आदि शंकराचार्य
- प्रथम संस्कृत फिल्म के नायक– सर्वदमन वैनर्जी
- भारतीय सेनायाः सर्वोच्च कमाण्डर कः' राष्ट्रपति
- उच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश– सुश्री लीला सेठ
- 'मृच्छकटिंक पर बनी संस्कृत फिल्म– उत्सव
- शून्य की खोजकर्त्ता– ब्रह्मगुप्त
- भारत की प्रथम महिला प्रधान मन्त्री– इन्दिरा गांधी
- विश्व की प्रथम महिला प्रधान मन्त्री– भण्डारनायके श्रीलंका
- भारत के प्रथम राष्ट्रपति– डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
- भारत के प्रथम प्रधान मंत्री – पं0 जवाहर लाल नेहरू
- भारत केप्रथम उपप्रधन मन्त्री– सरदार बल्लभ भाई पटेल

- कार्यकारी प्रधान मन्त्री– गुलजारी लाल नन्दा
- स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल– सी.राजगोपालाचारी
- स्वतन्त्र भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार– रविन्द्रनाथ टैगोर
- स्वतन्त्र भारत के प्रथम एवरेस्ट विजेता– तेन सिंह नोर्क
- भारत के प्रथम प्रमाणु विस्फोट– पोखरण 1974
- भारत के प्रथम महिला मन्त्री– राजकुमारी अमृत कौर
- भारत के प्रथम मुख्यमन्त्री– सुचेता कृपलानी यूपी
- भारत के प्रथम राज्यपाल – सरोजिनी नायडू
- भारत के प्रथम राजदूत– विजयालक्ष्मी पण्डित रूस
- भारत के प्रथम विश्व सुन्दरी– कुमारी रीता फारिया
- भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार महिजला – मदर टेरेसा
- ग्रैंडस्लैम विजेता– शकुन्तला देवी
- विश्व में सबसे ज्यादा गीत गाने वाली– लता मंगेशकर (भारत)
- भारत का राष्ट्रिय फल– आम
- भारत का राष्ट्रिय खेल– हाकी
- भारत का राष्ट्रिय भाषा– हिन्दी
- भारत का राष्ट्रिय फूल– कमल
- भारत का राष्ट्रिय पक्षी– मोर
- भारत का राष्ट्रिय जानवर – वाघ
- भारत की सबसे अधिक गीतों वाली फिल्म– इन्द्र सभा सन् 1933
- भारत का क्षेत्रफल– 32 लाख, 87 हजार, 263 वर्ग कि. मी.
- कलिंग की लडाई– 261 ई. पूर्व
- पानीपत की तीन लडाई– 1526,1556,1761
- बक्सर का युद्ध– 1764 में
- भारत पाक युद्ध– 1965 व 1971 में
- 'जय हिन्द' ये शब्द किसने कहे – सुभाष चन्द्र बोस
- करो या मरो – महात्मा गाँधी
- सरफरोशी की तमन्ना– इकबाल

- वन्दे मातरम् – बंकिम चन्द्र चटर्जी
- स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है– बाल गंगाधर तिलक
- इन्कलाब जिन्दाबाद– भगत सिंह
- सारे जहां से अच्छा– इकबाल
- जन–गण–मन अधिनायक– रवीन्द्रनाथ टैगौर
- भारत का प्रथम समाचार पत्र– इण्डिया गजट 1776 ई कलकता
- भारत का ऐसा प्रधान मंत्री जो एक दिन भी संसद नही गया– स्व. चौधरी चरण सिंह
- जिसकी मृत्यु विदेश में हुई – लाल बहादुर शास्त्री (रूस)
- भारत काऐसा राज्य जहाँ की राज्य भाषा अंग्रेजी है– नागालैण्ड
- भारत का ऐसा देश जहां पर एक भी मच्छर नहीं – फ्रांस
- जो गुलाम न हुआ हो– नेपाल
- जिसमें थियेटर नहीं – भूटान
- रात व दिन जिस दिन बराबर होते है 21 मार्च व 23 सितम्बर
- सबसे बड़ा दिन– 21 जून
- सबसे छोटा दिन 22 दिसम्बर
- प्रथम प्रमाणु बम से क्षतिग्रस्त– हिरोशिमा व नागासाकी (जापान) अमेरिका ने 17 जुलाई 1945 में
- वासकोडिगामा भारत कब आया– 1498 में
- ताजमहल लाल किला किसने बनवाया– शाहजहाँ
- विक्रमी सम्वत् कब शुरू हुआ– 58 ई. पूर्व
- शक् सम्वत् कब शुरू हुआ– 78 ई. पूर्व
- भारत को इण्डिया किस भाषा में कहते हैं– यूनानी
- भारत को हिन्द किस भाषा में कहते हैं– अरबी फारसी
- संस्कृत दिवस– श्रावण पूर्णिमा
- रक्षा बन्धन– श्रावण पूर्णिमा
- राम नवमी– चैत्र शुक्ल नवमी
- दशहरा– अश्विन शुक्ल दशवी
- दीपावली– कार्तिक अमावस्या

- होली– फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी
- मकर संक्रान्ति – 14 जनवरी
- वसन्त पंचमी– माघ शुक्ल पंचमी
- महाशिवरात्री– फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी– भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
- परशुराम जयन्ती– वैशाख शुक्ल तृतीया
- गीता जयन्ती– मार्ग शीर्ष शुक्ल एकादशी
- शिक्षक दिवस 5 सितम्बर
- शक्ति स्थल किस नेता की समाधि है– इन्दिरा गांधी
- राजघाट स्थल किस नेता की समाधि है– महात्मा गांधी
- कन्याकुमारी किस राज्य में है– तमिनाडु
- भारत रत्न प्रथम – 1954 डॉ0 राधाकृष्णन
- दादा साहब फालके– 1959 देविका रानी को
- ज्ञानपीठ – 1965 में शंकर कुरूप को
- कौन सा पुरस्कार वसीयतानुसार दिया जाता है– नोबेल
- वसीयत कर्त्ता– इंजि. एल्फ्रेड वर्नहार्ड नोबेल
- नोबेल पुरस्कार शरु– 1901 में
- वीरता का सर्वोच्च पुरस्कार– परमवीर चक्र
- भारत के प्रथम आम चुनाव– 1951 में
- प्रथम ओलम्पिक खेल– 1896 एथेन्स ग्रीस
- प्रथम एशियाई खेल– 1951 दिल्ली (भारत)
- नीली क्रान्ति से अभिप्राय– मत्स्य उत्पादन
- रक्त के कितने ग्रुप हैं– चार
- दक्षेस का मुख्यालय – काठमाण्डू (नेपाल)
- कम्प्रेहेसिव टैस्ट बैन ट्रिटी (सीटीबीटी)
- कः अभारतीय नागरिक भारत रत्नेन पुरस्कृत– डा. नेल्सन मण्डेला
- स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे कम उम्र का फांसी पर चढने वाला शहीद– खुदी राम बोस
- अशोक चक्र के नीचे का आदर्श वाक्य– सत्यमेव जयते

- अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस का मुख्यालय कहाँ है– पेरिस फ्रांस
- संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय– न्यूयार्क अमेरिका
- संविधान के आठवे अनुच्छेद में स्वीकृत भाषाएं – 18
- साहित्य अकादमी द्वारा कितनी आधुनिक भारतीय भाषाएं स्वीकार की गई है– 22 भाषाएं जिसमें संस्कृत भी शामिल
- लोक सभा में लिखा गया आदर्श वाक्य– धर्मचक्र प्रवर्तनाय
- भारताद् बहिः कश्चन् संस्कृत विश्वविधालय अस्ति– एक नेपाले आम
- हिन्दु शब्दस्य मूल शब्द किम् ? के प्रथम हिन्दु शब्दं प्रयुक्तवन्तः – सिन्धुः यूनान देशीयाः
- वियतनाम देशस्य प्राचीनाम् किम् –चम्पा
- बौद्धकाले भारते चार विश्वविद्यालय – नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशीला, पुष्पगिरिश्च
- भारत सर्वकारेण संस्कृत दिवस्य घोषणा कदा कृता– 1969 तमे वर्षे
- ग्रीक निवासी मेगस्थनीज का ग्रन्थ भारत के विषयमें– इण्डिका
- सूर्य की प्रमुख रूप से उपासना करने वाले सम्प्रदाय को प्राचीन काल में – सौर सम्प्रदाय कहते थे ।
- दक्षिण भारत में स्थित हैम्पी किस नगर की राजधानी थी– विजय
- सायण व माधव का निवास स्थान – विजय नगर
- फतेहपुर सीकरी किस प्रसिद्ध सुफी सन्त का मकबरा है– शेख सलीम चिश्ती
- बुद्ध ने अपना उपदेश कहां दिया था– सारनाथ में
- उज्जैन का शिव मन्दिर किस नाम से प्रसिद्ध है– महाकालेश्वर
- भारत में ब्रह्मा का एकमात्र मन्दिर– पुष्कर राजस्थान में
- सफेद घोड़े वाला रथ– श्रीकृष्ण
- जृम्भकास्त्र के जन्मदाता – कृशाश्व ऋषि
- जनक का सही नाम– सीर ध्वज
- जनक की पुत्री –सीता, उर्मिला
- जनक का भाई– कुशध्वज
- कुशध्वज की पुत्री – माण्डवी, श्रुतकीर्ति
- पंचवटी के पांच वृक्ष– अश्वत्थ, बिल्व, वट, आंवला, अशोक

- शबरी (भिलनी) का नाम श्रमणा
- सीरध्वज सीरः (सूर्यः) ध्वजे यस्य सः –जनक
- ईतियां अतिवृष्टि आदि 6 होती है।
- अथ शब्द मंगल, अनन्तर, आरम्भ, प्रश्न, कात्स्न्र्य 5 प्रकार का अर्थ बोधक है।
- नांदीपाठ कौन करें – सूत्र धार
- नांदी में स्वर – मध्यम
- नांदी प्रकार– 2 आठ पदी, 12 पदी
- कालप्रियानाथ – पार्वतीनाथ (शिव)
- रावण का गोत्र – पौलस्त्य
- नाटकों में भाव शब्द का अर्थ – माननीय
- प्लवङम् शब्द का अर्थ– वानर
- शान्ता पुत्री थी – दशरथ की पुत्री थी
- शान्ता का दत्तक गृहिता पिता– रोमपाद
- मारिष शब्द का अर्थ –पूज्य
- मैत्रावरुणि विशेषण है – वशिष्ठ का
- गोदान शब्द के अर्थ – पृथ्वी दान, क्षौरकर्म, गायदान
- रावण की बहन – कुम्भीनसी
- कुम्भीनसी का पुत्र– लवणासुर
- राम का अश्वमेध सम्पन्न करवाने वाला ऋषि– वामदेव

ओउम् इति आचार्य पण्डित डा. कृष्णचन्द्र शमर्णा सम्पादितं प्रतियोगिता चन्द्रिका ग्रन्थः सम्पन्नः।

लेखक के आगामी प्रकाशन

- फलित सूत्र
- सनातन भागीरथी
- वास्तु सिद्धान्त तत्व
- सप्ततन्त्रम्
- गूढ पद्यामृत
- अद्वितीयामृत पद्यसंग्रह
- कविकथामृतम्
- लोकशब्दनिरुक्तम्
- अर्थशक्तिविमर्शः
- परमात्मोपलब्धि

प्रतियोगिता चन्द्रिका

(संस्कृत की परीक्षाओं के लिए अति उपयोगी ग्रन्थ)

ग्रन्थकार एवं सम्पादक
ज्योतिषरत्न आचार्य पण्डित डॉ0 कृष्णचन्द भारद्वाज
प्रभाकर, शास्त्री, शिक्षा शास्त्री, शिक्षा विशारद,
एम0ए0 (संस्कृत एवं हिन्दी) ज्योतिषाचार्य
पीएच0डी0 (ज्योतिष) डी0एन0वाई0एस0
यूजीसी (नेट) स्टेट

संस्कृत के लगभग 5000 हजार प्रश्नों का संग्रह

प्रतियोगिता चन्द्रिका

(संस्कृत की परीक्षाओं के लिए अति उपयोगी ग्रन्थ)

ग्रन्थकार एवं सम्पादक
ज्योतिषरत्न आचार्य पण्डित डॉ0 कृष्णचन्द भारद्वाज
प्रभाकर, शास्त्री, शिक्षा शास्त्री, शिक्षा विशारद,
एम0ए0 (संस्कृत एवं हिन्दी) ज्योतिषाचार्य
पीएच0डी0 (ज्योतिष) डी0एन0वाई0एस0
यूजीसी (नेट) स्टेट

प्रकाशकः– श्री भृगु वेद वेदांग शोध शिक्षा समिति (पंजि0)
नगूराँ (जीन्द)

प्रथम संस्करण

मूल्य – 150

प्राप्ति स्थान :
ज्योतिषरत्न आचार्य पण्डित डॉ0 कृष्णचन्द भारद्वाज
गाँव व पोस्ट नगूराँ जिला जीन्द (हरि0)
पिन – 126125

मुद्रक
पण्डित रामअवतार अहिरका
नरवाना मार्ग जीन्द चलभाष 098133–22707

पूज्या माता जी
श्रीमती लीलावती देवी
एवं
तपोमूर्ति
पूज्य पिताजी
श्री जोगीराम शर्मा
के चरणारविन्द में
सादर समर्पित

ज्योतिषरत्न आचार्य पण्डित डॉ0 कृष्णचन्द भारद्वाज